

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24

रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका  
प्रकाशन तिथि, 1 जनवरी 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.  
CHHHIN/2017/72506

# HAPPY 2023 *New Year*

# किलोल

वर्ष 7 अंक 1, जनवरी 2023

<http://www.kilol.co.in>



म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,  
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर  
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य  
खुदरा 80/-  
वार्षिक 720/-  
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा,  
धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्रिय बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

आप सभी को नूतन वर्ष की शुभकामनाएं नया साल हमें कुछ नया करने नया सोचने व अपने संकल्प को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है. आप लोगों ने पिछले साल अच्छा करने पढ़ने, लिखने एवं सीखने के लिये संकल्प लिया था, उसमें से कुछ बच गए हैं. यह नया साल आपको अपने अधूरे संकल्प को पूरा करने का अवसर दे रहा है. अधिक मेहनत कर आप अपने कार्य को पहले से बेहतर कर सकते हैं. नई सोच के साथ नए संकल्प लेकर नए साल में कुछ नया कर या सीख सकते हैं.

इस माह हमारे अधिकार व कर्तव्य का बोध करने वाला महापर्व गणतंत्र दिवस है. हमारा संविधान हम सब को मिलजुलकर रहने एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान करने व सबको समान अवसर प्रदान करने की सीख देता है. हम भी संकल्प ले अपने मित्रों को साथ लेकर कुछ नया पढ़ें, गढ़ें और आगे बढ़ें.

और हाँ अपने प्रिय किलोल को प्यार करना न भूलें नियमित पढ़ें व किलोल के लिए लिखें. अपनी रचनाओं को अपने शिक्षकों व परिवार के सदस्यों से सहयोग लेकर जरूर भेजें.

आपकी अपनी

डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.

सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित  
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,  
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

## अनुक्रमणिका

फिर से बचपन में लौट जाऊँ .....	8
तुलसी .....	11
पंचतंत्र की कहानी.....	13
भेद सारे चूर कर दो.....	16
चिन्हारी बन.....	18
गिनती .....	20
अधूरी कहानी पूरी करो .....	22
बीमार मुर्गी और बिल्ली .....	22
मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी.....	22
श्रीमती लक्ष्मी तिवारी, कोरबा द्वारा पूरी की गई कहानी.....	23
श्रीमती रजनी शर्मा, रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी.....	24
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी .....	25
कु. सृष्टि मधुकर, नवमी, शा. उच्चतर मा. वि. पोड़ी (लाफा), कोरबा द्वारा पूरी की गई कहानी ..	26
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी.....	27
एक घमंडी हाथी और चींटी .....	27
"गुलाबी ठंड" (हाइकु) .....	29
सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता .....	31
सबके पास उजाले हो .....	35
उत्तर भारत में सर्दियों में बिगड़ती हवा .....	37
ठंड का मौसम .....	41
सहिष्णुता.....	46



भाषाई विविधता: हमारी शक्ति .....	49
बाल पहेलियाँ .....	52
ज़लनखोरी .....	54
मजबूत औद्योगिक नीति की जरूरत .....	58
कविता- पहला कदम .....	61
अपनों से बेईमानी, पतन की निशानी .....	63
उलटा पुलटा .....	66
गधा .....	67
पौधे से प्रेम .....	68
"हरा मटर" .....	70
अतीत की परछाई .....	71
संपादक की व्यस्तता को भी समझें .....	73
बच्चे मन के सच्चे .....	77
रसगुल्ले .....	78
फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) .....	80
माँ .....	84
हिम्मत-ए-मर्दा मदद-ए-खुदा .....	85
काबिलियत से पहचान बनाएँ .....	88
सीखें गणित .....	92
किताबी शिक्षा बनाम व्यवहारिक शिक्षा .....	94
मूलभूत साक्षरता में सामुदायिक जुड़ाव और माता-पिता की भागीदारी .....	97
बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें .....	100
सफलता की राह .....	103

गुणकारी गुड़ .....	105
"मै किसान हूँ" .....	107
सोना समझ गयी .....	110
माँ, मुझको पंख लगा दे .....	112
कुण्डलिया अमित के .....	113
बार्ते कुछ ज्ञान की .....	115
नव वर्ष की शुभकामनाएँ .....	117
आवव हमर गांव "भड़हा" .....	119
कंप्यूटर दादा .....	121
नया वर्ष दे .....	122
तिरंगा सबसे प्यारा .....	124
मेरी मम्मी .....	125
रजाई .....	126
नानक दुखिया सब संसार .....	127
शिक्षक दिवस .....	131
राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस ( 2 दिसम्बर ) .....	133
नन्हें-मुन्नो की जिंदगी और हमारा नजरिया (बाल अधिकार) .....	135
बालगीत - जाड़ जनावत हावय दाई .....	137
रेखागणित की बाल पहेलियाँ .....	139
"पोषण का पावरहाउस" बाजरा .....	142
माँ बाप के कहना मान लव .....	145
प्रेम की अलख जगाते है .....	147
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये .....	149

नया सवेरा आने को है .....	151
गुरुदक्षिणा.....	153
भूख लगे तो.....	156
मैं बालक नादान.....	157
स्कूल आ पढ़े बर जिनगी ला गढ़े बर .....	159
समर शंख फूंक दो.....	161
नूतन वर्ष का अभिनंदन.....	163
हष्ट-पुष्ट बन जाते हम.....	165
ये धरा जन्मत बनेगी.....	167
पंखा .....	169
एक शिकारी आता है .....	170
चिड़िया रानी आओ न .....	171
नव-वर्ष देखो आया है .....	172
देखो क्रिसमस आया है .....	173
नील गगन में चंदा तारें .....	174
बाल-पहेली .....	176
छुट्टी.....	178
जनऊला.....	179
भारत माँ की पीर .....	181
बिट्टू बंदर ने की मदद.....	184
जुगनू.....	187
हम बच्चे .....	189
चंदा मामा हमें बताओ.....	191



मैंने एक पुस्तक लिखी .....	192
सोनू की उदारता .....	194
मत करिये उपहास .....	195
यह जीवन .....	197
तोता .....	198
ठंड .....	200
शिक्षा की जोत .....	202
नववर्ष का स्वागत .....	204
स्नेहा की जीत .....	206
गणित की बाल पहेलियाँ .....	208
कदमों के निशान .....	210
मां .....	212
ठंड कड़ाके की अब आई .....	214
बाल-पहेली .....	216
नया साल आया .....	218
नभ के तारे .....	219
मेरा छाता .....	221
बन्दर मामा चले फिल्म में .....	222
सूरज दादा .....	224
अंतर्मन को संवारते जा .....	225
मेरा सबसे प्यारा स्कूल .....	227
दुनिया की रीत .....	229
अधूरी इच्छा .....	230

अम्मा की पेटी .....	234
मां की ममता.....	237
नव वर्ष .....	239
नीलू परी और कबूतर .....	241
नन्हें बच्चे .....	244
सरसो के पियर फूल .....	246
मेरी शाला .....	247
मोर गाँव के निच्चट सुघराई हे .....	250
बढ़ती ठंड .....	252
धरती की पुकार.....	254
आओ मिलकर उन्हें करें नमन .....	256
गाँधी जी.....	258
गीताली और गिल्लू .....	260
चित्र देख कर कहानी लिखो .....	262
कु. अंजली साहू, पांचवी, शा. प्रा.शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी.....	262
कु. पूनम यादव, पांचवी, शा. प्रा.शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी .....	263
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी .....	263
दुर्घटना से बचाव .....	263
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र .....	266



## फिर से बचपन में लौट जाऊँ

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न, सारंगढ़- बिलाईगढ़



जी करता है फिर से बचपन में लौट जाऊँ  
समेटने अनगिनत खुशियों को, पुनः बच्चा बन जाऊँ.

तितलियों के पीछे भागूँ, परिंदों के संग उड़ जाऊँ,  
खुलके हंसूँ, जी भर रोऊँ, रूठूँ, मगर जल्दी, मान भी जाऊँ.

गलियों में अल्हड़ घूमूँ, पेड़ों पर झटपट चढ़ जाऊँ,  
जी में आए वो करूँ, फिर वही शरारती बच्चा बन जाऊँ.

नहीं डरूँ किसी से और न मुसीबतों से घबराऊँ,  
कच्चे आम, कसैले जाम, खट्टी बेरीयां चुन-चुनकर खाऊँ.

तालाब के उछली घाटों पर, छप- छप नाव चलाऊँ,  
बालू में छुपे जवाहरातों को, नन्हें हाथों से बटोर लाऊँ.

माचिस खोखे,डिब्बे,ढक्कन,चूडियों के टुकड़े बटोरूं  
कपड़ों के कतरन मेरे ही हैं ,कोई छू दे,तब डांट खिलाऊं.

पगडंडियों पर चलकर चार कोस, पढ़ने चली जाऊँ,  
लौटकर जब आऊं तो,दुबककर माँ के आंचल में सो जाऊँ.

जी करता है फिर से,बचपन में लौट जाऊँ,  
समेटने अनगिनत खुशियों को, पुनः बच्चा बन जाऊँ.

\*\*\*\*\*



## मेरे शिक्षक

रचनाकार- कु. इच्छा मानिकपुरी, मुंगेली, छत्तीसगढ़



मेरे शिक्षक बहुत अच्छे हैं,  
ईमानदार और सीधे सच्चे हैं.

अच्छे बुरे का ज्ञान बताते हैं,  
पर हम हँसी मजाक उड़ाते हैं.

मेरे शिक्षक चाहते कोई कवि लेखक बन जाए,  
कोई डॉक्टर इंजीनियर देश सेवक बन जाए.

शिक्षक फर्ज निभाता है जब हम स्कूल जाते,  
पढ़ाते लिखाते हैं और नए खेल खिलाते.

उन्हें डांट-डपट करने का हक है ताकि हम पढ़ सकें,  
बढ़ें पढ़ लिख कर आगे नया जीवन गढ़ सकें.

\*\*\*\*\*



## तुलसी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



तुलसी पौधा आरोपण से  
घर - घर हो हरीतिमा संवर्द्धन  
वातावरण आरोग्यवर्द्धक है  
वायु प्रदूषण का परिशोधन.

तुलसी का पौधा होता है  
औषधीय गुण से भरपूर  
मक्खी, मच्छर, खटमल, पिस्सू  
साँप - बिच्छू भी रहते दूर.

प्राणवायु सुगंधित सुरभित  
जीवनी शक्ति का है उपहार  
छोटा हो या भले बड़ा हो  
रोगों का होता उपचार.

चाहे मिट्टी का बर्तन हो  
गमला अथवा टूटा घड़ा हो  
टूटी बाल्टी, टीन के पीपे  
प्लास्टिक डिब्बा रिक्त पड़ा हो.

इनमें तुलसी पौधे रोपें  
कम से कम पौधे हों पाँच  
करना है श्रमदान स्वयं ही  
किसी रोग की लगे न आँच.

करें प्रचार, लगाएँ घर - घर  
तुलसी पौधों का उद्यान  
वायुमंडल के संशोधन से  
विपुल लाभ का लें संज्ञान.

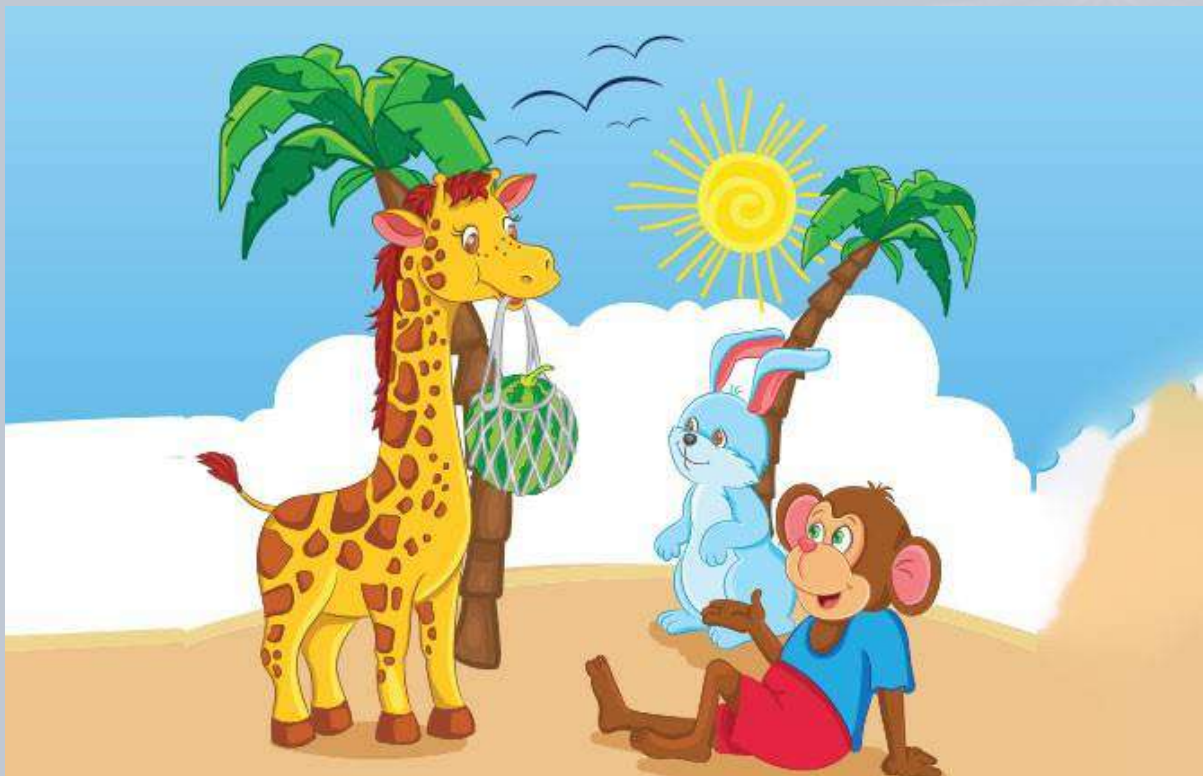
सस्ती सुलभ जड़ी - बूटी है  
बहु रोगों का करे निदान  
डालें कुछ पत्तियाँ चाय में  
नियमित करें सुऔषधि पान.

खासी, सर्दी या जुकाम में  
तुलसी का सेवन वरदान  
घर में सभी नीरोग रहेंगे  
दें तुलसी को समुचित मान.

\*\*\*\*\*

## पंचतंत्र की कहानी

### बंदर और खरगोश



एक बड़े-से जंगल में एक बंदर और एक खरगोश बड़े प्यार से रहते थे. दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती थी कि हमेशा एक साथ खेलते और अपना सुख-दुख बांटते थे.

एक दिन खेलते-खेलते बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, आज कोई नया खेल खेलते हैं.” खरगोश ने पूछा, “बताओ कौन-सा खेल खेलने का मन है तुम्हारा?”

बंदर बोला, “आज हम दोनों को आँख-मिचोली खेलनी चाहिए.” खरगोश हंसते हुए कहने लगा, “ठीक है, खेल लेते हैं. बड़ा मज़ा आएगा.” दोनों यह खेल शुरू करने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि जंगल के सारे पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं.

बंदर ने फुर्ती दिखाते हुए पास से भाग रही लोमड़ी से पूछा, “अरे, ऐसा क्या हो गया है? क्यों सब भाग रहे हैं?” लोमड़ी ने जवाब दिया, “एक शिकारी जंगल में आया है,



इसलिए हम सब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं. तुम भी जल्दी भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा.” इतना बोलकर लोमड़ी तेज़ी से वहाँ से भाग गई.

शिकारी की बात सुनते ही बंदर और खरगोश भी डर कर भागने लगे. भागते-भागते दोनों उस जंगल से काफ़ी दूर निकल आए. तभी बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, सुबह से हम भाग रहे हैं. अब शाम हो चुकी है. चलो, थोड़ा आराम कर लेते हैं. मैं थक गया हूँ.”

खरगोश बोला, “हाँ, थकान ही नहीं, प्यास भी बहुत लगी है. थोड़ा पानी पी लेते हैं. फिर आराम करेंगे.”

बंदर ने कहा, “प्यास तो मुझे भी लगी है. चलो, पानी ढूँढते हैं.”

दोनों साथ में पानी ढूँढने के लिए निकले. कुछ ही देर में उन्हें पानी का एक मटका मिला. उसमें बहुत कम पानी था. अब खरगोश और बंदर दोनों के मन में हुआ कि अगर इस पानी को मैं पी लूंगा, तो मेरा दोस्त प्यासा ही रह जाएगा.

अब खरगोश कहने लगा, तुम पानी पी लो. मुझे ज़्यादा प्यास नहीं लगी है. तुमने उछल-कूद बहुत की है, इसलिए तुम्हें ज़्यादा प्यास लगी होगी.

फिर बंदर बोला, “मित्र, मुझे प्यास नहीं लगी है. तुम पानी पी लो. मुझे पता है, तुमको बहुत प्यास लगी है.”

दोनों इसी तरह बार-बार एक दूसरे को पानी पीने के लिए कह रहे थे. पास से ही गुज़र रहा हाथी थोड़ी देर के लिए रुका और उनकी बातें सुनने लगा.

कुछ देर बाद हंसते हुए हाथी ने पूछा, “तुम दोनों पानी क्यों नहीं पी रहे हो?”

खरगोश ने कहा, “देखो न हाथी भाई, मेरे दोस्त को प्यास लगी है, लेकिन वो पानी नहीं पी रहा है.”

बंदर बोला, “नहीं-नहीं भाई, खरगोश झूठ बोल रहा है. मुझे प्यास नहीं लगी है. इसको प्यास लगी है, लेकिन यह मुझे पानी पिलाने की ज़िद कर रहा है.”

हाथी यह दृश्य देखकर बोलने लगा, “तुम दोनों की दोस्ती बहुत गहरी है. हर किसी के लिए यह एक मिसाल है. तुम दोनों ही इस पानी को क्यों नहीं पी लेते हो. इस पानी को आधा-आधा करके तुम दोनों पी सकते हो.”

खरगोश और बंदर दोनों को हाथी का सुझाव अच्छा लगा. उन्होंने आधा-आधा करके पानी पी लिया और फिर थकान मिटाने के लिए आराम करने लगे.

कहानी से सीख- सच्चे दोस्त हमेशा एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं. सच्ची दोस्ती में स्वार्थ की कोई जगह नहीं होती.

\*\*\*\*\*

## भेद सारे चूर कर दो

रचनाकार- प्रियंका सौरभ



माँ वीणा वादिनी मधुर स्वर दो,  
हर जिह्वा वैभवयुक्त कर दो.  
मन सारे स्नेहमय हो जाए,  
ऐसे गुणों का अमृत भर दो.

माँ वीणा की झंकार भर दो,  
जीवन में नवल संचार कर दो.  
हर डाली खुशबुमय हो जाए,  
ऐसे सब गुलजार कर दो.

अंतस तम को दूर कर दो,  
अंधकार को नूर कर दो.



मन से मन का हो मिलन,  
भेद सारे चूर कर दो.

गान कर माँ रागिनी का,  
भान कर माँ वादिनी का.  
पूरी हो सब कामनाएं,  
दो सुर माँ रागिनी का.

\*\*\*\*\*

## चिन्हारी बन

रचनाकार- चन्द्रहास सिन्हा, धमतरी



सुनता के तय सँगवारी बन  
दया-धरम के चिन्हारी बन.

दूसर के जिनिस् नीयत झनकर  
अपन करम के अधिकारी बन.

नइये जेकर जग मा कउनो  
ओकर बाप अउ महतारी बन.

मुड़ मा जेकर नइये छँइहा  
घर के ओकर मियारी बन.

कुहुके कोयली पहट मुंथरहा  
अइसे सुग्घर फुलवारी बन.

लाभ लेवय आखरी मनखे  
योजना अइसन सरकारी बन.

इरखा दोष छोड़ के सँगी  
तिहार होरी - देवारी बन.

\*\*\*\*\*



## गिनती

रचनाकार- चन्द्रहास सिन्हा, धमतरी



आओ गिनती गिने एक  
आसमान में तारे अनेक.  
एक और एक दो होते हैं  
बच्चे माँ बिन रोते हैं.  
दो और एक होते तीन  
साँप के आगे बजाते बीन.  
तीन और एक होते चार  
आम नीबू का बनाओ आचार.  
चार और एक होते पाँच  
मुनिया करती सुन्दर नाच.  
पाँच और एक होते छः  
बोलो ओम शिवाय नमः.  
छः और एक होते सात  
करो नमस्ते मिलाओ हाथ.  
सात और एक होते आठ  
कविता सुनाओ पढ़ो पाठ.  
आठ और एक होते नौ

उजाला करते दीये की लौ.  
नौ और एक होते दस  
यहीं तक पढ़ते गिनती बस.

\*\*\*\*\*



## अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

### बीमार मुर्गी और बिल्ली



एक दिन जब मुर्गी सोकर उठी तो उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं थी. वह बोली, “आज मैं स्वस्थ नहीं हूँ. इसलिए पूरे दिन आराम करेंगे.” मुर्गी की बात पास से गुजर रही बिल्ली ने सुन ली.

हमेशा शिकार की खोज में रहने वाली बिल्ली ने मन ही मन कहा, यह बड़ा अच्छा मौका है. मैं हाल-चाल पूछने के बहाने मुर्गी से दोस्ती कर लेती हूँ. फिर उसे एक दिन विश्वास में लेकर मौका मिलते ही चट कर जाऊंगी.’

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

### मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

यह सोचते हुए बिल्ली तुरंत मुर्गी के पास गई और बड़े ही मधुर स्वर में बातें बनाते हुए बोली, “बहन ! मैंने सुना है कि तुम्हारी तबियत खराब है. इसीलिए मन बहलाने



के लिए तुम्हारे पास आयी हूँ जब भी तबीयत खराब होती है मुझे बुला लिया करो मैं आपको मजेदार कहानियां एवं चुटकुले सुना दूंगी .

चलो आज मैं तुम्हें मजेदार चुटकुले सुनाती हूँ जिससे तुम खुश हो जाओगी. इससे तुम्हारी तबियत ठीक हो जाएगी.” और तुम फिर से स्वस्थ हो जाओगी.मुर्गी को बिल्ली की चिकनी चुपड़ी बातें समझते देर न लगी उनकी चालाकी भाँप ली .

वह बोली, “तुम्हारी हमदर्दी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ! तुम बस मुझे अकेला छोड़ दो, मुझे लगेगा कि मैं ठीक हो गई हूँ.”

शिक्षा: हमें दूसरों की चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आना चाहिए.

### श्रीमती लक्ष्मी तिवारी, कोरबा द्वारा पूरी की गई कहानी

तो बिल्ली ने सोचा चलो हमदर्दी दिखाते हैं.

वह मुर्गी के पास गई और बोली- अरे बहन! सुनो तुम बहुत ज्यादा बीमार हो कहो तो मैं तुम्हारी कुछ मदद कर दूँ.

मुर्गी ने कहा- तुम मेरी क्या मदद कर सकती हो?

बिल्ली ने कहा- मैं तुम्हारे परिवार की देखभाल कर सकती हूँ ! तुम्हारे बच्चों को खाना खिला सकती हूँ.

यह सुनकर मुर्गी ने बिल्ली से कहा- “अगर तुम्हें हमारी मदद ही करनी है! तो हमारे परिवार और हमसे दूर ही रहा करो! क्युकी तुम्हारे कारनामों से मैं भी अच्छी तरह वाकिफ हूँ. इसलिए यहां से चली जाओ.

यह सुनकर बिल्ली अपना झुका हुआ सिर लेकर वापस चली गई.

शिक्षा- इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि अपने दुश्मन की शुभकामनाओं और सहानुभूति पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए. क्योंकि वह हमारा भला

सोच कर हमारे पास नहीं आते बल्कि हमारी मजबूरी का फायदा लेने हमारे पास आते हैं.

### श्रीमती रजनी शर्मा, रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

मुर्गी सुबह सो कर उठी तो उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी. वह बोली आज मैं स्वस्थ नहीं हूं. इसलिए पूरे दिन आराम करूंगी. मुर्गी के पास से गुजर रही बिल्ली ने यह बात सुन ली. हमेशा शिकार की खोज में रहने वाली बिल्ली ने मन ही मन कहा. बड़ा अच्छा मौका है मैं हालचाल पूछने जाऊंगी और इसी बहाने मुर्गी से दोस्ती कर लेती हूं. फिर एक दिन विश्वास को लेकर मैं मौका मिलते ही उसे चट कर जाऊंगी.

बिल्ली ने अपनी खिलखिलाती आवाज में म्याऊं म्याऊं. मुर्गी ने पलटकर देखा. बिल्ली बोली क्या बात है मुर्गी मौसी? मुर्गी मौसी आप जरा सुस्त सी लग रही हो. मेरी तबीयत ठीक नहीं है. मुर्गी ने बिल्ली को जवाब दिया. बिल्ली ने कहा तुम कहो तो मैं तुम्हारी चंपी कर दूं. नेकी और पूछ-पूछ.. बिल्ली ने अपने फरदार पूंछ को हिलाते हुए मुर्गी के पूरे शरीर में चंपिंग की. उसके सिर को अपने पंजों से हल्के से दबाया. मिलते ही मुर्गी ने बिल्ली से कहा. धन्यवाद बुआ. अरे यह तो मेरा फर्ज था. बिल्ली खुशी-खुशी अपने घर वापस गई. ऐसे ही दो चार दिन और दोनों के बीच यह बातें होती रही.

एक दिन दोनों धूप में बैठे बातें कर रहे थे. अचानक ना जाने कहां से एक झबरीला कुत्ता झपटा. बिल्ली जान बचाकर भागने लगी. पर यह क्या ? मुर्गी मौसी पंख फैलाकर कुत्ते के सिर पर चढ़कर बैठ गई. और अपनी चोंच से कुत्ते के सिर को ठुनकने लगी. घबराई बिल्ली उसे अ बड़ी दूर से देख रही थी. उसने सोचा चलो मेरी जान तो बची.

पर बीमार मुर्गी के साहस को देखकर उसे बड़ी शर्म आई. उसने सोचा मुर्गी मुझे बचाने के लिए अकेली लड़ रही है. अब तो मुझे उसे बचाना ही चाहिए. फिर क्या था कुत्ते का ध्यान हटाने के लिए बिल्ली उसके आगे सामने म्याऊं म्याऊं करके मंडराने



लगी.जैसे ही कुत्ते का ध्यान भटका उसने चिल्लाकर कर कहा मौसी भागो.मुर्गी मौसी बिल्ली बुआ के पीठ परझट से बैठी.दोनों नौ दो ग्यारह हो गये. दोनों की जान बची. मुसीबत के समय में एक दूसरे का साथ देने के कारण ही दोनों की दोस्ती भी पक्की हो गई. अब जहां भी जाते साथ ही साथ ही जाते. बिल्ली बुआ और मुर्गी मौसी दोनो की अब गहरी दोस्ती है.

### संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

बिल्ली अपनी योजना अनुसार मुर्गी के घर पहुँच कर हमदर्दी दिखाते हुए बोली-"अरी बहन! सुनो तुम बहुत ज्यादा बीमार हो, कहो तो मैं तुम्हारी कुछ मदद कर देती हूँ". तभी मुर्गी ने कहा-तुम मेरी क्या मदद कर सकती हो? बिल्ली ने कहा-"तुम्हारे लिए मैं खाने-पीने की व्यवस्था कर सकती हूँ,तुम्हारे घर की साफ- सफाई एवं बच्चों का देखभाल भी कर सकती हूँ".

यह सुनकर मुर्गी ने बिल्ली से कहा-अगर तुम्हें हमारी मदद ही करनी है तो हमारे परिवार और हमसे दूर ही रहा करो.क्योंकि तुम्हारे आदत से मैं भी अच्छी तरह वाकिफ हूँ.तुम कुछ ही दिन पहले मेरी पड़ोसी काली मुर्गी के घर गई थी.सेवा करने के बहाने,उसके दोनों बच्चे एवं काली मुर्गी को चट कर गई.अब तुम मुझे एवं मेरे परिवार के लोगों को शिकार करने आई हो.यहाँ से तुम फौरन चली जाओ,वरना मैं अपने सभी साथी को बुलाती हूँ. वे सब मिलकर तुम्हें मार डालेंगे.

मुर्गी की बात को सुनकर, बिल्ली अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गई.उसके सोचे हुए कार्य पूरा नहीं हुआ.उस बिल्ली के इस करतूत को देखकर सारी मुर्गियाँ उससे सतर्क हो गई.

बच्चों इस कहानी से हमने सीखा की मुर्गी की तरह अपने दुश्मन की शुभकामनाओं और सहानुभूति पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए.क्योंकि वह हमारा भला सोचकर हमारे पास नहीं आते बल्कि हमारे मजबूरी का फायदा लेने हमारे पास आते हैं.

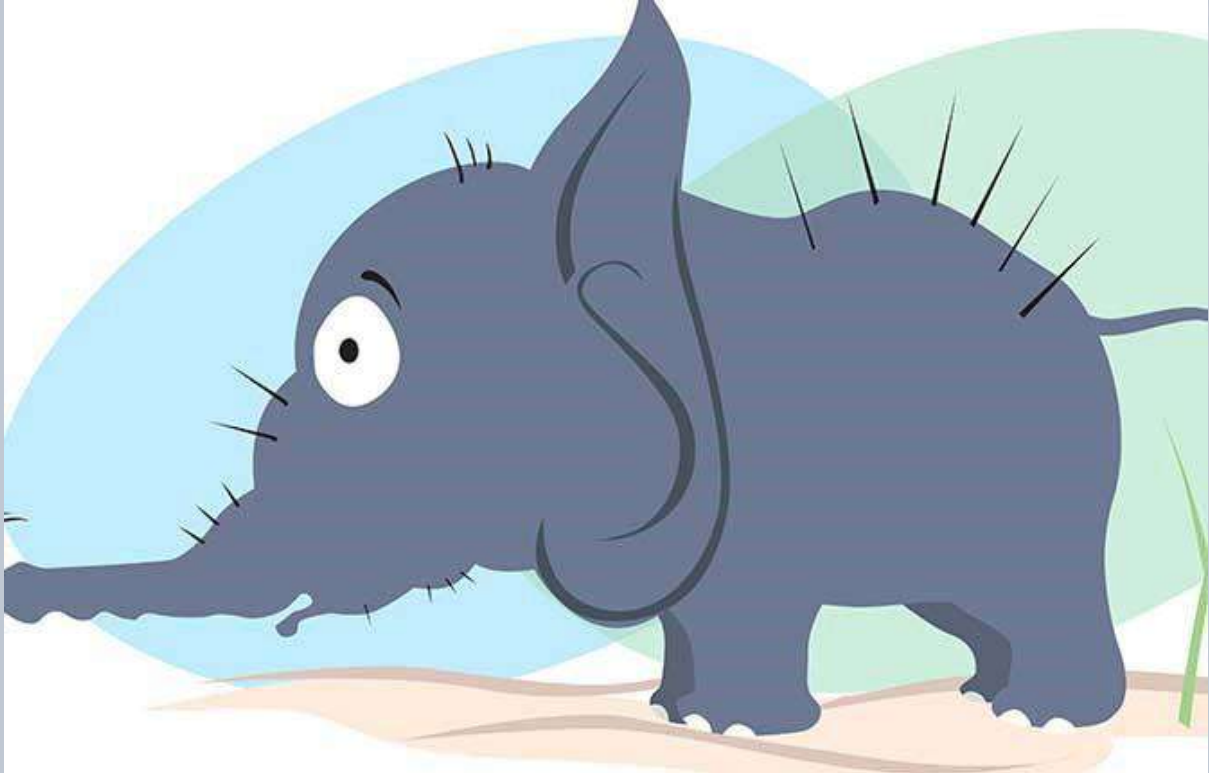


कु. सृष्टि मधुकर, नवमी, शा. उच्चतर मा. वि. पोड़ी (लाफा), कोरबा द्वारा  
पूरी की गई कहानी

एक दिन जब मुर्गी सो कर उठी तो उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी. वह बोली, "आज मैं स्वस्थ नहीं हूं. इसलिए पूरे दिन आराम करेंगे." मुर्गी की बात पास से गुजर रही बिल्ली ने सुन ली. हमेशा शिकार की खोज में रहने वाली बिल्ली ने मन ही मन कहा, यह बड़ा अच्छा मौका है. मैं हाल-चाल पूछने के बहाने मुर्गी से दोस्ती कर लेती हूं. फिर उसे एक दिन विश्वास में लेकर मौका मिलते ही चैट कर जाऊंगी. उसके बाद वह मुर्गी के पास जाती है, तो मुर्गी उसे देखकर डर जाती है और कहती है कि, "तुम यहां क्यों आई हो, तुम यहां से चली जाओ." तब बिल्ली कहती है, "डरो नहीं बहन मैं तुम्हारा हालचाल पूछने आई हूं." तब मुर्गी बताती है कि मेरी तबीयत आज खराब है, उसके बाद फिर बिल्ली कहती है, "अच्छा देखो मैंने तुम्हारे लिए खिचड़ी बनाई है तुम इसे खा लो तो तुम्हें अच्छा लगेगा." मुर्गी ने उसकी बात मान ली और उसने वह खिचड़ी खा ली. खिचड़ी खाने के बाद उसे अच्छा लगने लगा तब वह बिल्ली से कहती है कि, "खिचड़ी तो बहुत अच्छी बनी है मुझे अच्छा लग रहा है क्या तुम ऐसे ही मुझे रोज खिचड़ी दे सकती हो?" बिल्ली बोलती है "हां, जरूर लेकिन उसके लिए तुम्हें मेरा दोस्त बनना पड़ेगा." तब मुर्गी हंसते हुए उससे दोस्ती कर लेती है. दोस्ती करने के बाद ऐसे ही कुछ दिन बीत जाते हैं और बिल्ली और मुर्गी अच्छे दोस्त बन जाते हैं. एक दिन जब मुर्गी आराम कर रही थी, तब बिल्ली उसके पास जाती है और अपने आप से कहती है, "अब यह मेरी दोस्त बन गई है आज रात को मैं इसे चट कर जाऊंगी". मुर्गी यह सुन लेती है और बिल्ली के जाते ही वह योजना बनाती है कि वह अपनी जगह पर ढेर सारी मिर्ची पत्तों में छुपा कर रख देगी. रात हो जाती है फिर बिल्ली जब मुर्गी के कमरे में जाती है और देखती है कि, मुर्गी अपने बिस्तर पर सो रही है फिर वह मौका देखते ही, पत्तों में छुपी मिर्ची को मुर्गी समझ कर खा जाती है. उसी वक्त वहां मुर्गी आ जाती है और बोलती है जैसे को तैसा." फिर बिल्ली जलन के मारे इधर उधर कुदती है और कहती है, "मुझे माफ कर दो अब मैं वापस कभी लौट के नहीं आऊंगी" और दूम दबाकर भाग जाती है.

## अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

### एक घमंडी हाथी और चींटी



एक बार की बात है. किसी जंगल में एक हाथी रहता था. उसे अपने शरीर और अपनी ताकत का बहुत घमंड था. उसे रास्ते में जो भी जानवर मिलता, वो उसे परेशान करता और डरा कर भगा देता.

एक दिन वह कहीं जा रहा था. रास्ते में उसने एक पेड़ पर एक तोते को बैठा देखा और उससे अपने सामने झुकने के लिए बोला.

तोते ने झुकने से मना कर दिया, तो गुस्से में आकर हाथी ने वो पेड़ ही उखाड़ दिया, जिस पर तोता बैठा था. तोता उड़ गया और हाथी उसे देख कर हंसने लगा.

फिर एक दिन हाथी नदी के किनारे पानी पीने के लिए गया. वहीं पर चींटियों का छोटा-सा घर था.

एक चींटी बड़ी मेहनत से अपने लिए खाना इकट्ठा कर रही थी. यह देख हाथी ने पूछा कि तुम क्या कर रही हो, तो चींटी ने कहा कि बरसात का मौसम आने से पहले अपने लिए भोजन जमा कर रही हूं, ताकि बारिश का मौसम बिना किसी परेशानी से निकल जाए. यह सुन कर हाथी के मन में शरारत सूझी और उसने अपनी सूंड में पानी भर कर चींटी के ऊपर डाल दिया.

पानी से चींटी का भोजन खराब हो गया और वो पूरी भीग गई.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.



## "गुलाबी ठंड" (हाइकु)

रचनाकार- प्रिया देवांगन गरियाबंद



गुलाबी ठंड  
चलती पुरवाई  
गुदगुदाती.

ओस की बूंदें  
धरती पर आती  
मन लुभाती.

वातावरण  
दिखते उपवन  
आनंद आये.

कोहरा छाये  
धुँधला चहुँओर  
धुआँ ही धुआँ.

सूर्य निकला  
पंछी चहचहाये  
उड़े गगन.

\*\*\*\*\*

## सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



भारत के पास रक्षा उपकरणों के विनिर्माण के लिये एक उचित औद्योगिक आधार का अभाव है. हालाँकि तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में दो रक्षा क्षेत्र स्थापित किये गए हैं जो निजी क्षेत्र को परिचालन के लिये आधार प्रदान करेंगे. इन क्षेत्रों की स्थापना और विनिर्माण कार्य शुरू किये जाने के बाद पूरी रक्षा अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी. रक्षा उद्योग में अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता के साथ सामरिक स्वायत्तता सुनिश्चित करना जरूरी हो गया है, भू-राजनीति के बढ़ते चरण और वैश्वीकरण के साथ, अनुसंधान एवं विकास में सुधार के माध्यम से रक्षा निर्माण में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है. उभरते सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, सीमा पार साइबर हमले, ड्रोन हमले, महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे को नुकसान पहुँचाने के लिए कृत्रिम तकनीक का उपयोग जैसे नए खतरे उभर रहे हैं जिन्हें अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है.



किसी क्षेत्र में उपयोगी व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए शांति महत्वपूर्ण है। हालांकि, यह शांति तभी हासिल हो सकती है जब सैन्य खर्च किया जाए। सैन्य खर्च, सैन्य ताकत बनाता है। यह शक्ति आक्रमणकारियों के लिए एक निवारक के रूप में कार्य करती है। भारत धीरे-धीरे रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण की ओर बढ़ रहा है, जैसे, भारत ने अपना स्वदेशी विमान तेजस तैयार किया है।

भारत अपने स्वयं के इंजन, एवियोनिक्स और आत्मनिर्भर रडार के निर्माण में अभी भी पिछड़ा है।

विमान के विभिन्न हिस्सों के डिज़ाइन और विकास में काफी प्रगति हुई है, लेकिन जब एक कॉम्पैक्ट विमान प्रणाली या एक हथियार प्रणाली की बात आती है, तो भारत एक अन्वेषक है, निर्माता नहीं।

भारत में रक्षा क्षेत्र की पहचान, आत्मनिर्भरता के अवसरों के महासागर के साथ एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में की जाती है। भारतीय सशस्त्र बलों के बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण की आवश्यकताओं के साथ, आत्म निर्भर भारत के लिए भारत के दृष्टिकोण ने रक्षा क्षेत्र के स्वदेशीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और गति प्रदान की है। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा जारी एक अध्ययन के अनुसार, भारत 12 इंडो-पैसिफिक देशों में से चौथे स्थान पर है। लेकिन चिंता की बात यह है कि भारत को 2016-20 में अपने सशस्त्र बलों के लिए हथियारों के दूसरे सबसे बड़े आयातक के रूप में भी स्थान दिया गया है। यह रक्षा अनुसंधान और विकास के बहुत कम आवंटन के कारण हो सकता है जो 2022-23 में कुल रक्षा बजट परिव्यय का केवल 1.7% है जो दुनिया की प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं से परे है।

भारत की संपूर्ण अधिग्रहण प्रक्रिया काफी सुस्त है और रक्षा उपकरण प्राप्त करने की योजना बनाने से लेकर उसे क्रियान्वित करने के लिये काफी लंबी प्रक्रिया है। इस अवधि को कम कर प्रक्रिया को अधिकतम 1-2 वर्ष तक करना एक बड़ी चुनौती है। सार्वजनिक रक्षा विनिर्माण क्षेत्र वास्तव में जिस तरह से इसे अनिवार्य

किया गया है उसे पूरा करने में सक्षम नहीं है. यह क्षेत्र अपने आप में रक्षा क्षेत्र की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं है, इसलिये निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये. भारत के पास रक्षा उपकरणों के विनिर्माण के लिये एक उचित औद्योगिक आधार का अभाव है. हालाँकि तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में दो रक्षा क्षेत्र स्थापित किये गए हैं जो निजी क्षेत्र को परिचालन के लिये आधार प्रदान करेंगे. इन क्षेत्रों की स्थापना और विनिर्माण कार्य शुरू किये जाने के बाद पूरी रक्षा अर्थव्यवस्था को मज़बूती मिलेगी.

रक्षा उद्योग में अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता के साथ सामरिक स्वायत्तता सुनिश्चित करना जरूरी हो गया है, भू-राजनीति के बढ़ते चरण और विवैश्वीकरण के साथ, अनुसंधान एवं विकास में सुधार के माध्यम से रक्षा निर्माण में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है. उभरते सुरक्षा खतरों से निपटने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, सीमा पार साइबर हमले, ड्रोन हमले, महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे को नुकसान पहुँचाने के लिए कृत्रिम तकनीक का उपयोग जैसे नए खतरे उभर रहे हैं जिन्हें अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है. भारत हथियारों का सबसे बड़ा आयातक है जो 2017- 2021 के बीच की अवधि के दौरान वैश्विक हथियारों के आयात का लगभग 11% है. घरेलू उत्पादन में वृद्धि हो तो आयात पर निर्भरता को कम कर सकते हैं और चालू खाता शेष को सुधारने में भी मदद कर सकते हैं.

रक्षा बाजार में बढ़ती वैश्विक हिस्सेदारी के बावजूद भारत दुनिया में सेना पर तीसरा सबसे बड़ा खर्च करने वाला देश है, यह रक्षा उपकरणों के निर्माण में पीछे है. अनुसंधान एवं विकास पर बढ़ते व्यय से भारत आधुनिक रक्षा उपकरणों का निर्माण करने में सक्षम हो सकता है जिनकी विश्व स्तर पर मांग है. हिंद महासागर को कवर करने वाले पड़ोसियों और क्षेत्र का शुद्ध सुरक्षा प्रदाता बनने के लिए, भारत को बेहतर हथियार उपकरणों के निर्माण के साथ-साथ अपनी सैन्य ताकत में सुधार के लिए अनुसंधान एवं विकास में अपनी हिस्सेदारी बढ़ानी चाहिए. आईएनएस विक्रान्त का हाल ही में उद्घाटन, एक स्वदेशी रूप से विकसित विमानवाहक पोत, आत्मनिर्भरता



(आत्मनिर्भर) की दिशा में एक बड़ी छलाँग है, जिसे अनुसंधान एवं विकास में व्यय में वृद्धि और कार्यबल को कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से और बढ़ाया जा सकता है।

इससे भारत रक्षा क्षेत्र में शीर्ष वैश्विक स्थान पर पहुँच सकेगा। सरकार आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सही कदम उठा रही है, लेकिन रक्षा क्षेत्र की उम्मीद को पूरा करने के लिये सार्वजनिक उपक्रमों को बढ़ावा देने और उन्हें विशिष्ट कार्य सौंपने आवश्यकता है। निजी क्षेत्र को शामिल करने के लिये एक नई नीति लाने पर लगातार प्रयास किया जा रहा है। हालाँकि इस क्षेत्र के समर्थन और उत्थान के लिये अभी काफी कार्य किया जाना है ताकि उनके प्रयास व्यर्थ न हों। भारत की समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये नौसेना पर ध्यान केंद्रित किये जाने की तत्काल आवश्यकता है। बंदरगाहों का पुनरुद्धार और आधुनिकीकरण, एक अन्वेषक से निर्माता के लिये स्थानांतरण, साथ ही तकनीकी बढ़त पर पकड़ बनाए रखना भारत को एक अलग पहचान प्रदान करता है।

\*\*\*\*\*



## सबके पास उजाले हो

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



मानवता का संदेश फैलाते,  
मस्जिद और शिवाले हो.  
नीर प्रेम का भरा हो सब में,  
ऐसे सब के प्याले हो.

होली जैसे रंग हो बिखरे,  
दीपों की बारात सजी हो.  
अंधियारे का नाम ना हो,  
सबके पास उजाले हो.

हो श्रद्धा और विश्वास सभी में,  
नैतिक मूल्य पाले हो.  
संस्कृति का करे सब पूजन,  
संस्कारों के रखवाले हो.

चौराहें न लुटे अस्मत,  
दुःशासन न फिर बढ़ पाए,  
भूख, गरीबी, आतंक मिटे,  
न देश में धंधे काले हो.

सच्चाई को मिले आजादी,  
लगे झूठ पर ताले हो.  
तन को कपड़ा, सिर को साया,  
सबके पास निवाले हो.

दर्द किसी को छू न पाए,  
न किसी आंख से आंसू आए,  
झोंपड़ियों के आंगन में भी,  
खुशियों की फैली डाले हो.

‘जिए और जीने दे’ सब  
न चलते बरछी भाले हो.  
हर दिल में हो भाईचारा  
नाग न पलते काले हो.

नगमों-सा हो जाए जीवन,  
फूलों से भर जाए आंगन,  
सुख ही सुख मिले सभी को,  
एक दूजे को संभाले हो.

\*\*\*\*\*

## उत्तर भारत में सर्दियों में बिगड़ती हवा

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, हरियाणा



वायु प्रदूषण वातावरण में ऐसे पदार्थों की उपस्थिति है जो मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, या जलवायु को नुकसान पहुँचाते हैं। उत्तर भारत में सर्दियों की हवा की गुणवत्ता में गिरावट ने एक बार फिर विशेष रूप से समाज में सबसे कमजोर लोगों के बीच स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के नकारात्मक प्रभावों को उजागर किया है। पिछले कुछ सालों में ये एक सालाना रिवाज सा बन गया है कि दिल्ली-एनसीआर में सर्दियों के दौरान प्रदूषण सुर्खियों में रहता है, जो आमतौर पर दो-तीन महीने चलता है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में, साल में कम से कम आधे समय हवा खराब रहती है।

विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट, 2020 के अनुसार दुनिया के 30 सबसे प्रदूषित शहरों में से 22 भारत में हैं। दिसंबर 2020 में लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ में प्रकाशित इंडिया स्टेट लेवल डिजीज बर्डन इनिशिएटिव ने संकेत दिया कि भारत में 2019 में 1.7 मिलियन मौतें हुईं जिसके लिए वायु प्रदूषण जिम्मेदार था। किसानों के एक वर्ग ने, विशेष रूप से पंजाब में, गेहूँ की कटाई के बाद अवशेषों को जला दिया, भले ही चारे की कीमतें बढ़ गईं। कई किसान बताते हैं कि जल्दी में होने के कारण उन्होंने पराली जलाना शुरू कर दिया- राज्य ने धान बोने के लिए 10 जून की तारीख तय की थी। 2019 में भारत



में सभी मौतों के 17.8% और श्वसन, हृदय और अन्य संबंधित बीमारियों के 11.5% के लिए प्रदूषण का अत्यधिक स्तर जिम्मेदार है।

पराली जलाने से निपटने के लिए 100% केंद्रीय वित्त पोषित योजना के तहत, ऐसी मशीनें जो किसानों को इन-सीटू प्रबंधन में मदद करती हैं - मिट्टी में वापस ठूँठ डालकर - जव्यक्तिगत किसानों को 50% सब्सिडी और कस्टम हायरिंग सेंटर (सीएचसी) पर प्रदान की जानी थी। जबकि हरियाणा ने अब तक 2,879 सीएचसी स्थापित किए हैं और लगभग 16,000 पुआल प्रबंधन मशीनें प्रदान की हैं, इसे 1,500 और स्थापित करना है और लगभग उतनी ही पंचायतों को कवर करना है, जहाँ यह अब तक पहुँच चुका है।

इसी तरह, पंजाब, जिसने अब तक 50,815 मशीनें प्रदान की हैं, को 5,000 और सीएचसी स्थापित करने की आवश्यकता होगी - जबकि पहले से ही 7,378 स्थापित किए जा चुके हैं - और इसकी 41 फीसदी पंचायतों तक पहुँच होनी चाहिए। केंद्र ने डीजल और पेट्रोल से चलने वाले वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम करने और भारत में इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों को बढ़ावा देने के लिए 2015 में फास्टर एडॉप्शन एंड मैनुफैक्चरिंग ऑफ हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (फेम) इंडिया स्कीम शुरू की है। योजना को अधिक से अधिक अपनाने के लिए दो साल के लिए बढ़ा दिया गया है।

13 अगस्त, 2021 को लॉन्च की गई व्हीकल स्क्रेपेज पॉलिसी, भारतीय सड़कों पर पुराने वाहनों को आधुनिक और नए वाहनों से बदलने के लिए सरकार द्वारा वित्त पोषित कार्यक्रम है। इस नीति से प्रदूषण कम होने, रोजगार के अवसर सृजित होने और नए वाहनों की माँग बढ़ने की उम्मीद है। अगस्त 2021 में प्रधान मंत्री ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने और वायु गुणवत्ता में सुधार करने के लिए 2025 तक पेट्रोल में इथेनॉल सम्मिश्रण के लक्ष्य को 20 प्रतिशत तक बढ़ाने की घोषणा की। अगस्त 2021 में, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया गया था, जिसका उद्देश्य 2022 तक एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक को समाप्त करना

है. प्लास्टिक और ई-कचरा प्रबंधन के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व पेश किया गया है.

ग्रीन इंडिया मिशन का कार्यान्वयन भारत में पाँच मिलियन हेक्टेयर की सीमा तक ग्रीन कलर बढ़ाने और अन्य पाँच एमएचए पर मौजूद ग्रीन कवर की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए किया गया है. सरकार ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के प्रारूपण के साथ वायु प्रदूषण को एक अखिल भारतीय समस्या के रूप में स्वीकार किया, जिसका उद्देश्य पूरे भारत में वायु गुणवत्ता की निगरानी के लिए संस्थागत क्षमता का निर्माण और उसे मजबूत करना था, स्वास्थ्य प्रभावों को समझने के लिए स्वदेशी अध्ययन करना था.

नीति-निर्माण करते समय चाहे वह पराली जलाना हो या थर्मल पावर प्लांट उत्सर्जन, स्वास्थ्य पर उनके संभावित प्रभावों पर विचार किए बिना निर्णय किए जाते हैं. नीति निर्माताओं के बीच स्वास्थ्य की समझ की कमी के परिणामस्वरूप, नीतियों का निर्माण और कार्यान्वयन समाज के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बहुत कम जानकारी के साथ किया जाता है.

नीति के लिए एक जोखिम-केंद्रित दृष्टिकोण को प्राथमिकता देना जो जोखिम को कम करने में सबसे अधिक योगदान देती हैं और इस प्रकार स्वास्थ्य लाभ उत्पन्न करेगी. राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों में न केवल स्थानीय परिस्थितियों बल्कि कमजोर समूहों पर जोखिम के प्रभाव को भी शामिल करे. सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल ने वायु प्रदूषण नीतियों के विकास में स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के आह्वान को प्रेरित किया है. फ्रंट-लाइन वायु प्रदूषण नियामकों को समाज की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए.

मुख्य रूप से स्वास्थ्य लाभों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नीति निर्माताओं को महामारी विज्ञान, पर्यावरण, ऊर्जा, परिवहन, सार्वजनिक नीति और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों को शामिल करना चाहिए. यह दृष्टिकोण जलवायु और वायु गुणवत्ता उपायों को गति देगा. हमें समझना होगा कि अधिकतम वायु प्रदूषण दहन स्रोतों से पैदा होता

है. इसलिए स्वच्छ हवा हासिल करने का सबसे अच्छा तरीका ये होगा, कि फॉसिल ईंधन की खपत और उसे जुड़े उत्सर्जनों को कम किया जाए, जिसके लिए हमें बेहतर विकल्पों या कुशल प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों की ओर जाना होगा.

\*\*\*\*\*



## ठंड का मौसम

रचनाकार- चन्द्रहास सिन्हा, धमतरी



देखो ठंड का मौसम आया है,  
सुबह- सुबह कोहरा छाया है.  
दादी मुझको सुबह उठाती है,  
मीठी -मीठी धूप सुहाती है  
मम्मी -पापा टहलते रोज  
पहने स्वेटर लगाते कनटोप.  
सुबह -सुबह हम दौड़ लगाते  
करते कसरत सेहत बनाते.  
सूरज दादा मेरे घर आना  
काँपते-काँपते नहीं नहाना.  
सोनू मोनू और बिट्टो रानी  
नहाते करके गरम पानी.  
ताजे फल सब्जियाँ आती  
ठंड में हमको खूब सुहाती.

\*\*\*\*\*

## राष्ट्रीय गणित दिवस 22 दिसम्बर पर विशेष बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ कमलेंद्र कुमार, उत्तर प्रदेश



1. उस कोण की माप बताओ,  
जो समकोण कहलाता है  
ध्यान लगाकर बोलो प्यारे  
गणित से अपना नाता है.
2. ऐसा कोण निराला है  
सरल कोण कहलाता है  
माप बताओ प्यारे बच्चों  
बोलो जो कुछ आता है.
3. उन कोणों को क्या कहते?  
0-90 अंश बीच जो रहते.  
ध्यान लगाकर झटपट बोलो  
निज बुद्धि का ताला खोलो.

4. उदभव मेरा हर कोई जाने,  
अंत न जाने कोय.  
रेखागणित से नाता मेरा,  
कहो जो मालूम होय.

5. मुझको कोई नाप ना पाये,  
दोनों ओर से बढ़ती जाऊँ.  
गणित की आकृति मुझको समझो  
झट बतलाओ क्या कहलाऊँ.

6. मैं रेखा का एक भाग हूँ,  
बात सुनो तुम पूरी.  
रेखा गणित से नाता मेरा,  
है यह बहुत जरूरी.

7. तीन अक्षर का विषय निराला,  
नाम बताओ प्यारे लाला  
सुनकर बच्चे चकराएं  
लेकिन रोचकता भी पाएं.



8. कुछ संख्याएं ऐसी होती,  
गिनने के जो आती काम  
पहली संख्या एक है बच्चों  
तुम बतलाओ उनका नाम.
9. स्वयं या एक से भाजित होती,  
ऐसी संख्या अजब निराली.  
और किसी से नहीं है भाजित,  
बोलो गुल्लो भोली भाली.
10. दो संख्याएं ऐसी आएँ,  
ठीक क्रम से बढ़ती जाएँ.
11. रहूँ अकेले मूल्य नहीं  
लगूँ साथ तो मूल्य बढ़ाऊँ,  
भारत की हूँ खोज निराली,  
बोलो झटपट क्या कहलाऊँ.
12. तीन भुजाएँ ऐसीं आर्यीं,  
जुड़ कर बच्चों क्या कहलाई?

13. तीन खम्ब जब मिले समान,  
बने बीच में कोण समान.  
इस आकृति का नाम बताओ,  
तब ही बच्चो टॉफी पाओ.

14. दो भुजा दो कोण समान,  
झट बतलाओ उसका नाम,  
तीन भुजा उसमें है आएँ,  
बोलो बच्चों क्या कहलाये?

15. तीन भुजायें जब जुड़ जाएँ,  
बोलो बच्चों क्या कहलाये?  
न भुजा समान न कोण समान,  
नाम बताओ कर के ध्यान.

1. 90 अंश, 2. 180 अंश, 3. न्यून कोण, 4. किरण, 5. रेखा, 6. रेखाखण्ड, 7. गणित, 8. प्राकृतिक संख्या, 9. रूढ़ि संख्याएँ, 10. क्रमागत संख्याएँ, 11. शून्य, 12. त्रिभुज, 13. समबाहु त्रिभुज, 14. समद्वि बाहु त्रिभुज, 15. विषमबाहु त्रिभुज

\*\*\*\*\*

## सहिष्णुता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



सहिष्णुता दुनिया की संस्कृतियों की समृद्ध विविधता, अभिव्यक्ति के रूपों और मानव होने के तरीकों का सम्मान, स्वीकृति और प्रशंसा है।

वैश्विक स्तर पर बढ़ते हिंसक चरमपंथ के इस युग में मानव जीवन के लिए एक बुनियादी अपेक्षा की जरूरत है, जो मानवीय गुणों में समाहित होते थे, परंतु परिवर्तित होते माहौल में यह मानवीय गुण भी धीरे-धीरे परिवर्तित होता गया। आजकल हिंसा, द्वेष, भेदभाव, मनमुटाव, गुस्सा, नकारात्मक प्रतिद्वंद्विता, तालमेल का अभाव, दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति दिनों दिन बढ़ती जा रही है इसलिए हम सब को मिलकर सदियों पूर्व वाले मानवीय गुणों को वापस लाने की आवश्यकता है। 16 नवंबर 2022 को अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस है, मानव जीवन के लिए बुनियादी अपेक्षा सहिष्णुता है।

सहिष्णुता, सहनशीलता और शांति के मार्ग को अपनाने के प्रोत्साहन के कारणों को देखें तो आज हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ हमारे साथी देशवासियों के बीच शांति और सौहार्द बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। राजनीतिक नकारात्मक प्रतिशोध की भावना का बढ़ना, धार्मिक कट्टरता, सांप्रदायिकता ध्रुवीकरण कोविड महामारी के



बाद उत्पन्न स्थिति, जिंदगी की जटिलताएँ और गिरता मानवीय आचरण, बढ़ता राजनीतिक द्वेष इत्यादि अनेक कारणों से आज मानवीय जीवन में सहिष्णुता की अत्यंत आवश्यकता आन पड़ी है जिसके लिए हमें आज न केवल इस वर्ष 16 नवंबर 2022 को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस को गंभीरता से जनजागरण कर मनाना है बल्कि वर्ष के प्रतिदिन इस दिवस को मनाने का संकल्प भी लेना है, ताकि हम असहिष्णुता को जीरो टॉलरेंस कर सकें.

सहिष्णुता के अर्थ को समझने की कोशिश करें तो करें तो सहिष्णुता में सह अस्तित्व का भाव विद्यमान होता है. सकारात्मक अर्थ में सहिष्णुता का आशय है अन्य विचारों, मतों या धर्मों आदि के अस्तित्व को भी स्वीकार करना तथा उनका सम्मान करना चाहे उसके विचार/मत/धर्म आपसे भिन्न हो सामाजिक समरसता और भाईचारे को बढ़ाने के लिए सहिष्णुता की अवधारणा का होना आवश्यक हैं. बुद्ध के पंचशील सिद्धांतों और नेहरू की पंचशील में सहिष्णुता की अवधारणा को ही प्रस्तुत किया गया हैं. सहिष्णुता का महत्वपूर्ण आधार लोकतांत्रिक दृष्टिकोण हैं, सहिष्णुता का प्रमुख संदर्भ धार्मिक सहिष्णुता से हैं विशेषकर भारत के सन्दर्भ में जहाँ अनेक धर्मों का अस्तित्व है वहाँ इसकी विशेष आवश्यकता हैं. भारत की पंथनिरपेक्षता की अवधारणा में विभिन्न धर्म, विचार और संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता के स्थान पर धार्मिक संदर्भ में सर्वध समभाव की अवधारणा को प्रसारित किया जिसमें विभिन्न धर्मों के सहअस्तित्व के साथ साथ सहभागिता का भाव विद्यमान हैं.

हर साल 16 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस मनाया जाता है. देश और दुनिया में लगातार उपद्रव, हिंसा, रंगभेद, जातिभेद, आगजनी की घटनाएँ बढ़ रही है और मानवाधिकारों का हनन हो रहा है. ये कारण देश दुनिया के विकास के रुकावट का कारण बन रहे हैं. विकासशील देश से विकसित देश बनना है तो इन सभी से परे सोचना होगा. इन सभी परिस्थितियों के बीच इंसानियत को बचाने, शांति और सौहार्द को कायम रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस मनाया जाता है. इस दिवस पर यूनेस्को द्वारा लोगों को असहिष्णुता के खतरों के बारे में अधिक से अधिक जागरूक किया जाता है. आज के वक्त में कॉर्पोरेट ऑफिस में, राजनीतिक क्षेत्र में

इस तरह की दूरियों को मिटाने के लिए सामाजिक जिम्मेदारी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है सांस्कृतिक विविधता और शांति जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाए। अधिक से अधिक लोगों को प्राथमिक शिक्षा का हक मिले। जिस पर देशभर के बड़े-बड़े नेताओं को एक छत के नीचे बैठकर जरूर विचार-विमर्श करना चाहिए। यूनेस्को ने वर्ष 1995 में महात्मा गांधी की 125 वीं जयंती के अवसर पर सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को-मदनजीत सिंह पुरस्कार की स्थापना की थी। यह पुरस्कार विज्ञान, कला, संस्कृति अथवा संचार के क्षेत्र में सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए गए काम के लिए दिया जाता है। सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को-मदनजीत सिंह पुरस्कार का शीर्षक है और सहिष्णुता और अहिंसा की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वैज्ञानिक, कलात्मक सांस्कृतिक या संचार क्षेत्रों में महत्वपूर्ण गतिविधियों को पुरस्कृत करता है। यह हर दो साल में 16 नवंबर को दिया जाता है। जिसमें एक लाख डॉलर का पुरस्कार दिया जाता है।

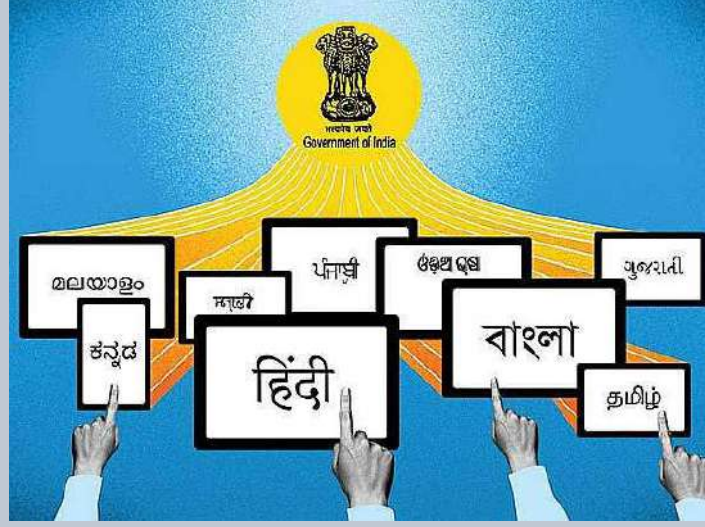
साल 1995 में यूनेस्को द्वारा सहिष्णुता दिवस मनाने की घोषणा की गई थी। 1996 में इस दिवस को मनाने के लिए यूनेस्को ने संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों को आमंत्रित किया। इसके बारे में जागरूकता फैलाने, सौहार्द की भावना पैदा करने के लिए एक अभियान जारी किया। जिसका नाम दिया टुगेदर। जिसका उद्देश्य लोगों के बीच आ रही सामाजिक दूरियों को कम करना और देशों, समुदायों और प्रवासियों के बीच मजबूती पैदा करना। इसके बाद से हर साल 16 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस मनाया जाता है।

\*\*\*\*\*



## भाषाई विविधता: हमारी शक्ति

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



भारत हजारों वर्ष पूर्व से अनमोल विशेषताओं का धनी रहा है. भारत में विशाल प्राकृतिक संपदा, संस्कृति, साहित्य, ज्ञान, भाषाई विविधता का खजाना भरा है. यह देखकर ऐसा महसूस होता है कि सृष्टि ने भारत पर दिल खोलकर अपनी कृपा बरसाई है, क्योंकि ऐसा बेजोड़ खजाना शायद ही किसी अन्य देश में होगा.

हमारी भाषाई विविधता को देखें तो हर भारतीय भाषा का गौरवशाली इतिहास, समृद्धि, साहित्य है जो हमारी शक्ति है और अनेकता में एकता की भाषा की मिठास से वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य के साथ-साथ भारत की प्रतिष्ठा भी बढ़ी है.

भाषाई खजाने के महत्व को देखें तो भारतीय बौद्धिक क्षमता विश्व प्रसिद्ध है और हर व्यक्ति के पास अपने ढंग की एक विशेष कला है जो उसे उनके भाषाई साहित्य और पूर्वजों से मिली है जिसका उपयोग करने के लिए उनके पास उचित और पर्याप्त प्लेटफार्म नहीं है और अगर है भी तो सभी के लिए नहीं है कुछ ही लोगों के लिए है हमें उनके लिए अपना कौशल दिखाने विश्वविद्यालय स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में भाषाई विविधता के कड़ियों को जोड़ने एक अभियान चलाना होगा और उस कौशल को तराशना होगा. इससे आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा.



भाषाई विविधता को एक माला में पिरोने के लिए राजभाषा हिंदी को एक सखी के रूप में प्रयोग करना होगा और हमारी भाषाई विविधता को हमारी शक्ति बनाना होगा.

माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति ने एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा कि हर भारतीय भाषा का गौरवशाली इतिहास है, समृद्ध साहित्य है, हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में भाषाई विविधता है. हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है क्योंकि हमारी भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक एकता को अभिव्यक्त करती हैं. इस संदर्भ में उन्होंने युवा छात्रों से संप्रदाय, जन्म, क्षेत्र, लैंगिक विभेद, भाषा आदि भेदभावों से ऊपर उठकर देश की एकता को मजबूत करने का आग्रह किया.

उन्होंने कहा कि एक सभ्य समाज से यही अपेक्षित है कि उसकी भाषा सौम्य, सुसंस्कृत और सृजनशील हो. उन्होंने विश्वविद्यालयों से अपेक्षा की कि वे यह संस्कार डालें कि साहित्य लेखन से समाज में सभ्य संवाद समृद्ध हो, ना कि विवाद पैदा हो. हम अपनी अभिव्यक्ति की आज़ादी को भाषा की मर्यादा और समाज के अनुशासन में रह कर प्रयोग करें. उन्होंने कहा कि विदेशों में फैले प्रवासी भारतीय समुदाय तथा विश्व के अन्य हिंदी भाषी देशों को, मातृभूमि भारत से जोड़े रखने में हमारी भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

इस संदर्भ में उन्होंने विश्वविद्यालयों से आग्रह किया कि वे हिंदी भाषी देशों और प्रवासी भारतीय समुदाय के लेखकों की साहित्यिक कृतियों को अपने बौद्धिक विमर्श में शामिल करें. हमारी भाषाई विविधता को देश की शक्ति बताते हुए, उन्होंने इस विविधता में एकता के सूत्र को मजबूत करने का आग्रह किया और कहा कि इसके लिए ज़रूरी है कि भाषाओं में आपस में संवाद बढ़े. उन्होंने कहा कि इस कार्य में विश्वविद्यालयों के भाषा विभागों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी. विश्वविद्यालयों के भाषा विभागों के बीच निरंतर संपर्क और बौद्धिक संवाद रहना चाहिए. भारतीय भाषाओं में हो रहे लेखन और प्रयोगों पर विचार होना चाहिए तथा उन्हें विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए.

विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने हिंदी साहित्य की अनेक विख्यात रचनाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराया है, जिससे दूर देशों में बैठे हिंदी के पाठक हिंदी का प्रामाणिक साहित्य पढ़ सकें. इस संदर्भ में उन्होंने आग्रह किया कि हिंदी के साथ साथ अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का हिंदी में भी सरल और सरस अनुवाद ऑनलाइन उपलब्ध कराएं. जिससे विश्व भारतीय भाषाओं के समृद्ध साहित्य से परिचित हो सके.

हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है. हर भारतीय भाषा का गौरवशाली इतिहास, समृद्धि, साहित्य, भाषाई विविधता हमारी शक्ति है तथा भारतीय अनेकता में एकता की भाषाई मिठास से वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य की प्रतिष्ठा बड़ी है.

\*\*\*\*\*

## बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कन्हैया साहू, भाटापारा



1. बहुत मचाता यह उत्पात, थोड़ा दिन में, ज्यादा रात.  
कुतर-कुतर कर चींजे खाय, बिल्ली से यह अति घबराय.
2. सड़क लगे इसको दीवार, भरती इस पर यह रफ्तार.  
पूँछ कटे तो फिर उग आय, फूल नहीं पर कली कहाय.
3. जीव अनोखा, एक न पाद, चले पीठ पर घर को लाद.  
तन है कोमल, खोल कठोर, पादप खाता गजब चटोर.
4. पाँव नहीं पर करता सैर, छेड़े उसकी कभी न खैर.  
पेट, दाँत पर एक न कान, चमड़ी केंचुल, रज्जु समान.
5. टेढ़ी दुम 'औ' टेढ़ी चाल, आठ पैर जैसे भ्रमजाल.  
छेड़े उसको मारे डंक, खंड-खंड तन, कभी न खंक.



6. सिर पर कलगी जैसे ताज, रंग बदलना इसका काज.  
लम्बी जिभिया, लम्बी पूँछ, मिलता एक न मुँह पर मूँछ.

7. लोहे की यह दो तलवार, लड़ें लड़ाई अति दुमदार.  
दोनों रहते फिर भी संग, दिखते हैं जुड़वा सा रंग.

8. पानी से निकला तरु एक, पात नहीं पर डाल अनेक.  
नीचे इसके मिले न ठाँव, आसपास टिके न पाँव.

9. जीभ नहीं पर बोले बोल, पाँव नहीं पर घूमे गोल.  
भूप, प्रजा सबका कल्याण, बसते सबके इसमें प्राण.

10. बनता पीतल, सोना, स्टील, होता क्रय, विक्रय, व्ययशील.  
खनखन-टनटन बोले बोल, पहिये सम चलता यह गोल.

11. भटक गये यदि पथ अनजान, सही दिशा का देता ज्ञान.  
छोटी डिबिया, आता काम, सोच-समझकर कहिए नाम.

1. चूहा, 2. छिपकली, 3. घोंघा, 4. साँप, 5. बिच्छू, 6. गिरगिट, 7. कैची, 8.  
रूपिया, 9. सिक्का, 10. दिशासूचक यंत्र।

\*\*\*\*\*

## ज़लनखोरी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



सृष्टि ने मानव को इस धरा पर रचकर अनुपम बौद्धिक क्षमता सौंपी, ताकि अपनी बुद्धि कुशलता का उपयोग कर, सभी जीवों के कल्याण के लिए कार्य करे. परंतु जिस प्रकार का मानवीय व्यवहार हम देख रहे हैं यह जीव अपनी ही उलझनों में उलझ गया है और रचनाकर्ता के कार्य में हस्तक्षेप करने की कोशिश कर रहा है.

आज हर मानव, अपने लिए हर तरह की सुख सुविधाएँ, भोग चाहता है, और न होने पर उसके मन में ईर्ष्या का भाव पैदा होता है जो मनुष्य को असफलता और बर्बादी तक भी पहुँचा देता है.

ईर्ष्या एक भाव है जो किसी अन्य व्यक्ति के पास कुछ ऐसी चीज होने की वजह से आ सकती है, जो हम पाना चाहते थे. अगर किसी के पास कोई चीज हमसे ज्यादा है. अगर हम में किसी तरह की अपूर्णता है, जिसकी वजह से दूसरों के सामने हम अच्छा महसूस नहीं कर पाते हों, तो इससे भी कई बार ईर्ष्या पैदा हो जाती है. ईर्ष्या में मुख्य रूप से एक अपूर्णता का भाव छिपा होता है. यदि हम आनंद के भाव से पूरी तरह भरे हों, तो हमारे भीतर किसी के भी प्रति ईर्ष्या का भाव उत्पन्न नहीं होगा. जैसे ही हमको ये लगता है कि हमारे बगल में बैठे आदमी के पास हमसे कुछ ज्यादा है; हम खुद को उससे कम महसूस करने लगते हैं तब ईर्ष्या का भाव पैदा होता है. अगर



यहाँ हमसे बेहतर कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद है तो ईर्ष्या पैदा हो सकती है. यदि हम खुद में मस्त हैं तो ईर्ष्या का कोई प्रश्न ही नहीं है.

जलन और ईर्ष्या के पीछे कोई न कोई वजह होती है, और इस वजह को समझने के लिए जरूरी है कुछ देर खुद अपने साथ बैठना और अपने आप से इस बारे में पूछना. उससे भी ज़्यादा जरूरी है खुद को पहचानना. जरूरी नहीं है कि हमको अपनी इस भावना के बारे में पता लगे. इसको महसूस करना बहुत जरूरी है. जब तक हम इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करेंगे, आगे नहीं बढ़ पाएँगे, इसलिए जरूरी है सच्चाई को स्वीकार करके आगे बढ़ें. ईर्ष्या की ये भावना सिर्फ प्रतियोगी के साथ ही नहीं, बल्कि किसी भी रिश्ते में आ सकती है. जैसे हमारे भाई-बहन, दोस्त, रिश्तेदार, आपके पार्टनर, पैंट्स और यहाँ तक कि हमारे अपने बच्चे भी हो सकते हैं. इस भावना के चलते हम कई बार सामने वाले को इतना हर्ट कर देते हैं जो उनके लिए बहुत तकलीफदेह होता है. और मजेदार बात यह कि इसका हमें पता ही नहीं चलता. जलनखोरी एक सोच या भाव है, जो आमतौर पर भय, चिंता असुरक्षा और ईर्ष्या के विचारों या भावनाओं से जुड़ा होता है. जिनके पास संपत्ति, पद या सम्मान आदि की कमी होती है, उनमें इस तरह की भावनाएँ या सोच जन्म लेने लगती है. ये विशेष रूप से किसी दुश्मन या प्रतिभागी हेतु होती है. इस तरह की भावनाएँ या सोच सामान्यतः एक या एक से अधिक भावों से मिल कर बने होते हैं, जिसमें क्रोध, घृणा आदि भावनाओं का मिश्रण होता है. जलन का वास्तविक अर्थ ईर्ष्या से भिन्न है, लेकिन आमतौर पर इन दोनों शब्दों को एक ही समझा जाता है.

हम जलनखोरी ईर्ष्या के परिणामों को देखें तो इसमें शत्रु भाव पैदा होता है. हम अपने दोस्तों पड़ोसियों साथियों की सफलता उनके बच्चों की गुणवत्ता से मन में भाव उत्पन्न होता है कि हमारे साथ ऊपर वाले ने ऐसा क्यों नहीं किया,? यहाँ से शुरू होती है हमारी दुर्गति बर्बादी की कथा. हम हर तरह के दुर्गुणों से घिरते चले जाते हैं और हमें पता तब चलता है जब हम अपना पाया हुआ भी खो देते हैं. इसलिए हमें चाहिए कि अपनी मौज में मस्त रहें किसी की सफलताओं से खुश होकर उन्हें बधाइयाँ देना चाहिए और खुद भी मेहनत करने का भाव लाना चाहिए कि हम भी ऐसी मेहनत कर



आगे बढ़ें. ईर्ष्या एक ऐसा शब्द है जो मानव के खुद के जीवन को तो तहस-नहस करता ही है औरों के जीवन में भी खलबली मचाता है. यदि हम किसी को सुख या खुशी नहीं दे सकते तो कम से कम दूसरों के सुख और खुशी देखकर जलें नहीं. यदि हमको खुश नहीं होना है, न सही. मत होइए खुश, किन्तु किसी की खुशियों को देखकर हम अपने आपको ईर्ष्या की आग में ना जलाएँ. अफ़सोस की बात है कि आज के समाज में लोग किसी के दुःख को देखकर तो बहुत दुखी होते हैं सहानुभूति जताते हैं लेकिन किसी की खुशी को देखकर खुश नहीं होते. किसी की उन्नति से, किसी के गुणों से जलते हैं और दुखी होते हैं और पुरा प्रयास करते हैं कि सामने वाले का बुरा हो. हम सभी को इससे बचना चाहिए.

ईर्ष्या हमारा स्वभाव नहीं है. किसी चीज को छोड़ने से आजादी नहीं मिलेगी, क्योंकि छोड़ने के लिए है ही क्या? इस समय, हमारे भीतर कोई ईर्ष्या नहीं है. यह हमारे स्वभाव का अंग नहीं है. हम इसे समय-समय पर पैदा करते हैं. अगर हम अपने इसे इसलिए पैदा किया होता कि हम ऐसा करना चाहते थे, तो यह हमारे लिए आनंददायक होता. अगर हमको गुस्से, जलन और नफरत से खुशी होती है तो उसे पैदा कीजिए. पर ऐसा नहीं है, वे हमारे लिए खुशी देने वाले अनुभव नहीं हैं. तो हमने उन्हें क्यों रचा है? हमने उन्हें रचा है क्योंकि हमारे भीतर जरूरी जागरूकता की कमी है. हमको नहीं लगता कि पहले हमारी ईर्ष्या हमें ही जलाती है. बाद में सामने वाले का नुकसान होता है. इसका प्रभाव हमारी दिनचर्या पर पड़ता है. हम चिड़चिड़े हो जाते हैं और घर के लोगों के साथ भी हमारा व्यवहार गलत हो जाता है, तब घर का वातावरण कलहपूर्ण हो जाता है और हमारा स्वभाव झगड़ालू हो जाता है.

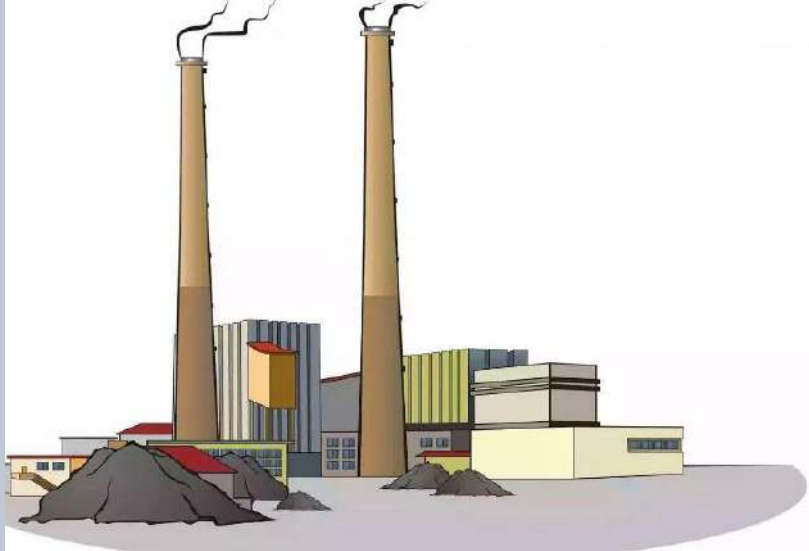
इस ईर्ष्या के मूलभूत कारणों में सबसे पहला कारण है अहमन्यता-अपने आप को बड़ा मानने की प्रवृत्ति; दूसरा कारण है असहिष्णुता- दूसरों की बातों को न सह पाने की स्थिति; तीसरी बात है अनुदारता- किसी के प्रति उदारता का न होना, संकीर्ण होना; और चौथी बात है ओछी मानसिकता. कैसे ईर्ष्या से छुटकारा पाएँ इसके उपाय हैं, ईर्ष्या को समझना, ईर्ष्या को सकारात्मकता में बदलना, तुलना से बचिए, कृतज्ञता महसूस करना, दृष्टिकोण को बदलना. जब-जब हमारे मन में किसी के लिए ईर्ष्या का

भाव जागृत हो तब-तब अपने विचारों की दिशा को सकारात्मक सोच की ओर मोड़ दीजिए जब विचारों की दिशा ही बदल जाएगी तब अपने आप नकारात्मकता हमसे दूर होती जाएगी और जब मन में अच्छी बातें आती हैं तब हमें वो बातें सुकून ही देती हैं न की ग्लानि या जलन.

\*\*\*\*\*

## मजबूत औद्योगिक नीति की जरूरत

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



औद्योगिक नीति को आर्थिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य द्वारा रणनीतिक प्रयास के रूप में परिभाषित किया गया है, अर्थात क्षेत्रों के बीच या भीतर निम्न से उच्च उत्पादकता गतिविधियों में बदलाव. भारत का लक्ष्य 2025-26 तक अपने विनिर्माण सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) को लगभग 3 गुना बढ़ाकर 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचाना है. वैश्विक अर्थव्यवस्था में विनिर्माण प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए उच्च प्रौद्योगिकी आधारित बुनियादी ढाँचा और कुशल जनशक्ति महत्वपूर्ण हैं.

भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए औद्योगिक नीति अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि यहाँ नियोजित अर्थव्यवस्था के माध्यम से औद्योगिक विकास हो रहा है. देश में प्रकृतिक साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं लेकिन उनका उचित दोहन नहीं हो रहा है. यहाँ प्रतिव्यक्ति आय कम होने के कारण पूँजी निर्माण की दर भी कम है तथा उपलब्ध पूँजी सीमित मात्रा में है. अतः आवश्यक है कि उसका उचित प्रयोग किया जाए.

देश के सन्तुलित विकास के लिए, संसाधनों को उचित दिशा में प्रवाहित करने के लिए, उत्पादन बढ़ाने के लिए, वितरण की व्यवस्था सुधारने के लिए, एकाधिकार,



संयोजन और अधिकार युक्त हितों को समाप्त करने अथवा नियन्त्रित करने के लिए कुछ गिने हुए व्यक्तियों के हाथ में धन अथवा आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण को रोकने के लिए, असमानताएँ घटाने के लिए, बेरोजगारी की समस्या हल करने के लिए, विदेशों पर निर्भरता समाप्त करने के लिए तथा देश को सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए एक उपयुक्त एवं स्पष्ट औद्योगिक नीति की आवश्यकता होती है।

वे क्षेत्र जहाँ व्यक्तिगत उद्यमी पहुँचने में समर्थ नहीं हैं, सार्वजनिक क्षेत्र में रखे जाएँ और सरकार उनका उत्तरदायित्व ले. साथ ही निजी क्षेत्र का उचित नियन्त्रण भी होना चाहिए जिससे कि विकास योजनाएँ ठीक प्रकार चलती रहें.

मध्यम और बड़े पैमाने के औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों की तुलना में एमएसएमई क्षेत्र अपेक्षाकृत कम अनुकूल रूप से ऋण उपलब्धता और कार्यशील पूँजी की ऋण लागत के मामले में स्थित है. भारत अभी भी परिवहन उपकरण, मशीनरी (इलेक्ट्रिकल और गैर-इलेक्ट्रिकल), रसायन और उर्वरक, प्लास्टिक सामग्री आदि के लिए विदेशी आयात पर निर्भर है. औद्योगिक स्थान लागत प्रभावी बिंदुओं के संदर्भ के बिना स्थापित किए गए थे और अक्सर राजनीति से प्रेरित होते हैं. निजी क्षेत्र के उदारीकरण के 30 साल बाद भी सरकार टैरिफ दीवारें खड़ी करते हुए फिर से सब्सिडी और लाइसेंस दे रही है.

लालफीताशाही और तनावपूर्ण श्रम-प्रबंधन संबंधों की विशेषता वाले अप्रभावी नीति कार्यान्वयन के कारण इनमें से अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम घाटे में चल रहे हैं. वर्तमान में पीएलआई के तहत चुने गए कई उद्योग अत्यधिक पूँजीगत और कौशल गहन हैं. भारी संख्या में अकुशल श्रमिकों के लिए रोजगार सृजन के लक्ष्य पर विचार किया जाना चाहिए और अनावश्यक सब्सिडी से बचना चाहिए. हमें गैर-निष्पादित फर्मों के साथ सख्त होना होगा. जरूरत पड़ने पर हम उनसे समर्थन वापस ले सकते हैं. इसके लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है जो भारत में नौकरशाही की पारंपरिक संस्कृति से परे जाते हैं.

उत्पादकता में सुधार के लिए अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करने, विस्तार सेवाओं, व्यावसायिक प्रशिक्षण, विनियमों और बुनियादी ढांचे में सुधार की आवश्यकता है। छोटी और मध्यम आकार की फर्मों की सहायता के लिए इन नीतियों को स्थानीय विकेंद्रीकृत संदर्भों में अनुकूलित करने की आवश्यकता है। रोजगार सृजन के लिए, उदा. नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन और भंडारण, बायोप्लास्टिक्स, ड्रिप सिंचाई और वर्षा संचयन की तकनीकें, समुद्र की दीवारों का सुदृढीकरण, हरित ऊर्जा से चलने वाले तिपहिया सार्वजनिक परिवहन आदि। औद्योगिक नीति में ऐसे उद्योग का निर्माण शामिल होना चाहिए जो नवाचार, प्रौद्योगिकी, वित्तीय रूप से व्यवहार्य और पर्यावरण के अनुकूल हो और जिसका लाभ समाज के सभी वर्गों द्वारा साझा किया गया हो।

औद्योगिकीकरण से अर्थव्यवस्था सन्तुलित होगी तथा कृषि की अनिश्चितता कम हो जायेगी। रोजगार में वृद्धि, औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप नए-नए उद्योगों का निर्माण होगा और देश के लाखों बेरोज़गारों को इन उद्योगों में काम मिलने लगेगा इससे बेरोज़गारी कम होगी .

\*\*\*\*\*

## कविता- पहला कदम

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



विजय के लिए लक्ष्य पर ध्यान हो,  
नित्य कर्म में लगन हो खा कसम.  
एक ठौर रख सोच और समझ कर,  
जीवन जंग जीत का पहला कदम.

सही दिशा में पतवार को घुमाते चल,  
नदी की धारा तीव्र हो रही है प्रवाहित.  
मत छोड़ पालों को हवाओं के भरोसे,  
नाव डूबाने बैठा जल भंवर सन्निहित.

पर्वत शिखर दुर्गम, अटल, विकराल,  
आगे बढ़ तू फहराने जीत की झंडा,  
चढ़ेगा, गिरेगा कई-कई बार फिसलेगा,  
ध्येय पाने अपना अनेक हथकण्डा.



जीवन कुरुक्षेत्र युद्ध का खुला मैदान,  
चक्रव्यूह भेदने धनुर्धारी अर्जुन बन.  
रख पास सदा गीता ज्ञान दाता कृष्ण,  
फिर लगा दे अपने कर्म में तन-मन.

जंग लड़ने के लिए खुद को तैयार कर,  
ध्यान से लगा एक तीर से एक निशाना.  
दृढ़ संकल्पित हो वैमनस्य को कर ढेर,  
जयन में शामिल होगा सारा जमाना.

\*\*\*\*\*

## अपनों से बेईमानी, पतन की निशानी

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, हरियाणा



समाज में अक्सर ईमानदारी और बेईमानी को लेकर चर्चा होती रहती है. बेईमान व्यक्ति भी आखिरी तक स्वयं को ईमानदार साबित करने की कोशिश करता है. जब हम दूसरों का हक छीनने की कोशिश करते हैं तो हमारे अंदर बेईमानी के अंकुर अपने आप पैदा हो जाते हैं. पैसे के पीछे पागल होना ही ऐसी स्थिति के लिए जिम्मेदार होता है. ईमानदारी केवल सच बोलने के बारे में नहीं है. यह अपने और दूसरों के साथ वास्तविक होने के बारे में है कि आप कौन हैं, आप क्या चाहते हैं और आपको अपना सबसे प्रामाणिक जीवन जीने के लिए क्या चाहिए. ईमानदारी खुलेपन को बढ़ावा देती है, हमें सशक्त बनाती है और तथ्यों को प्रस्तुत करने के तरीके में निरंतरता विकसित करने में सक्षम बनाती है. ईमानदारी हमें अपने आस-पास की हर चीज को स्पष्टता से देखने की अनुमति देती है.

ईमानदारी आत्मविश्वास, उत्पन्न करती है, हमारी इच्छा शक्ति को सशक्त करती है और दूसरों के लिए हमारे उदाहरण को देखने और देखने के लिए सबसे अच्छे तरीके से हमारा प्रतिनिधित्व करती है. ईमानदारी हमारी जीवन शक्ति में सुधार करती है. ईमानदारी चरित्र के प्रमुख घटकों में से एक है और किसी भी सफल, जिम्मेदार व्यक्ति के सबसे प्रशंसनीय गुणों में से एक है. ईमानदारी एक मूलभूत कारक है, यह किसी



के चरित्र के निर्माण में मदद करती है. एक ईमानदार व्यक्ति अपने व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में हमेशा सफल होता है. वास्तविकता यह है कि अभावग्रस्त लोग पैसे के पीछे नहीं भागते. वे अपनी न्यूनतम जरूरतों के लिए संघर्ष करते हुए सिर्फ इतना कमाना चाहते हैं कि जिससे समय-समय पर उनके सभी कार्य पूर्ण होते रहें. हो सकता है कि उनमें ज्यादा पैसा कमाने की थोड़ी-बहुत चाह होती हो लेकिन उनकी इस चाहत में एक सकारात्मकता होती है

यहाँ तक कि एक छोटा सा झूठ बोलने से भी हमारी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचने का जोखिम होता है, दूसरों की हम पर भरोसा करने की प्रवृत्ति भी कम हो जाती है. इसके अलावा, एक झूठ अक्सर दूसरे, अधिक महत्वपूर्ण झूठ को बोलने की आवश्यकता की ओर ले जाता है, जो खोजे जाने पर और भी अधिक नकारात्मक परिणामों का जोखिम लाता है. अंत में, हम एक छोटा सा झूठ बोलने के परिणामों की भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं, और यदि इस तरह के परिणाम हमारे अनुमान से अधिक महत्वपूर्ण रूप से प्रतिकूल हो जाते हैं, तो हमारी जिम्मेदारी की भावना और इसलिए अपराधबोध हमें कल्पना से कहीं अधिक परेशान कर सकता है.

सवाल यह है कि हम ईमानदारी से बेईमानी की तरफ कैसे खिंचे चले आते हैं? समाज बेईमानी को एक बड़ी बुराई के रूप में देखता है, इसके बावजूद समाज के एक बड़े हिस्से का झुकाव बेईमानी की तरफ रहता है. बेईमानी का गरीबी और अमीरी से कोई लेना-देना नहीं है. हाँ, यह जरूर है कि हम गरीबों में बेईमानी ढूँढने लगते हैं लेकिन अमीरों की बेईमानी हमें दिखाई नहीं देती है. दरअसल हम अपनी आर्थिक स्थिति से कभी संतुष्ट नहीं होते हैं. यह लोगों को अपने बारे में बेहतर महसूस करने, दूसरों की नज़रों में खुद को बेहतर दिखाने और अच्छे रिश्ते बनाए रखने की अनुमति देता है. बेईमानी किसी ऐसे व्यक्ति के लिए एक अच्छी रणनीति है जो अल्पकालिक लाभ को अधिकतम करने की कोशिश कर रहा है.

हम दूसरों की आर्थिक स्थिति पर ज्यादा ध्यान देते हैं. अपनी स्थिति से असंतुष्टि ही हमें बेईमानी की तरफ धकेलती है. गरीब लोग अमीर बनने के चक्कर में और अमीर



लोग और अधिक अमीर बनने के चक्कर में छोटा रास्ता पकड़ते हुए धड़ाधड़ सब कुछ पा लेना चाहते हैं. छोटे रास्ते का अंकुर ही भविष्य में बेईमानी का पौधा बन जाता है. चाहे गाँवों में जमीन-जायदाद के विवाद हों या फिर शहरों में लोगों का अपने पड़ोसियों से छोटी-छोटी बातों पर होने वाले झगड़े हों, सभी जगह हम दूसरों का हक छीनना चाहते हैं. यह कभी-कभी भौतिक लाभ में मदद करता है; यह सजा आदि से बचने में मदद करता है. वहीं, झूठ बोलना भी परेशानी खड़ी कर सकता है. झूठ बोलना संज्ञानात्मक रूप से क्षीण हो सकता है, यह इस जोखिम को बढ़ा सकता है कि लोगों को दंडित किया जाएगा, यह लोगों को खुद को अच्छे लोगों के रूप में देखने से रोककर उनके आत्म-मूल्य को खतरे में डाल सकता है, और यह आम तौर पर समाज में विश्वास को नष्ट कर सकता है. जब आप झूठ बोलते हैं, तो आप जो कह रहे हैं उस पर विश्वास करने के लिए खुद को धोखा देते हैं.

इस सारे माहौल में अच्छी बात यह है कि समाज की मूल भावना ईमानदारी के साथ है. आज स्वयं गलत काम करने वाला कोई पिता अपने बच्चों को बेईमानी की शिक्षा नहीं देता है. इस सच्चाई के बावजूद हमारे मन में बेईमानी और ईमानदारी को लेकर अंतर्द्वंद्व चलता रहता है. हमें यह मानना होगा कि ईमानदारी की वजह से ही देश और दुनिया में बहुत कुछ अच्छा भी हो रहा है. ईमानदारी की वजह से ही यह दुनिया चल रही है. भविष्य में हम कैसी दुनिया चाहेंगे, यह हमें ही तय करना है. ईमानदारी का अर्थ है सच्चा और खुला होना. यह नैतिक चरित्र का एक पहलू है जो सत्यनिष्ठा, सत्यवादिता, आचरण में सरलता सहित, झूठ, धोखाधड़ी, चोरी आदि के अभाव के साथ-साथ सकारात्मक और गुणी गुणों को दर्शाता है. यह कहा जाता है कि एक नीति के रूप में ईमानदारी हमेशा एक मूल्य के साथ आती है. यह सत्य है. ईमानदारी के रास्ते में समाज और व्यवस्था द्वारा बनाई गई बाधाओं का सामना करने के लिए ईमानदारी बलिदान और साहस की मांग करती है. लेकिन यह भी सच है कि सच्चा ईमानदार व्यक्ति तमाम बाधाओं के बावजूद आगे बढ़ता रहता है.

\*\*\*\*\*

## उलटा पुलटा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



उलटा पुलटा लिखें हैं नाम  
जोड़ - तोड़ से बनेगा काम  
छिपे अक्षरों में हैं फूल  
नाम बताएँ, करें न भूल

क ल म  
ल गु ह ड  
र ने क  
ली मे च  
ई ई मु छु  
जा पा रि त  
ना के सर ग  
व ड़ा के  
नी र ज धा गं  
खी ज सूर मु

उत्तर - कमल, गुड़हल, कनेर, चमेली, छुईमुई, पारिजात, नागकेसर, केवड़ा,  
रजनीगंधा, सूरजमुखी

\*\*\*\*\*

## गधा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

मुझे पालते और पोसते  
फिर भी क्यों दिनरात कोसते

बोझ खुशी से ढोता हूँ  
कभी न आपा खोता हूँ

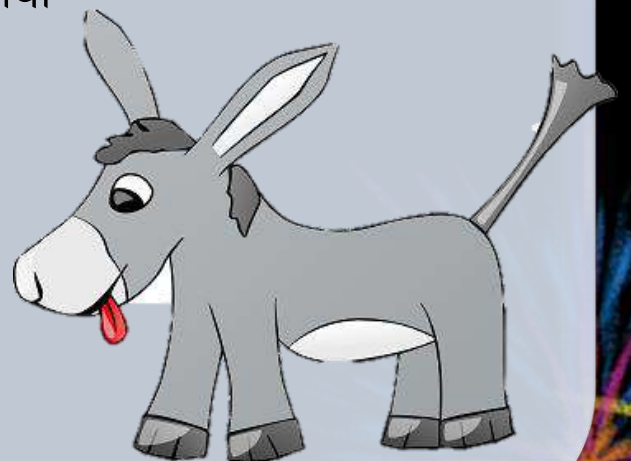
सहनशील - रंगीला हूँ  
थोड़ा - बहुत हठीला हूँ

मैं न शरारती से हारूँ  
उसे दुलत्ती झट मारूँ

सीधेपन की मिले सजा  
बुद्धिहीन ले रहे मजा

सदा करूँ मैं कार्य सधा  
लोग कह रहे मुझे गधा

\*\*\*\*\*





## पौधे से प्रेम

रचनाकार- पेश्वर राम यादव शिक्षक, गरियाबन्द



आठ साल की एक छोटी सी लड़की सुधा वह बहुत चंचल, नटखट, जिज्ञासु प्रवृत्ति की गुड़िया थी. माँ डाँटती तो मुंह फुलाकर बैठ जाती, कुछ ही समय में फिर हंसती, जब वह हंसती तो मानो घर के कोने- कोने में संगीत बज रहा हो. वह रोती तो जैसे घर की रौनक ही चली जाती, वह अपने मम्मी से बहुत प्यार करती थी. वह पाठशाला अपनी मम्मी के साथ जाती पाठशाला से आने के बाद वह मम्मी के आगे पीछे घूमती रहती, मम्मी के काम में हाथ बंटाती। सुधा के घर के छत में उसकी मां ने सीमेंट और मिट्टी के बहुत सारे गमलें लगाए थे, उन गमलों में रंग- बिरंगे फूल एवं रंगबिरंगी पत्ते वाले कई प्रकार के पौधे लगाए थे। सुधा की मम्मी उन गमलों में पौधों को नियमित रूप से पानी देती थी, गमलों की मिट्टी को खुरपी से पोला करती थी. सुधा की मम्मी गमलों के पौधों के सुखी पत्तियाँ, फूलों एवं रसोई में उपयोग होने वाली सब्जियों फलों के छिलकों को बाहर नहीं फेकती थी. वह उन्हें एक टब में डालकर रखती थी, कुछ समय बाद वे सड़कर खाद में बदल जाते थे. फिर उसे धूप में सुखाकर बुरादा बनाकर गमलों में मिट्टी के साथ मिला दिया करती थी। इससे पौधों को पोषण मिलता था पर्याप्त पोषण के कारण गमलों के पौधे स्वस्थ रहते थे जिससे गमलों में हरियाली रहती थी.

माँ की तरह सुधा को भी पौधों से प्यार हो गया था वह भी गमले में पौधों की देखरेख करती समय पर गमलों में पानी डालती थी. वह प्रतिदिन स्कूल जाने से पहले और आने के बाद पौधों को एक बार जरूर निहारती थी. पौधों से बातें करती वे पौधों को देखकर

मन ही मन खुश रहती थी ,वह पौधों से बहुत प्रेम करती थी कुछ दिन बाद गमलों में सुंदर सुंदर नाजुक-नाजुक मुलायम सी पौधों से कलियाँ निकल आई ,तब सुधा पौधों की देखभाल और अच्छी से करने लगी..समय बीतता गया फिर पौधों के कलियों से सुंदर - सुंदर रंग-बिरंगी फूल खिलने लगे । सुधा की खुशी का ठिकाना नहीं था, और वह खुशी-खुशी छत में पौधों की हरियाली फूलों की महक के बीच बैठकर खूब पढ़ाई करती थी।

उन्ही दिनों की बात है सुधा छत में बैठकर पढ़ाई कर रही थी कि कुछ भौरे गमलों में पौधों के फूलों पर उड़ती हुई आई और उस गमलों पर खिले फूलों पर बैठने लगी. सुधा को लगा कि भौरे फूलों के रसों को चूसकर उसे हानी पहुंचाएगी सुधा ने भौरे को भगाने लगी. भौरे को न भागते देख कर सुधा ने एक बड़ी सी पालीथिन के थैली से गमलों को एक एक कर के इस तरह से ढक दिया कि भौरे फूलों पर बैठ न पाए, भौरे गमलों के पास आती गुनगुना की चली जाती.

कुछ दिन बाद सुधा ने ढके हुए पौधों को पॉलीथिन से हटाया तो देखा कि पौधों में पीलापन ,कमजोरी के साथ मुरझाने लगा था. ये सब देखकर सुधा ने अपनी मम्मी को यह बात बताई.उसकी मम्मी ने गमलों के पौधों को देखकर सुधा को डांटते हुए समझाएं कि प्रकृति में सभी जीव एक दूसरे के पूरक होते हैं मित्र होते हैं। और एक दूसरे का मदद करते हैं तुमको इस तरह से पौधों को पॉलीथिन में नहीं ढकना चाहिए था. क्योंकि पौधे सूर्य प्रकाश के उपस्थिति से अपना भोजन बनाते हैं ,पॉलीथिन से पौधे को ढकने के कारण चार पांच रोज से पौधे अपना भोजन नहीं बना पाएं और पौधों में अधिक मात्रा से वाष्पोत्सर्जन होने लगा जिससे पौधे में मुरझाने पीलापन होने लगा. सुधा ने मम्मी की बातें सुनकर पौधों एवं भौरों से माफी माँगी और गमलों से पॉलीथिन को हटाने लगी. कुछ ही दिन बाद पौधों में फिर से हरियाली आ गई एवं कलियों से रंग बिरंगी फूल खिलने लगी. भौरे तितलियाँ गमलो के आसपास गुनगुनाने लगी ये सब देखकर सुधा बहुत खुश हुई

\*\*\*\*\*



## "हरा मटर"

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

हरे मटर देखो इठलाते,  
हाथ किसी के अभी न आते.  
सर्दी में ये रौब दिखाते,  
गर्मी में फिर से मुरझाते.

खेतों में सब इसे लगाते,  
बच्चे बूढ़े मिलकर खाते.  
भरा विटामिन इसके अंदर,  
नहीं बचाते इसको बंदर.

सब्जी का भी स्वाद बढ़ाते,  
चटनी के सँग घुल मिल जाते.  
मंडी से इसको जब लाते  
पकड़ पकड़ कर बच्चे खाते.

हरे मटर होते गुणकारी,  
ताकत मिलता हमको भारी.  
हमें एकता पाठ पढ़ाते,  
रहना सब को साथ सिखाते.



\*\*\*\*\*



## अतीत की परछाई

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



मेरे अतीत की परछाई धुंधली,  
मुझे याद आ रही है बीते दिन.  
दिवास्वप्न में दिखाई देता चित्र,  
इंद्रायुध अर्धवृत्ताकार रंगीन.

मैं उतरा भू पिण्ड सा चमकता,  
अर्ध रात्रि का प्रहर नींद में डूबा.  
देखकर स्तब्ध थे चांद और तारे,  
मुझे आवाज दी मेरी महबूबा.

ओ भविष्य गामी अभिजन नर,  
बदहाली देख तू हरित धरा की.

स्वर्ग का राज वैभव त्याग अभी,  
हे!महापुरुष दुःख हटा जरा की.

प्राचीन देश का नवीन विचार लिए,  
खेल मेरी अंगों से कोई नवीन खेल.  
हम दोनों में विद्युत तरंग की शक्ति,  
शिशु का विस्तार कर बनाकर मेल.

भूत को भूलाकर वर्तमान जिए जा,  
यही पल सुखद और आनंद वाला.  
मत भाग अपने कर्म से सुदूर अनंत,  
बनकर राजा, राज कर पहन माला.

\*\*\*\*\*

## संपादक की व्यस्तता को भी समझें

रचनाकार- पिकी सिंघल, शालीमार बाग दिल्ली



पत्रकारिता के क्षेत्र में  
रहते तत्पर दिन रात  
निष्पक्ष रह जो कर्तव्य निभाते  
संपादक है उनका नाम

"सर हमारा आर्टिकल तो इतने अच्छे स्तर का होता है, फिर भी आप इसे अपने अखबार में स्थान क्यों नहीं देते हैं. सर, अमुक रचनाकार की रचना इतनी निम्न स्तर की थी फिर भी आपने उसे अपने अखबार में स्थान दिया. एक बार आप मेरा आलेख ध्यान से पढ़ते तो सही. क्या सर, आपने आज के अंक में मेरे आलेख को इतना सा स्थान दिया और राजेश्वरी जी(काल्पनिक नाम) के आलेख को मुझसे अधिक स्थान देकर प्रकाशित किया. मैं तो आपके अखबार में कितने समय से लिखती आ रही हूँ, फिर भी आप नए नए रचनाकारों को ज्यादा तरजीह देते हैं और प्रतिदिन उनकी रचनाएँ प्रकाशित करते हैं यह तो गलत बात हुई सर.""



सर, क्या मैं कारण जान सकता हूँ कि मेरी रचना आज के अंक में अंतिम पृष्ठ पर क्यों प्रकाशित की गई जबकि सुनीता जी(काल्पनिक नाम) की रचना आपने मुखपृष्ठ पर इतना अधिक स्थान देकर प्रकाशित की.

सर मैं कितने दिनों से देख रही हूँ कि आप मेरी रचनाएँ और आलेख प्रकाशित ही नहीं करते हैं ,क्या मैं इसकी वजह जान सकती हूँ ? क्या नए रचनाकारों ने और नए साहित्यकारों ने हमारा स्थान ले लिया है? कृपया आप स्थिति से अवगत कराएँ और कारण बताने की जहमत उठाएँ कि नए नए लोगों को आपके अखबार में इतनी तवज्जो क्यों दी जा रही है.

सर पहले तो आप मेरी रचनाएँ प्रतिदिन प्रकाशित करते थे परंतु कुछ समय से देख रहे हैं कि सप्ताह में दो या तीन बार ही आप मेरी रचनाओं को अपने अखबार में स्थान देते हैं ऐसा क्यों सर?

"सर आज ही मैंने देखा कि आपके अखबार में द्विवेदी जी(काल्पनिक नाम) के दो दो आलेख और मेरा एक छोटा सा आलेख सर यह तो सही नहीं है. मैं तो इतना अच्छा लिखता हूँ फिर भी आप मेरे आलेख को अपने दैनिक अखबार में बहुत ही कम जगह देकर प्रकाशित करते हैं जिस पर शायद ही किसी की नजर जाती होगी. सर, मैं अगर आपको मेल की जगह आपके पर्सनल नंबर पर अपनी रचनाएँ और आलेख भेजूं तो क्या आप हर रोज उसे अपने अंक में प्रकाशित करेंगे."""

ऐसे ही न जाने कितने दोषारोपण प्रत्येक दिन प्रत्येक अखबार के संपादकों पर लगाए जाते होंगे. रचनाकारों को दिक्कत न हो इसके लिए संपादकगण ने आजकल अनेक व्हाट्सएप समूह भी बना दिए हैं ताकि सभी अपनी रचनाएँ वहाँ आसानी से भेज सके क्योंकि जरूरी नहीं है कि प्रत्येक रचनाकार एवं साहित्यकार को मेल द्वारा रचनाएँ भेजने का अनुभव हो ही. बावजूद इसके रचनाकारों एवं साहित्यकारों की संपादकों के लिए शिकायतें खत्म होने का नाम ही नहीं लेती हैं. मैं प्रतिदिन अनेक व्हाट्सएप समूहों में रचनाकारों की ऐसी अनेक शिकायतें पढ़ती हूँ कि सर आपने अमुक रचनाकार की रचना तो प्रकाशित कर दी है परंतु मेरी रचना को क्यों प्रकाशित नहीं

किया. साहित्यकार द्वारा दी गई ऐसी दलीलें पढ़कर मन दुखी होता है कि क्या एक साहित्यकार का यही स्तर है? क्या उसे अपनी रचनाएँ प्रकाशित करवाने के लिए संपादकों के सामने यूँ गिड़गिड़ाना चाहिए.

जाहिर बात है कि संपादक को जो भी रचना और आलेख प्रकाशन योग्य नजर आते हैं वे उसे अवश्य छापते हैं ,वह भी पूर्ण निष्पक्षता एवम बिना किसी भेदभाव के. संपादक का किसी साहित्यकार और रचनाकार से व्यक्तिगत रिश्ता तो शायद नहीं होता ,इसलिए वे आलेख और रचनाकार की विषय वस्तु की तर्कसंगतता और समसामयिकता को महत्व देकर ही उन्हें अपने अंक में प्रकाशित करते हैं.

संपादक को बहुत बड़ी जिम्मेदारी का निर्वाह करना होता है. उनके पास न जाने कितने रचनाकारों और साहित्यकारों की रचनाएँ एवं आलेख प्रतिदिन पहुँचते हैं. उनमें से बेहतरीन रचनाएँ निकालना टेढ़ी खीर होती है.इस मुश्किल काम को ईमानदारी से पूरा कर एवम अपनी जिम्मेदारी को बखूबी से निभा वे जिस प्रकार संपादन का कार्य करते हैं, उसके लिए उनकी जितनी सराहना की जाए कम है . इतनी मेहनत और लगन से प्रत्येक आलेख को पढ़ना ,उसकी कमियों को दूर करना ,वर्तनी अशुद्धि दूर कर संशोधित करना एवं रचनाकारों के विचारों को ज्यों का त्यों प्रकाशित करने की इतनी बड़ी उजिम्मेदारी का निर्वहन संपादक जिस खूबसूरती के साथ करते हैं उसके लिए उन्हें सम्मानित किया जाना चाहिए न कि उन पर रचनाएँ न छापने का दोषारोपण किया जाना चाहिए.

रचनाएँ आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों जरूर छपेंगी. संपादकों की व्यस्तता को ध्यान में रखकर हम सभी रचनाकारों को थोड़ा धैर्य से काम लेना होगा. संपादक भी इंसान होते हैं और उनकी भी अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं जिसके भीतर रहकर ही उन्हें अपना काम करना पड़ता है. शायद ही कोई संपादक किसी रचनाकार से ईर्ष्या या जलन रखता होगा एवं उनकी रचनाओं को प्रकाशित न करने का भाव शायद ही उनके मन में होता होगा.

प्रतिदिन संपादकगण को निष्पक्ष रहकर समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करना होता है तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्हें अनेक जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है ताकि वह लोगों को समाज की असली तस्वीर दिखा सकें एवं समाज की बेहतरी के लिए अपना योगदान दे सकें.

संपादक के पद पर बैठा व्यक्ति केवल संपादन का ही कार्य नहीं करता, अपितु उसे एक पूरी संस्था को साथ लेकर चलना होता है जिससे संस्था की साख पर कोई उँगली ना उठा सके एवं निष्पक्ष पत्रकारिता की जिम्मेदारी वह बखूबी निभा सके.

पत्रकारिता के काम को  
न समझे इतना आसान  
रात दिन करते मेहनत जब कड़ी  
समाज में होता तब इनका सम्मान

\*\*\*\*\*



## बच्चे मन के सच्चे

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा छत्तीसगढ़



देवांश बहुत ही सरल और शांत स्वभाव का लड़का था.बच्चे मन के सच्चे होते हैं. उस बच्चे को देखकर मुझे एहसास हुआ.एक दिन मैं सुबह-सुबह मार्निंग वाक पर जा रही थी. वहीं स्टेडियम में चार पांच बच्चें बैठे थे, एक बच्चा बड़े शांत भाव से बैठा था.और चार उसे छेड़ रहे थे वह कुछ कह नहीं पा रहा था. देवांश चुपचाप ये सब देख रहा था उसे सहन नहीं हुआ. उसने जाकर उन बच्चों से कहा कि भाई किसी को बिना गलती परेशान करना अच्छी बात नहीं क्यों न हम सब मित्र बन जाए और साथ-साथ खेले.

बच्चें देवांश को देखने लगे और आपस में फुसफुसाने लगे.यार कह तो सही रहा है. ये हमारी उम्र के बराबर का है पर बातें बहुत सही एवं समझदारी की कर रहा है.हम सब क्यों न दोस्त बन जाए.

\*\*\*\*\*

## रसगुल्ले

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव, छिंदवाड़ा मध्य प्रदेश



बूँदें न गिरती अम्बर से,  
काश बरसते रसगुल्ले.  
कितने मजे हमारे होते,  
हो जाती बल्ले -बल्ले.

चेहरा ऊपर करके अपना,  
खड़े खोल मुँह हो जाते.  
गप्प- गप्प रसगुल्ले हम तो,  
कितने सारे खा जाते.  
कूचों ,गली -गली में होते,  
शोर शराबे हो हल्ले.

थक जाते हम खाते- खाते,  
आखिर कितने खा पाते.  
बड़े -बड़े बर्तन हम घर से,  
दौड़ -दौड़ कर ले आते.

दादा -दादी कहते बेटे,  
घर के सारे ड्रम भर ले आते.

पूरे पड़ोसी मित्र जनों को,  
हम अपने घर बुलवाते.  
थाली भर- भर कर रसगुल्ले,  
उन्हें पेट भर खिलवाते.  
कबरी गैया से भी कहते,  
रसगुल्ले तू भी चर ले.

\*\*\*\*\*



## फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए)

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



कोरोना महामारी के भीषण आघात के बाद अब दुनिया धीरे-धीरे इससे उबर रही है और अपनी-अपनी अर्थव्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए अनेक प्रकार की रणनीति बनाकर उनका क्रियान्वयन कर रहे हैं. कई देश अपनी विभिन्न विलंबित योजनाओं को नए रूप में लागू कर रहे हैं ताकि अर्थव्यवस्था को फिर से गति प्रदान की जाए.

आस्ट्रेलिया की संसद ने भारत के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पारित कर दिया है. वैसे तो भारत के अनेक देशों के साथ एफटीए है परंतु ऑस्ट्रेलिया के साथ एफटीए के नए और दूरगामी सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे. वहीं ब्रिटेन से भी अतिशीघ्र एफटीए होने की संभावना है जिसके संकेत वहाँ के पीएम ऋषि सुनक ने जी-20 सम्मेलन में दे दिए थे.

भारत एफटीए के पक्ष में बहुत आगे बढ़कर समझौते करने को आतुर है.

फ्री ट्रेड एग्रीमेंट का इस्तेमाल देशों के बीच व्यापार को सरल बनाने के लिए किया जाता है. एफटीए के अंतर्गत दो देशों के बीच आयात-निर्यात के उत्पादों पर सीमा शुल्क, नियामक कानून, सब्सिडी और कोटा आदि को सरल बनाया जाता है. इसका

एक बड़ा लाभ यह होता है कि जिन दो देशों के बीच यह समझौता होता है, उनकी उत्पादन लागत, बाकी देशों के मुकाबले सस्ती हो जाती है। इससे व्यापार बढ़ाने में मदद मिलती है और अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। वस्तुओं के मामले में एफटीए पर विश्व व्यापार संगठन के नियम कहते हैं कि जब भी एफटीए में सदस्य के रूप में एक या अधिक विकसित देश शामिल हों, तो सभी सदस्य देशों को उनके बीच व्यापार किए जाने वाले सभी उत्पादों पर शुल्कों और अन्य व्यापार प्रतिबंधों को समाप्त करना होगा।

इसका अर्थ है कि जब भी एक या एक से अधिक विकसित देश एफटीए के सदस्य होते हैं, तो एफटीए में आंशिक व्यापार वरीयताओं का आदान प्रदान प्रतिबंधित है। लगभग सभी ट्रेड्स को कवर किया जाना चाहिए और व्यापार बाधाओं को कम करने के बजाय समाप्त किया जाना चाहिए। एफटीए, प्रत्येक देश द्वारा आयात की विशाल मेजॉरिटी पर तत्काल टैरिफ कटौती और उनके अंतिम उन्मूलन का प्रावधान करता है। जब दो देश एफटीए में शामिल होते हैं तो दोनों देशों के खरीदारों को शुल्क मुक्त आयात का फायदा मिलता है। इससे उत्पादकों की लागत में कमी आती है और प्रतिस्पर्धा में सुधार होता है। उपभोक्ताओं को कम कीमतों का सीधा लाभ मिलता है। सेवाओं में एफटीए वित्तीय सेवाओं, दूरसंचार और पेशेवर सेवाओं जैसे क्षेत्रों को शामिल करता है।

अगर एफटीए सदस्य सभी विकासशील देश हों तो नियम काफी ढीले होते हैं। ऐसे में सदस्य देश व्यापार बाधाओं को पूरी तरह से समाप्त करने के बजाय केवल कम करने का विकल्प चुन सकते हैं और अपनी पसंद के अनुसार कम या अधिक उत्पादों पर कटौती लागू कर सकते हैं। भारत-जापान एफटीए को छोड़ दें तो भारत के सभी एफटीए अन्य विकासशील देशों (2005 में सिंगापुर, 2010 में दक्षिण कोरिया, 2010 में आसियान, 2011 में मलेशिया और 2022 में यूई) के साथ हैं। नतीजतन उन सभी में आंशिक व्यापार प्राथमिकताएँ शामिल हैं, जिसमें उत्पादों का एक बड़ा हिस्सा उदारीकरण से पूरी तरह से बाहर रखा गया है। भारत के और भी अनेक



समझौते हैं जैसे क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी आरईसीपी, सीईसीपीए, एसएफटीए, एपीटीए इत्यादि.

2 अप्रैल को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (ईसीटीए) पर हस्ताक्षर किए गए थे. यह दोनों देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं दोनों में एक मुक्त व्यापार समझौता स्थापित करता है. भारत एवं ऑस्ट्रेलिया के बीच 20 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार है. इस समझौते के बाद इसके कई गुना बढ़ने की उम्मीद है. इससे दोनों देशों के लिए कई नए क्षेत्र खुलेंगे. ऑस्ट्रेलिया पहला महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार है जिसके साथ भारत ने वास्तविक मुक्त व्यापार संबंध स्थापित किया है. वर्तमान द्विपक्षीय व्यापार संतुलन, व्यापक अंतर से ऑस्ट्रेलिया के पक्ष में है. भारत व ऑस्ट्रेलिया के बीच एफटीए के पूरी तरह लागू होने के बाद ऑस्ट्रेलिया को भारत का 96 फीसदी निर्यात और भारत को ऑस्ट्रेलिया का 85 फ्रीसदी निर्यात ड्यूटी फ्री स्टेटस प्राप्त कर लेगा.

ऑस्ट्रेलिया से भारत को अब तक सबसे ज्यादा निर्यात होने वाले मोती, सोना, तांबा अयस्क, एल्यूमीनियम, शराब, फल और मेवे, कपास, ऊन और कोयला है. वहीं भारत से ऑस्ट्रेलिया में प्रमुख रूप से पेट्रोलियम उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, विद्युत मशीनरी, लोहे और स्टील से बने आर्टिकल्स, वस्त्र और परिधान जाते हैं. भारत के 6,000 से अधिक उत्पादों को ऑस्ट्रेलिया में जल्द बाजार मिलेगा. ऑस्ट्रेलियाई संसद ने भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को मंजूरी दे दी. अब दोनों देश आपसी सहमति से फैसला करेंगे कि यह समझौता किस तारीख से लागू होगा. ऑस्ट्रेलिया के पीएम ने एक ट्वीट में यह जानकारी दी. केंद्रीय वाणिज्य मंत्री ने भारत ऑस्ट्रेलिया के ऐतिहासिक एफटीए पर संवाददाता सम्मेलन में संबोधन

में कहा कि ऐतिहासिक भारत ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग एवं व्यापार समझौते के तहत ऑस्ट्रेलिया द्वारा 100 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर शुल्क समाप्त किए जाएंगे. उन्होंने कहा कि ईसीटीए अर्थव्यवस्था के कई सेक्टरों को, विशेष रूप से कपड़ा, रत्न एवं आभूषण तथा फार्मास्यूटिकल्स को अत्यधिक बढ़ावा देगा. उल्लेखनीय है कि



ईसीटीए के परिणामस्वरूप 10 लाख से अधिक रोजगारों के सृजन की उम्मीद है. उन्होंने कहा कि इस समझौते से भारत में सेवा क्षेत्र के लिए भी नए अवसर खुलने की उम्मीद है और इससे छात्रों को प्रचुर लाभ मिलेगा जिन्हें ऑस्ट्रेलिया में काम करने का अवसर प्राप्त होगा. भारत के योग गुरुओं तथा शेफ के लिए 1800 का वार्षिक वीजा कोटा स्थापित किया जाना है. भारत के निर्यातों के लगभग 96 प्रतिशत कच्चे माल तथा इंटरमीडिएट उत्पाद होते हैं जो कई भारतीय उद्योगों को सस्ता कच्चा माल प्राप्त करने में सक्षम करेगा तथा उन्हें प्रतिस्पर्धी बनाएगा.

साथियों निवेशों से उन्नत प्रौद्योगिकी के उच्चतर मूल्य उत्पादों की उपस्थिति बढ़ने में सहायता प्राप्त होगी जिससे मूल्य श्रृंखला ( इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स तथा मेडिकल उपकरण ) में वर्टिकल मूवमेंट को बढ़ावा मिलेगा. फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र में एक अन्य प्रमुख लाभ होगा जहाँ अन्य विकसित अधिकार क्षेत्र में स्वीकृत औषधियों को पेटेंटिकृत, जेनेरिक तथा बायोसिमिलर दवाओं के लिए त्वरित गति से स्वीकृति प्राप्त होगी. ऑस्ट्रेलिया भारत का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है और दोनों ही चार देशों के क्वाड, त्रिपक्षीय आपूर्ति श्रृंखला पहल तथा भारत-प्रशांत आर्थिक फोरम ( आईपीईएफ ) के हिस्से हैं. ईसीटीए के तहत सुविधा प्राप्त व्यापार संबंध साझा हितों तथा व्यापार सहयोगों के साथ दो जीवंत अर्थव्यवस्थाओं के बीच भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापकआर्थिक साझेदारी पर एक नए अध्याय की शुरुआत करेगा. कुल मिला कर, व्यापक भारत ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए पहले से ही दोनों देशों के बीच गहरे, घनिष्ठ तथा रणनीतिक संबंधों को और सुदृढ़ बनाएगा तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि करेगा, रोजगार के नए अवसरों का सृजन करेगा, जीवन स्तर को बढ़ाएगा तथा दोनों देशों के लोगों के सामान्य कल्याण में सुधार लाएगा.

\*\*\*\*\*

## माँ

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



हे माँ ! मुझको पंख लगा दे,  
मैं पंछी बन जाऊँ.  
दूर गगन के ऊपर जाकर,  
तोड़ के तारें लाऊँ.  
दूर गांव की गलियों में,  
उन तारों को सजाऊँ.  
पसरा हुआ जो अंधकार है,  
झट से दूर भगाऊँ.  
भय ग्रस्त जन जीवन को मैं  
खुशियों की झलक दिखाऊँ.  
हे माँ! मुझको पंख लगा दे.

\*\*\*\*\*

## हिम्मत-ए-मर्दा मदद-ए-खुदा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



वर्ष 1971 में आई हिंदी फीचर फिल्म, कभी धूप कभी छाँव का कवि प्रदीप द्वारा लिखा और गाया गीत, \*सुख दुख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गाँव, कभी धूप तो कभी छाँव, ऊपर वाला पासा फेंके नीचे चलते दाँव, भले भी दिन आते, जगत में बुरे भी दिन आते. इस गीत की एक-एक पंक्ति नौजवानों को गंभीरता से पढ़ना और सुनना चाहिए.

सकारात्मक परिस्थितियों में तो हर व्यक्ति जीवन जीने को आतुर रहता है, परंतु सृष्टि का यह नियम है कि हमेशा ऐसा नहीं होता, जीवन का चक्र घूमता रहता है. यदि आज सकारात्मक परिस्थितियाँ हैं तो कल नकारात्मक परिस्थितियाँ भी आनी ही हैं! जिनसे हमें मुकाबला कर आगे बढ़ना है और परिस्थितियों से निपट कर सफलता के झंडे गाड़कर इतिहास रचना है. जो खुद में स्थिर होते हैं, परिस्थितियों से लड़ते हैं, वही अपने जीवन में इतिहास रचते हैं. क्योंकि जब हम निर्भीकता से विपत्तियों का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध होंगे तब विपत्तियाँ दुम दबाकर भाग खड़ी होंगी.

अनुकूल परिस्थितियों में तो सभी अपने आप को सुदृढ़ और सुलझा हुआ कहने लगते हैं परंतु असली व्यक्तित्व का पता तब चलता है जब विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिरता से मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बनाकर इतिहास रचते हैं. असल में हमें विपरीत परिस्थितियों में हिम्मत रखना और जिंदगी में जो भी परिस्थितियाँ हों उनका डटकर सामना करना हमारी जिंदगी में जो भी समस्या हो उन समस्याओं का हल निकालना



बेहतर है. किसी भी समस्या से भागना नहीं चाहिए विकट परिस्थितियों में जूझते रहेंगे तो समस्याओं का हल निकलता रहेगा. जो लोग समस्याओं से लड़ते हैं और उसका हल निकालते हैं और डरते नहीं है वही लोग महान हैं.

कहावत है कि मानव परिस्थितियों का दास होता है. मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए हमें सर्वप्रथम उन वजहों को समझने का प्रयास करना चाहिए जिनके चलते ये आई हैं. परिस्थितियों पर नजर रखते हुए धैर्य के साथ परिस्थितियों का सामना करने का प्रयास करना चाहिए जो परिस्थितियाँ हमारे बस में न हों उनके लिए अधिक चिंतित होने का कोई लाभ नहीं. वे समय के साथ खुद ब खुद सामान्य हो जाएँगी. हर हालत में धैर्यवान बने रहकर समय पर विश्वास करना चाहिए. समय से बलवान कोई नहीं . चाहे कितनी भी मुश्किल परिस्थिति हो समय बीतने के साथ-साथ मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों को बदलकर सामान्य होते देर नहीं लगतीं. कितनी भी गहन अंधकार वाली रात्रि हो, सूर्योदय अवश्यभावी है.

कौन सी परिस्थिति कब मनुष्य को क्या करने पर विवश कर दे, वह स्वयं नहीं जानता क्योंकि परिस्थितियाँ मनुष्य के सामने दूसरा विकल्प छोड़ती ही नहीं. परंतु यदि हम स्वयं को संतुलित रखें तो हम परिस्थितियों को संभालना भी आ ही जाता है. बुरी से बुरी परिस्थितियाँ भी मनुष्य के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो सकती है. यदि वह उस परिस्थिति को हैंडल करना जानता हों यह बहुत कठिन काम होता है क्योंकि एक दिन में तो कोई भी व्यक्ति यह सीख नहीं सकता .कुछ परिस्थितियों को जहाँ पर हम सिर्फ कमजोर पड़ते हैं उनको तो हम हरा ही सकते हैं, हर परिस्थिति का सामना करने के लिए मनुष्य को मानसिक मजबूती चाहिए और संतुलित विचारधारा चाहिए, साथ ही साथ उसका मानसिक पोषण ऐसा होना चाहिए कि हर परिस्थिति को देखने का एक सकारात्मक दृष्टिकोण हो. तभी वह किसी भी परिस्थिति का सामना करने में बिल्कुल भी घबराएगा नहीं, क्योंकि जो होना है वह तो होकर ही रहेगा परंतु उससे बाहर आने के लिए वह व्यक्ति कभी गुम नहीं होगा बल्कि उन परिस्थितियों को फिर किसी के जीवन में ना आए इस पर काम करेगा, यही तो है मनुष्य की ताकत कि अगर वह चाह ले तो उसे कोई परास्त नहीं कर सकता.

वह नियति हो या फिर परिस्थिति कोई फर्क नहीं पड़ता. जिस तरह हम अच्छे वक्त को संभालना जानते हैं, उसी तरीके से हमें बुरे वक्त को भी संभालना सीखना चाहिए किस तरीके से हम इनको संभाले कि यह परिस्थितियाँ कभी भी हमें तोड़ न पाएँ. यदि टूट कर बिखर भी जाएँ तो स्वयं को जोड़कर पुनः खड़ा होने की हिम्मत अपने अंदर रखनी चाहिए. जीवन से ज्यादा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होता परंतु अक्सर देखा जाता है कि इंसान छोटी-छोटी बातों को लेकर भी आत्महत्या कर लेता है. इन सब से निपटने के लिए हमें स्वयं को मानसिक रूप से सबल बनाना होता है. जब भी हम अपने जीवन में कमजोर होते हैं, चाहे वह कमजोरी शारीरिक हो आर्थिक हो या मानसिक हो, उस वक्त हमारा मन दुर्बल होता है तथा हम परिस्थितियों से संघर्ष करने में कमजोर होते हैं.

जीवन एक संग्राम है. इसमें वही व्यक्ति विजय प्राप्त कर सकता है, जो या तो परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढाल लेता है या जो अपने पुरुषार्थ के बल पर परिस्थिति को बदल देता है. हम इन दोनों में से किसी भी एक मार्ग का या समयानुसार दोनों मार्गों का उपयोग कर जीवन-संग्राम में विजयी हो सकते हैं. परिस्थितियाँ बनती-बिगड़ती रहती है. ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से कभी न घबराएँ. उनके साथ ताल-मेल बिठाएँ और मन में धैर्य को स्थान दे. अपने अंदर करुणा, दया, प्रेम, आत्मीयता एवं सहानुभूति जैसे सद्गुणों का विकास करें. सात्विक विचारों के साथ-साथ सोच को सकारात्मक बनाएं, सत्कर्म को बढ़ावा दे. परिस्थितियाँ अपने आप अनुकूल बनती चली जाएगी. विकट परिस्थितियाँ हमारे संघर्ष को और पक्का करती हैं. स्वयं पर विश्वास रख कर आगे बढ़ें, हर समय आप रो नहीं सकते हैं. हमको परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करना होगा. धीरज, धर्म, मित्र, अरु नारी. आपत्तिकाल परखिए चारी॥

रामायण की इस चौपाई को ध्यान में रखते हुए हम आने वाली हर मुसीबत का निर्भीकता और दृढ़ता के साथ सामना कर सकते हैं. आप देखेंगे कि ज्यों ही हम विपत्तियों का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध होंगे, त्यों ही विपत्तियाँ दुम दबाकर भाग खड़ी होंगी, संकटों के सब बादल छूट जाएंगे और परिस्थिति निष्कण्टक होकर हमारे लिए अनुकूल हो जायगी.

\*\*\*\*\*



## काबिलियत से पहचान बनाएँ

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



हजारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति के बारे में कहा जाता है कि मानव की पहचान यहीं से हुई है, जो बंदरों से विकसित होते हुए मानव तक विकसित हुई और बौद्धिक क्षमता का विकास होता गया. मानव ने दुनिया को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा दिया है. रोबोट बना दिया जो पूरी तरह मानवीय कार्य करने में सक्षम है, यह मानव की बौद्धिक क्षमता का प्रमाण है. अगर हम इस तकनीकी मानव से हटकर मानव में गुणों, व्यक्तित्व का विकास करने पर ध्यान दें तो हर मानव अपने स्तर पर एक अनोखा इतिहास रच सकता है. मानवीय गुणों में सबसे महत्वपूर्ण गुण व्यक्तित्व है. हर मानव अपने आप को पहचानकर उसमें अपने आप को ढाले तो वह स्वयं इतिहास रच सकता है.

हर मानव की अभिलाषा रहती है कि मेरे बच्चे इतनी तरक्की करें कि मैं अपने बच्चों के नाम से पहचाना जाऊँ. इसके लिए हर व्यक्ति का एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि बच्चों के व्यक्तित्व को निखारें. हर बालक अनगढ़ पत्थर की तरह है जिसमें सुन्दर मूर्ति छिपी है, जिसे शिल्पी की आँख ही देख पाती है. वह उस पत्थर को तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल सकता है. मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है शिल्पी तो



बस उस अतिरिक्त पत्थर को जिसमें मूर्ति ढकी होती है, हटा देता है और सुन्दर मूर्ति प्रकट हो जाती है. माता-पिता शिक्षक और समाज बालक को इसी प्रकार सँवार कर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते हैं. अच्छे व्यक्तित्व निर्माण के नियम बच्चों में विकसित करना जरूरी है. इसलिए सबसे पहले बच्चों में समझदारी, धैर्य, उच्च विचार, गुस्से पर कंट्रोल सच्चाई पारदर्शिता को अपनाने की प्रेरणा दें ताकि वे खुद को पहचानें.

हर मनुष्य का अपना व्यक्तित्व होता है. वही मनुष्य की पहचान है. भीड़ में भी वह अपने निराले व्यक्तित्व के कारण पहचान लिया जाएगा. यही उसकी विशेषता है. प्रकृति का यह नियम है कि एक मनुष्य की आकृति दूसरे से भिन्न है. यह जन्मजात भेद आकृति तक ही सीमित नहीं है; उसके स्वभाव, संस्कार और उसकी प्रवृत्तियों में भी विशिष्टता रहती है. व्यक्तित्व-विकास में वंशानुक्रम तथा परिवेश दो प्रधान तत्त्व हैं. वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है. परिवेश उसे इन शक्तियों की सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है. बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है. ज्यों-ज्यों बालक विकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है, जिसमें वह बड़ा होता है और उस व्यक्ति के गुण ही गहरी छाप छोड़ते हैं.

सब बच्चे अलग-अलग परिस्थितियों में रहते हैं. उन परिस्थितियों के प्रति मनोभाव बनाने में भिन्न-भिन्न चरित्रों वाले माता-पिता से बहुत कुछ सीखते हैं. अपने अध्यापकों से या संगी-साथियों से भी सीखते हैं. किन्तु जो कुछ वे देखते हैं या सुनते हैं, सभी कुछ ग्रहण नहीं कर सकते. ग्रहण करने से पूर्व उन्हें चुनाव करना होता है. स्वयं निर्णय करना होता है कि कौन-से गुण ग्राह्य हैं और कौन-से त्याज्य. यही चुनाव का अधिकार बच्चे को भी आत्मनिर्णय का अधिकार देता है. प्रत्येक मनुष्य के मन में एक ही घटना के प्रति भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया होती है. एक साथ रहने वाले बहुत-से युवक एक-सी परिस्थितियों में से गुजरते हैं, किन्तु उन परिस्थितियों को प्रत्येक युवक भिन्न दृष्टि से देखता है, उसके मन में अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ होती हैं. यही प्रतिक्रियाएँ जीवन के प्रति दृष्टिकोण बनाने में सहायक होती हैं. हम अपने मालिक

आप हैं, अपना चरित्र स्वयं बनाते हैं. ऐसा न हो तो जीवन में संघर्ष ही न हो, परिस्थितियाँ स्वयं हमारे चरित्र को बना दें, हमारा जीवन कठपुतली की तरह बाह्य घटनाओं का गुलाम हो जाए. सौभाग्य से ऐसा नहीं है. मनुष्य स्वयं अपना स्वामी है. अपना चरित्र वह स्वयं बनाता है. चरित्र-निर्माण के लिए उसे परिस्थितियों को अनुकूल या सबल बनाने की नहीं बल्कि आत्मनिर्णय की शक्ति को प्रयोग में लाने की आवश्यकता है.

हम व्यक्तित्व विकास में खुद की पहल को देखें तो, हमेशा अपने से कहें ! मैं कर सकता हूँ, ये मेरे लिए है. इससे जीवन में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है. साथ ही इससे आत्म सम्मान बढ़ता है और व्यक्तित्व में भी निखर आता है. अपने अच्छे व्यक्तित्व विकास का करने का एक और तरीका है अपनी दृष्टि में बदलाव लाना. दूसरों की बात को ध्यान से सुनें और अपने दिमाग से सोच-विचार कर अपना सुझाव या उत्तर दें. अपने फैसलों को खुद पूरा करें क्योंकि दूसरों के फैसलों पर चलना असफलता का कारण है. चाहे आपकी बातें हो या आपके कार्य, सभी जगह सकारात्मक सोच का होना अच्छे व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है. हमारे सोचने का तरीका यह तय करता है कि हम अपना कार्य किस प्रकार और किस हद तक पूरा कर सकेंगे. सकारात्मक विचारों से आत्मविश्वास बढ़ता है. जीवन में कई प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं परन्तु सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति हमेशा सही रास्ता ढूँढ लेता है.

भारत के पिछले 100 सालों के इतिहास को देखें तो देश में कई बड़ी महान हस्तियों ने जन्म लिया है, इनमें से कुछ हमें छोड़कर चले गए हैं तो कुछ को हम भूल से गये है. भारत को आजाद कराने में कई महान क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी, उस दौर में क्रांतिकारियों के अलावा भी कई ऐसे लोग थे जिन्होंने पूरी दुनिया में भारत का नाम रौशन किया था, लेकिन इन महान हस्तियों को हम आज शायद कुछ भूल चुके हैं. यहां हम कुछ ऐसे नामों की चर्चा करेंगे जिन्हें शायद अनेकों लोग ना जानते हो



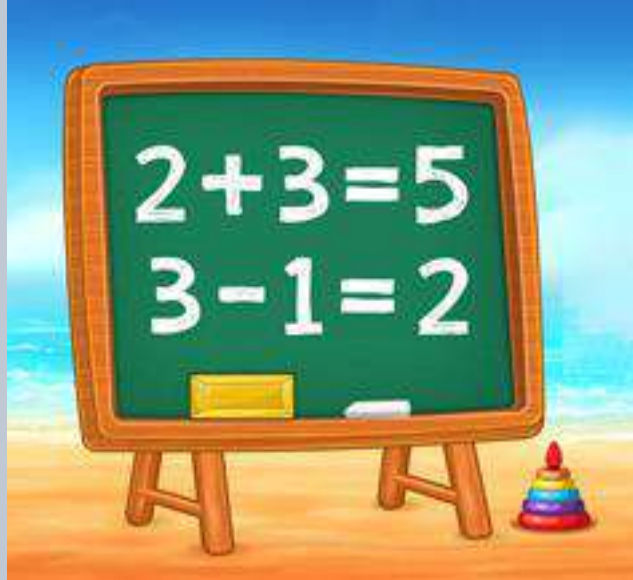
- 1) भारतीय शास्त्रीय संगीत की पहली 'संगीत साम्राज्ञी' भारतीय शास्त्रीय गायक केसरबाई केरकर ने सन 1938 में 'सुरश्री' (संगीत की रानी) का खिताब जीता था. सबसे खास बात केसरबाई के संगीत की गूंज अंतरिक्ष तक पहुँची थी.
- 2) सत्येंद्रनाथ टैगोर, लेखक, कवि, साहित्यकार, संगीतकार और समाज सुधारक के तौर पर जाने जाते हैं. सन 1864 में उन्होंने 'इंडियन सिविल सर्विस' जॉइन की थी, टैगोर को भारत के पहले आईएएस अधिकारी के तौर पर भी जाना जाता है. वे विश्वविख्यात कवि रविंद्रनाथ टैगोर के बड़े भाई थे.
- 3) (3) दुनिया भर में ह्यूमन कंप्यूटर के नाम से मशहूर शकुंतला देवी बड़ी से बड़ी संख्या को गुणा करके मिनटों में उसका हल निकलने के अपने कौशल के लिए दुनिया भर में मशहूर थीं.
- 4) भारत की पहली महिला चार्टर्ड एकाउंटेंट आर. शिवाभोगम भारत की पहली महिला चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में जानी जाती हैं.
- 5) क्वॉन्टम फ़िजिक्स की खोज करने वाले सत्येंद्र नाथ बोस को सन 1920 के दशक में क्वॉन्टम फिजिक्स में किए गए उनके शोध के लिए दुनिया भर में जाना जाता है.
- 6) टाटा की विरासत को पूरी दुनिया में फैलाना जमशेदपुर शहर का नाम रतन टाटा के पूर्वज जमशेदजी नसरवानजी टाटा के नाम पर रखा गया था.
- 7) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को मशहूर बनाने वाले उस्ताद बड़े गुलाम अली खान.
- 8) भारत की सबसे कम उम्र की महिला क्रांतिकारी सुनीति चौधरी को भारत की सबसे कम उम्र की महिला क्रांतिकारी के रूप में जाना जाता है.

\*\*\*\*\*



## सीखें गणित

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



गणित विषय से क्या घबराना.  
सीखें गणित को मित्र बनाना.

गणित विषय क्या नहीं पसंद,  
खोलें मन की खिड़की बंद.  
पढ़ें ध्यान से, सरल विषय है,  
सुंदर बनती जीवन - लय है.

प्रमुख चार प्रक्रियाएँ होतीं,  
गुणा, भाग, जोड़ना, घटाना.

क्रीड़ा, गीत, मनोरंजन में,  
गणित छिपी पकते व्यंजन में,  
गायन, कला, नृत्य, संगीत,  
कंप्यूटर में अंक पुनीत,

जीवन का आधार गणित है,  
वैज्ञानिकों ने भी माना.

पढ़ें समझकर, रटें न इसको,  
अभिरुचि से डर लगता जिसको,  
एक - एक पग आगे बढ़कर,  
विशेषज्ञ बन जाएँ पढ़कर.

जानकारियाँ विकसित होतीं,  
तर्कशक्ति का मिले खजाना.

प्रश्नावलियाँ स्वयं करें हल,  
सूत्र - नियम का लेकर संबल,  
दूर करें अपनी जिज्ञासा,  
उदाहरण से बँधती आशा.

कोई भी अभ्यास न छोड़ें,  
प्रतियोगिता में पदक है लाना.  
गणित विषय को मित्र बनाना.

\*\*\*\*\*



## किताबी शिक्षा बनाम व्यवहारिक शिक्षा

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



बौद्धिक ज्ञान के धनी मानव को जन्म से ही परिवार, समाज, मानवीय संपर्कों से व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान मिलना शुरू हो जाता है. जैसे-जैसे मनुष्य बाल्य काल से किशोर और फिर युवा होता है, वैसे-वैसे व्यवहारिक शिक्षा के माध्यम से उसकी बौद्धिक क्षमता परिपक्व होती जाती है और फिर स्कूल कॉलेज से लेकर अनेक डिग्रियाँ यानी किताबी ज्ञान भी वह पा लेता है. इस तरह हम देखते हैं कि, शिक्षा दो तरह की होती है. एक किताबी शिक्षा और दूसरी व्यवहारिक शिक्षा. अगर किताबी शिक्षा के साथ साथ व्याहारिक शिक्षा का ज्ञान नहीं है तो हम शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित की श्रेणी में आएँगे. और अगर शिक्षा के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी है तभी हम शिक्षित की श्रेणी में आएँगे.

कुछ वर्षों से हम देख रहे हैं कि कौशल विकास पर जोरदार तरीके से ध्यान दिया जा रहा है. केंद्र सरकार द्वारा अलग से कौशल विकास मंत्रालय का भी गठन किया गया है जो अनेक राज्यों में विभिन्न स्तरों पर कौशल विकास का जन जागरण अभियान चला रहा हैं. इसके लिए हुनर हाट सहित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है. इन सबका उद्देश्य हर नागरिक को नौकरी पाने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनाना है, जिससे बेरोजगारी की समस्या दूर होगी.

इसके विपरीत हम देखते हैं कि किताबी पढ़ाई वाली डिग्रियाँ जिसे हम पढ़ाई के खर्चे की रसीदें भी कह सकते हैं, प्राप्त करने के बाद भी इंटरनशिप या प्रैक्टिकल ट्रेनिंग लेना



जरूरी होता है. केवल डिग्री के बल पर हम अपने व्यवसाय की प्रैक्टिस नहीं कर सकते या किसी जॉब में शामिल होने के बाद भी उसकी ट्रेनिंग लेनी होती है. अक्सर देखा गया है कि बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त करने के बाद जब सेवा करने का मौका आता है तो अनेक लोग विदेशों में जाकर सेवाएँ प्रदान करते हैं और वहीं बस जाते हैं.

हम किताबी ज्ञान को देखें तो, परिभाषा के अनुसार जिसने किताबी ज्ञान अर्जित किया हो और स्कूल कॉलेज की परीक्षाओं को पास करके डिग्री हासिल की हो वो शिक्षित है, और जिसे अक्षर ज्ञान ना हो, वो किताबी अनपढ़.पर क्या शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान अर्जित करना ही है? एक शिक्षित इंसान के द्वारा फेंका हुआ कचरा, अगर सुबह एक किताबी अशिक्षित सफाई कर्मचारी उठाता है तो ऐसी स्थिति में किसे शिक्षित कहना चाहिए? आजकल की शिक्षा ऐसे ही रट्टा मारकर डिग्री लेने की शिक्षा होती जा रही है. जहाँ मतलब समझ आए या ना आए, बस रटो, लिखो और पास हो जाओ.

शायद इसीलिये किताबी पढ़े-लिखे अनपढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही है. पिछले कुछ दशकों में शिक्षा का प्रसार काफी बढ़ गया है पर शिक्षा की गुणवत्ता खत्म होती जा रही है.

जहाँ कुछ साल पहले ग्रेजुएशन ही काफी था, आज पोस्ट ग्रेजुएशन,क्या पीएचडी का भी कोई महत्व नहीं है. तकनीकी शिक्षा पर सारा जोर है. तकनीकी शिक्षा गलत नहीं है पर सिर्फ तकनीकी शिक्षा से काम नहीं चलेगा.

किताबी शिक्षित और किताबी अनपढ़ व्यक्तियों में बहुत अंतर है. किताबी अनपढ़ आदमी केलकुलेटर चलाना नहीं जानता पर सारा हिसाब किताब उँगलियों से कर लेता है पढ़ा-लिखा आदमी विना केलकुलेटर के चार में से दो घटाने के लिए भी अपनी उँगली नहीं घिसता. किताबी अनपढ़ व्यक्ति के पास अपने अनुभव के अतिरिक्त कुछ नहीं होता जबकि पढ़ा-लिखा व्यक्ति औरों के अनुभव भी अपने उपयोग में ले आता है. किताबी अनपढ़ व्यक्ति अधिक प्रैक्टिकल होता है. कहीं बाहर जाने पर पढ़ा-लिखा व्यक्ति आसानी से पता ढूँढ लेता है जबकि किताबी अनपढ़ को

परेशानी होती है. एक युग था जब समाज में किताबी अनपढ़ बहुत थे तो उनका कामकाज भी उसी तरह चलता था. आज किताबी अनपढ़ व्यक्ति को हर तरह की परेशानी उठानी पड़ती है. उसे पढ़े-लिखे लोगों पर आश्रित रहना पड़ता है.

व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान से परिपक्व व्यक्ति अपने कुल और माता पिता की विचारधारा पर चलकर संस्कारों का परिचय देते हैं. वहीं किताबी ज्ञान लेने वाले कुछ अपवादों को छोड़कर संस्कारों और विचारधारा में साफ फर्क दिखा देते हैं. उन्हें अपने कुल और मात-पिता की विचारधारा पुरानी और ढकोसला लगने लगती है. विवाहित होने पर वे सिर्फ अपने परिवार तक सीमित हो जाते हैं जबकि व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों में ऐसा नहीं है. यह हम जरूर कहेंगे कि किताबी ज्ञान वालों से अधिक ज्ञान समझ रखने वाले व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों के दोनों हाथों में मलाई होती है जिसे वे स्थिति अनुसार प्रयोग करते हैं. स्थिति बिगड़ी तो तुम तो पढ़े लिखे हो!! हम ठहरे अनपढ़, हमको क्या समझता है!! और परिस्थिति का हमारे तरफ झुकाव रहा तो, देखो तुम तो पढ़े लिखे हो!! तुम्हारी पढ़ाई लिखाई किस काम की? हम तो अनपढ़ ही अच्छे है.

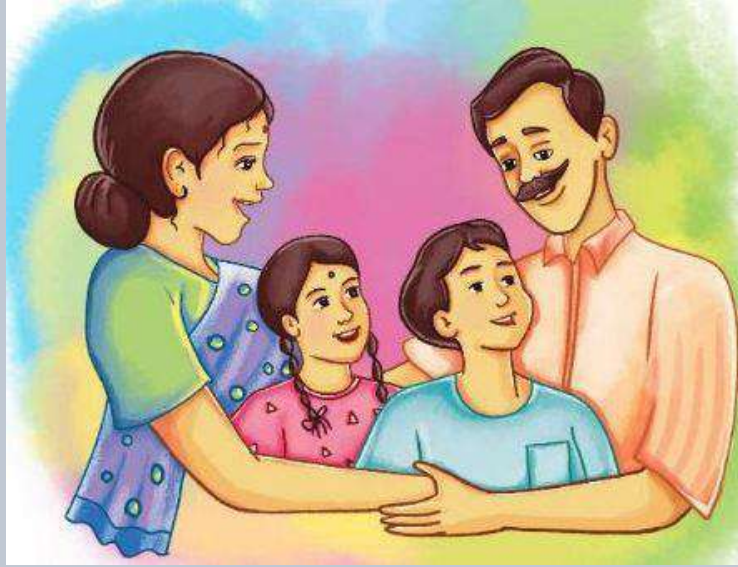
शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो हमारे मानवीय गुणों को भी विकसित करें। हमें संवेदनशील, सहनशील और व्यवहारिक के साथ-साथ देश और समाज के प्रति जागरूक भी बनाए. जैसे प्राचीन काल में गुरुकुल की शिक्षा होती थी. जहाँ ना सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान सिखाते थे बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यवहारिक और शस्त्र ज्ञान भी शिक्षा के साथ-साथ ही सिखाया जाता था. अगर अच्छी किताबी शिक्षा या व्यवहारिक शिक्षा होने के बावजूद भी हम दकियानुसी सोच रखते हैं. अपने घर को साफ रखते हैं, पर सड़क पर कचरा करते है. दूसरो की पर्सनल लाईफ़ पर कमेंट करते हैं तो हमारे शिक्षित होने का क्या अर्थ है? इसलिए व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान में परिपक्व व्यक्तित्व का किरदार अगर किताबी ज्ञान की डिग्रियाँ भी ले तो सोने पर सुहागा होगा.

\*\*\*\*\*



## मूलभूत साक्षरता में सामुदायिक जुड़ाव और माता-पिता की भागीदारी

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



चिंताजनक तथ्य है कि 2021 के मानव विकास सूचकांक; जो एक देश के स्वास्थ्य, औसत आय और शिक्षा का एक पैमाना है; में भारत 191 देशों में से 132वें स्थान पर है, मूलभूत साक्षरता और अंकज्ञान को मोटे तौर पर मूल पाठ पढ़ने और गणित की बुनियादी संक्रियाओं (जैसे जोड़ और घटाव) को हल करने की बच्चे की क्षमता के रूप में माना जाता है. मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख विषयों में से एक है.

बहुत अधिक सामाजिक पूंजी वाली पंचायतें और सामुदायिक समूह, जैसे कि महिला स्वयं सहायता समूह, यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि पहल स्थानीय परिवारों की हो. पंचायतें संसाधनों का लाभ उठा सकती हैं. समुदाय शिक्षकों को सक्षम और अनुशासित दोनों कर सकते हैं यदि धन, कार्य और पदाधिकारी उनकी जिम्मेदारी हैं. पंचायती राज, ग्रामीण और शहरी विकास मंत्रालय सामुदायिक जुड़ाव पर काम कर सकते हैं और सीखने के परिणामों को स्थानीय सरकारों की जिम्मेदारी बना सकते हैं.



ऐसे फंडों की देखरेख करने वाले समुदाय के साथ स्कूलों को विकेंद्रीकृत फंड प्रदान करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में सबसे अच्छा प्रारंभिक बिंदु है। अगर हम बदलाव लाना चाहते हैं तो शिक्षकों, शिक्षकों और प्रशासकों की भर्ती को प्राथमिकता बनाना होगा। केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों को यह सुनिश्चित करने के लिए शासन को बदलने की जरूरत है कि हर कोई अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करे।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्कूलों के लिए सीधे फंड हो, कोई शिक्षक रिक्तियाँ न हों, गैर-शिक्षकीय कार्य कम हों, और जवाबदेही के लिए एक जीवंत समुदाय और पंचायत कनेक्ट हो।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली, नीति निर्माताओं के साथ-साथ लोगों को "बुनियादी पहले और बाद में महत्वपूर्ण सोच" की इस गलत क्रमिक समझ को दूर करना चाहिए और एक नया दृष्टिकोण खोजना चाहिए जहाँ बुनियादी शिक्षा और महत्वपूर्ण सोच समानांतर चलती है।

बच्चों को परीक्षा पास करने के लिए मूलभूत साक्षरता और अंकज्ञान में महारत हासिल करने के लिए कई साल बिताने की जरूरत नहीं है, उन्हें समकालीन शैक्षिक लक्ष्यों जैसे महत्वपूर्ण सोच, जिज्ञासा या सशक्तीकरण को प्राप्त करने के लिए तैयार रहने की जरूरत है। जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान में अक्सर उच्च रिक्तियाँ, अपर्याप्त धन, और गंभीर बाधाएँ होती हैं जो उन्हें स्थानीय आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी कार्य करने से रोकती हैं।

एक शिक्षा प्रणाली के इस मुख्य कार्य के लिए एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र, पर्याप्त मानव संसाधन और उचित बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है। नीति निर्माताओं को शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए बजटीय आवंटन बढ़ाने पर भी विचार करना चाहिए और अपने मिशन में सुधार करना चाहिए ताकि बड़े हुए विवेक और एक सशक्त फैकल्टी को सुनिश्चित किया जा सके।

कई देशों में शिक्षा प्रणाली, सीखने की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के प्रयास में, वृद्धिशील, कौशल-आधारित तरीकों से पठन और गणित पढ़ाने से दूर हो गई है. सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण, जो सीखने को बच्चों की जीवित वास्तविकताओं के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास करता है, और महत्वपूर्ण गणित शिक्षा, जो गणित को दुनिया को गंभीर रूप से पढ़ने के लिए एक उपकरण के रूप में सिखाता है, दुनिया भर के स्कूलों द्वारा व्यापक रूप से मांगे जाने वाले कई दृष्टिकोणों में से हैं.

इन दृष्टिकोणों में एक पूर्वापेक्षा के बजाय समृद्ध, प्रासंगिक शिक्षा के भाग के रूप में बुनियादी पठन और गणित कौशल में महारत हासिल करना शामिल है. पूर्वस्कूली और कक्षा 3 के बीच का समय व्यक्तियों के लिए परिवर्तनकारी हो सकता है. यह पंचायत स्तर से लेकर प्रधानमंत्री तक सभी के लिए यह सुनिश्चित करने का समय है कि 2025 तक सभी बच्चे स्कूल में हैं और सीख रहे हैं. शिक्षार्थियों की एक पीढ़ी तैयार करने के लिए बुनियादी साक्षरता और अंक ज्ञान आवश्यक है जो भारत के लिए आर्थिक प्रगति की उच्च दर को सुरक्षित करेगा और मानव भलाई के लिए अब कार्रवाई का समय आ गया है.

\*\*\*\*\*



## बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



भारतीय संस्कृति और भारतीयों की आध्यात्मिकता में आस्था जग प्रसिद्ध है. माता पिता और बड़े बुजुर्गों का जितना सम्मान भारतीय संस्कृति में सदियों से हो रहा है, शायद दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलेगा. परंतु दुर्भाग्य से कहना पड़ रहा है कि माता-पिता बड़े बुजुर्गों के सम्मान की समृद्ध परंपरा विगत कुछ वर्षों से कम होती जा रही है. पाश्चात्य संस्कृति की छाया भारतीय समाज में बढ़ती जा रही है. आजकल माता-पिता अपने बच्चों को अपना पेट काटकर ऊँची शिक्षा दिलाकर डॉक्टर इंजीनियर सीए सहित अनेक उच्च मुकाम पर पहुँचा रहे हैं. परंतु कुछ अपवादों को छोड़कर नवयुवक अपने भविष्य, अपनी जिंदगी अपनी लाइफ स्टाइल के नाम पर बड़े शहरों, विदेशों में जॉब के नाम पर जाकर वही सेटल हो जाते हैं. अनेक युवा वहीं शादी कर लेते हैं तो कुछ शादी करके अपने परिवार सहित बड़े शहर या विदेश चले जाते हैं और बेचारे माँ-बाप अकेले रह जाते हैं. ऐसे अनेक सच्चे किस्से आम होते जा रहे हैं.

ऐसे युवक ऐसा बीज बो रहे हैं जो आगे चलकर उनके अपने बच्चों से इसी तरह के व्यवहार के रूप में फल पाएँगे.



हम लोग पूजा-पाठ बहुत करते हैं, लेकिन हमें सकारात्मक फल नहीं मिल पाता है. सिर्फ पूजा से जीवन में सुख शांति नहीं मिल सकती है. अपना आचरण भी अच्छा बनाए रखना जरूरी है. यदि लोग अपने माता-पिता का सम्मान नहीं करते हैं और सिर्फ पूजा-पाठ करते हैं, तो उन्हें सुख शांति नहीं मिल पाती है.

हमारे शास्त्रों में भी बुजुर्गों का सम्मान करने की राह दिखायी गई है. यजुर्वेद का मंत्र संतान को अपने माता-पिता की सेवा और उनका सम्मान करने की शिक्षा देता है-

यदापि पोष मातरं पुत्रः प्रभुदितो धयान्.

इतदगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां.

अर्थात् जिन माता-पिता ने अपने अथक प्रयत्नों से पाल पोसकर मुझे बड़ा किया है, अब मेरे बड़े होने पर जब वे अशक्त हो गये हैं तो वे 'जनक-जननी' किसी प्रकार से भी पीड़ित न हों, इस हेतु मैं उन की सेवा सत्कार से उन्हें संतुष्ट कर ऋण के भार से मुक्ति कर रहा हूँ.

आज सभी को यह समझने की जरूरत है कि वरिष्ठ नागरिक, वृद्धजन, बड़े बुजुर्ग हमारे समाज की अनमोल विरासत हैं, उन्होंने अपने समय में समाज और देश को बहुत कुछ दिया है. वे हमारी धरोहर हैं, अनुभवों का खजाना हैं जो किसी भी देश की उन्नति के लिए मूल्यवान मंत्र है. जिसका सही दिशा में उपयोग किया जाए तो देश को सामाजिक आर्थिक नैतिक संपन्नता पाने से कोई नहीं रोक सकता क्योंकि उनके अनुभवों के साथ उनका आशीर्वाद भी काम करता है. इसलिए हमें चाहिए कि बड़े बुजुर्गों के अनुभवों और सीख से हम जीवन में आई विपत्तियों से पार पाने में सक्षम हों. आओ वृद्धावस्था को सुखी बनाएँ-उनका आशीर्वाद लें.

बचपन से ही हमें शिक्षा दी जाती है कि हमें बड़ों का सम्मान करना चाहिए. वरिष्ठजन हमारे घर की नींव होते हैं. बुजुर्गों का आशीर्वाद बहुत भाग्य वालों को मिलता है इसलिए सभी को अपने से बड़ों का सम्मान करना चाहिए. अब हालात काफी बदल गए हैं. कई मामलों में वृद्धजनों को अपनी संतानों द्वारा मुश्किलें और दिक्कतें झेलते देखा गया है

एक पेड़ जितना ज्यादा बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है, याने वह उतना ही विनम्र और फल देने वाला होता है। यही बात समाज के उस वर्ग के साथ भी लागू होती है, जिसे आज की युवा तथा उच्च शिक्षित पीढ़ी बूढ़ा कहकर वृद्धाश्रम में छोड़ देती है। वह लोग भूल जाते हैं कि अनुभव का कोई दूसरा विकल्प दुनिया में है ही नहीं। जिस घर को बनाने में एक इंसान अपनी पूरी जिंदगी लगा देता है, वृद्ध होने के बाद उसे उसी घर में एक तुच्छ वस्तु समझ लिया जाता है। बड़े बूढ़ों के साथ यह व्यवहार देखकर लगता है जैसे हमारे संस्कार ही मर गए हैं। बुजुर्गों के साथ होने वाले अन्याय के पीछे एक मुख्य वजह सामाजिक प्रतिष्ठा मानी जाती है। सब जानते हैं कि आज हर इंसान समाज में खुद को बड़ा दिखाना चाहता है और दिखावे की आड़ में बुजुर्ग लोग उसे अपनी सुंदरता पर एक काला दाग दिखते हैं। बड़े घरों और अमीर लोगों की पार्टी में हाथ में छड़ी लिए और किसी के सहारे चलने वाले बुढ़ों को अधिक नहीं देखा जाता, क्योंकि वह इन बूढ़े लोगों को अपनी आलीशान पार्टी में शामिल करना शान के खिलाफ समझते हैं। यही रुढ़िवादी सोच उच्च वर्ग से मध्यम वर्ग की तरफ चली आती है। आज के समाज में मध्यम वर्ग में भी वृद्धों के प्रति स्नेह की भावना कम हो गई है।

बुजुर्ग अवस्था हर इंसान के जीवन का एक पड़ाव है। इस समय में व्यक्ति को प्यार सम्मान और अपनेपन की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है। जिन लोगों पर बुजुर्गों का साया होता है वे बहुत भाग्यशाली होते हैं। बुजुर्ग ही हमें जीवन जीने का सही मार्ग सिखाते हैं। उनके अनुभव और सीख से जीवन में हम किसी भी कठिनाई को पार करने में सक्षम होते हैं। इसलिए हमें कभी भी उनके प्रति उपेक्षा का भाव नहीं रखना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस को पूरी तरह से बुजुर्गों के लिए समर्पित किया जाता है। इस दिन उनके सम्मान में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वृद्धाश्रमों में बुजुर्गों की खुशी का ध्यान रखते हुए कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। इस दिन बुजुर्गों को होने वाली समस्याओं और उनकी सेहत के विषय में गंभीरता पूर्वक विचार किया जाता है।

\*\*\*\*\*

## सफलता की राह

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



सफलता की राह नुकीले कांटे से भरा,  
तू कर खुले पैरों से चुनौती का सामना.  
धरा रक्तरंजित हो जाए लोहित रक्त से,  
लक्ष्य हासिल करना हो अंतिम कामना.

सूरज के आंख में अपलक आंखें मिला,  
दृढ़ पर्वत के समान एक ठौर हो खड़ा.  
आंधी और तूफानों की तरह बढ़ आगे,  
आकाश से भी ऊंचा कद को कर बढ़ा.

बिहड़ दुर्गम पथ को कर्म से सुगम बना,  
ब्रह्म मुहूर्त में उठो, जागो सूर्य से पहले.  
अंधेरे रुपी डर का कर अकेला सामना,  
दिखाई देगा उम्मीद की किरण सुनहले.



धैर्य रखकर सही समय का इंतजार कर,  
तीव्र गति से अपने कदमों को बढ़ाते चल.  
मन में निश्चय, वचन में अडिग हो डटा रह,  
कर्ता प्रभु को मान सकर्मक बन निश्चल.

कामयाबी परमपिता परमात्मा के सदृश्य,  
लक्ष्य हासिल करने के लिए तपस्वी बन.  
निर्जन स्थल बैठ तन्मयता से ध्यान लगा,  
जीत का वरदान प्राप्त कर यशस्वी बन.

\*\*\*\*\*

## गुणकारी गुड़

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



अतिशय है गुणकारी गुड़.  
पौष्टिकता में भारी गुड़.

गुड़ की तुलना में, चीनी में  
खर्च कैलोरी पाँच गुना,  
चीनी तन को क्षति पहुँचाती  
कहा बड़ों का नहीं सुना,

कैल्शियम, फास्फोरस ज्यादा  
हड्डी हित हितकारी गुड़.

विटामिन ए, ई, डी समृद्ध है  
फैटी एसिड पाया जाता,  
घी के साथ मिलाकर खाएँ  
सुपर फूड - सा है भाता,

स्वास्थ्यप्रद प्राकृतिक मिठाई,  
बच्चों - बड़ों को प्यारी गुड़.

करती दूर कमी आयरन की  
तन में नव ऊर्जा जगाती,  
देती पाचन को मजबूती  
जोड़ों का भी दर्द मिटाती,

अच्छी सहज रक्तशोधक है  
दूर करे बीमारी गुड़.

गुड़ की पपड़ी, चिक्की, रेवड़ी  
देती है मनमोहक स्वाद,  
दूध में गुड़ को डाल पीजिए  
गुड़ की चाय रहेगी याद,

हलवा, पंजीरी, पुआ, गुलगुले  
व्यंजन की महतारी गुड़.

\*\*\*\*\*



## "मैं किसान हूँ"

रचनाकार- श्रीमती मंजू साहू, बेमेतरा



मैं किसान हूँ,  
प्रतिदिन करता हूँ मैं काम,  
सुबह से लेकर शाम,  
मेरे जीवन में कहाँ है, आराम.

मैं किसान हूँ,  
दुपहरी तपती जेठ में,  
करता हूँ खेतों की सफाई,  
पापी पेट का सवाल है भाई.

मैं किसान हूँ,  
सफाई, जुताई, बुवाई, निदाई,  
कटाई, मिजाई सब करता हूँ,  
दिन रात मेहनत मैं करता हूँ,  
तब जाकर, परिवार का पेट भरता हूँ,

मैं किसान हूँ,  
सुविधा नहीं है मेरे पास,  
गर्मी हो, चाहे बरसात,  
ठिठुरती ठंड को भी देता हूँ मात.

मैं किसान हूँ,  
जिम्मेदारी है, मेरे कंधो पर,  
कोई भूखा ना सोए,  
क्या हुआ, भूख से मेरे बच्चे रोए.

मैं किसान हूँ,  
मैं अन्न उगाता हूँ,  
तब जाकर दो पैसे कमाता हूँ,  
मैं खुद भूखा रहता हूँ पर,  
करोड़ों लोगों के भोजन का इंतजाम कर पाता हूँ,  
मैं किसान हूँ,  
मेरे पास तो हल है,  
कहां मेरे भाग्य में महल है,

मैं किसान हूँ,  
जो आराम करते हैं,  
वो शान से महलों में रहते हैं.

मैं किसान हूँ,  
कोई तो सुन ले मेरा,  
मेरे जीवन में न रहे अंधेरा,

मिले मुझे उचित सम्मान,  
तभी होगा मेरा भारत महान.

मैं किसान हूँ,  
मैं नारा बनकर न रह जाऊँ,  
जय जवान जय किसान,  
बढ़ता रहे उनका मान,

\*\*\*\*\*



## सोना समझ गयी

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद



"मैं बहुत थक गयी हूँ. अब एक कदम भी नहीं चला जाता है मुझसे. सुबह से शाम तक बस; सिर्फ काम ही काम. सुनिए जी, आज मैं घर पर ही रहूँगी. आप जाइये काम पर." नन्हीं चींटी सोना ने अपने पति डंबू से कहा.

डंबू ने सोना को चिढ़ाते हुए कहा - "ओह ! तो आज मेरी सोना थक गई है. आराम फरमाएंगी. अच्छा...!"

डंबू की बात से सोना तमतमा गयी. कहने लगी- "मैं आपसे ज्यादा वजनदार सामान उठाती हूँ, लेकिन आज थोड़ी थकान महसूस हो रही." डंबू ने कहा- "ठीक है, आज तुम आराम कर लो. कल साथ में चलेंगे." सोना ने मुस्कुराते हुए कहा- "लो आप जाइए." डंबू काम पर चला गया.

दिन भर डंबू काम करता रहा. शाम को घर वापस आया. खाने का कुछ सामान ले आया था. घर के अंदर रखा. सोना से कहा - "सोना ! तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

सोना सेब के टुकड़े को चबाते हुए मजे से बोली- "मैं बिल्कुल अच्छी हूँ. भली चंगी हूँ."

सोना घर में रहने का बहुत आनंद ले रही थी. डंबू को बात समझ आ गयी. उस समय उसने कुछ नहीं कहा. अगले दिन सुबह डंबू ने सोना से भोजन की व्यवस्था के लिए अपने साथ चलने की बात कही. सोना फिर बहाना मारने लगी. लेकिन डंबू अच्छी तरह समझ गया. सोना को समझाते हुए कहा- "देखो सोना, मुझे पता है कि तुम काम पर नहीं जाना नहीं चाहती. क्यों कर रही हो ऐसा ?"

डंबू का मुँह ताकती हुई सोना उसकी बातें सुन रही थी- "हम चींटियाँ हैं. हम घर पर बैठ कर आराम नहीं कर सकते. बहाना तो इंसान बनाते हैं; हम चींटियाँ नहीं. जब तक मेहनत नहीं करेंगे, भला हमें भोजन कैसे और कहाँ से मिलेगा ?" तभी बीच में ही सोना का कहना हुआ - "हाँ, तुम सही कह रहे हो. जीवन में मेहनत जरूरी है."

डंबू बोला - "हाँ बिल्कुल. अब सर्दी का मौसम आ रहा है. भोजन ढूँढना मुश्किल होगा. इस बात को समझो. चींटियाँ कभी हार नहीं मानतीं. जब कोई इंसान कमजोर पड़ने लगता है तो हम से ही मेहनत करने की सीख लेता है कि एक छोटा-सा जीव जब हार नहीं मानता है तो हम क्यों हार माने? इंसानों को हमारी मेहनत, एकता और साहस ही मजबूत बनाता है. धरती में सबसे ज्यादा मेहनतकश प्राणी के रूप हमारी गिनती होती है. तुम ऐसे कमजोर नहीं पड़ सकती." सोना को डंबू की बातें समझ में आ गयी. उसे अपनी गलती का एहसास हुआ. फिर डंबू और सोना दोनों भोजन की तलाश में निकल पड़े.

\*\*\*\*\*

## माँ, मुझको पंख लगा दे

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



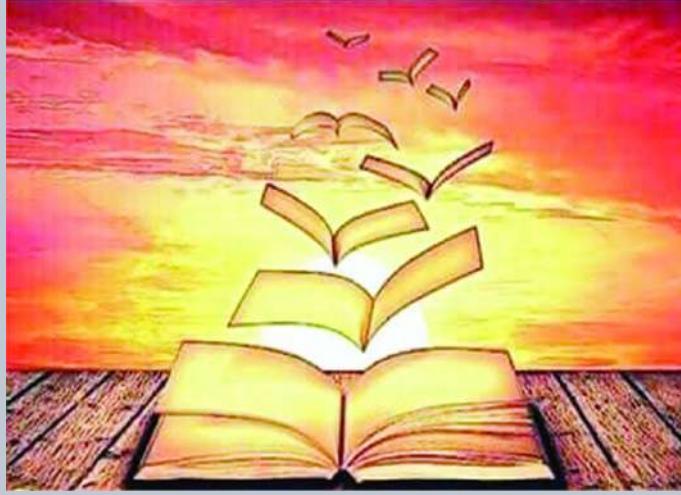
हे माँ ! मुझको पंख लगा दे,  
मैं पंछी बन जाऊँ.  
दूर गगन के ऊपर जाकर,  
तोड़ के तारें लाऊँ.  
दूर गांव की गलियों में,  
उन तारों को सजाऊँ.  
पसरा हुआ जो अंधकार है,  
झट से दूर भगाऊँ.  
भय ग्रस्त जन जीवन को मैं  
खुशियों की झलक दिखाऊँ.  
हे माँ! मुझको पंख लगा दे.

\*\*\*\*\*



## कुण्डलिया अमित के

रचनाकार- कन्हैया साहू, भाटापारा



गुजिया, पिड़िया, अइरसा, कतरा, कुसली खीर.  
गुरतुर-नुनछुर खाव जी, धरके धोरिक धीर.  
धरके थोरिक धीर, सेवई, पपची, पकुआ.  
खाजा, रखियापाग, ठेठरी, खुरमी, हलुआ.  
अड़बड़ ईंखर सुवाद, बफौरी, गुलगुल भजिया.  
सोंहारी अउ रोंट, चिला, चौसेला गुजिया.

भाजी हमर प्रदेश के, हावय बड़ गुणकार.  
चना, चनौरी, खेंड़हा, चुनचुनिया, बोहार.  
चुनचुनिया, बोहार, चरौंटा, पालक, पटुआ.  
मेथी, मखना, चेंच, मछरिया, बरें, बथुआ.  
खरी, खोटनी, गोल, रहँय खाये बर राजी.  
अमित अमारी, लाल, गुमी, चौलाई भाजी.

चिक्कट चिखना खेड़हा, भाजी घलो मिठाय.  
उपजे बारी खेत मा, सस्ता साग कहाय.

सस्ता साग कहाय, पोठ सब खावँय सरपट.  
डारा पाना टोर, राँध ले मिँझरा झटपट.  
गुनव अमित के गोठ, तेलपरहा खा बिक्कट.  
गुरतुर गुनी गुदार, मही अमसुरहा चिक्कट.

\*\*\*\*\*

## बातें कुछ ज्ञान की

रचनाकार- अनिता मंदिलवार, अंबिकापुर सरगुजा



आओ बच्चों तुम्हें बताएँ  
बातें कुछ ज्ञान की.  
बल्ब की खोज एडीसन ने की  
वही बने प्रकाश राज है.  
कंप्यूटर खोजा वेवेज ने  
कहलाते तकनीकी सम्राट हैं.

तस्वीरों में देखो तुम  
गौरव और अभिमान की  
आओ बच्चों तुम्हें बताएँ  
बातें कुछ ज्ञान की.

बॉयल, चार्ल्स ने शोध किया  
ताप दाब संबंधों पर.  
सारा जीवन अर्पित कर दी  
खोजो और प्रयोगों पर.



प्रोटॉन की खोज गोल्डस्टीन ने  
नाम रखा इसका रदरफोर्ड ने.  
इलेक्ट्रॉन को खोजे थॉमसन,  
न्यूट्रॉन को चैडविक ने.

जानो और पहचानो तुम  
गौरव और अभिमान की  
आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ  
बातें कुछ ज्ञान की.

मिट्टी जो उपजाऊ बनाता  
वोहलर का वो यूरिया था  
उगल रही कण-कण से  
बंजर भूमि का सोना था  
मुट्ठी में ब्रह्मांड समाया  
टेलिस्कोप नाम था  
खोज का श्रेय था मिला  
गैलीलियो का ही काम था

सुनो और सुनाओ तुम  
गौरव और अभिमान की  
आओ बच्चों तुम्हें बताएँ  
बातें कुछ ज्ञान की.

\*\*\*\*\*

## नव वर्ष की शुभकामनाएँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा, बालोद



हम बच्चे एक स्वर में गाएँ,  
नव वर्ष की शुभकामनाएँ.

जनवरी माह की,  
पहली तारीख.  
नित नया करने की,  
देती सीख.  
हम सीखें और सिखाएँ,  
नव वर्ष की शुभकामनाएँ.

पूरब की लाली में,  
नयी उमंगें आज.  
नदी-ताल के पानी में,  
सजी नयी तरंगें.  
हम अपनी हँसी बिखराएँ,  
नव वर्ष की शुभकामनाएँ.

देखो चिड़ियों ने भी,  
गाया नव गीत.

हवाओं ने पेड़ों को,  
बनाया नव मीत.  
हम पंछी बन चहचहाएँ,  
नव वर्ष की शुभकामनाएँ.

हम बच्चे एक स्वर में गाएँ,  
नव वर्ष की शुभकामनाएँ.

\*\*\*\*\*



## आवव हमर गांव "भड़हा"

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा, रायपुर



अल सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से जाग जाता है गांव. छप्पर उनसे उठते धुंए,  
रसोई की चुगली करते हैं. पक्के छप्परों के ऊपर भी यह रसोई का धुंआ डेहरी  
लांघता है. आंगन की रंगोली, बैठक में बाजवट, गौशाला में गाय, तीवरा, पटवा नवा  
चांऊर से कमकता है गांव.

सांझ के झुरमुट में गोधूलि बेला में गांव के पशुदलों के गले में बंधी घुंघरू, बछरू  
मन के के कलाचें सड़क पर उड़ते धूल

हर चेहरा श्रमतपा, श्रम की भट्टी में पगा. गांव. "भड़हा"

नए जमात शहर के विभिन्न पदों पर आसीन. त्योहारों में लौटते अपने घर भड़हा.  
ऐसा है ना भड़हा. रायपुर से 40 किलोमीटर दूरी पर स्थित है गांव. बड़ा  
सुंदर, उपजाऊ गुत्तुर बोली बोलने वालों का गांव. हर वर्ष धान बरौनी हो चाहे  
शिवरात्रि में गांव जाने का मौका मिलता है. कच्ची पक्की सड़कें मुख्य सड़क की  
गलबहियां डालें.

दो तालाब सड़क की राहगुजर, इनके दामन में कुमुदिनी टंके हुए और शांत मंदिरों की घंटियों की आवाज गांव को जगाता हुआ. पर्याप्त सुविधा हाई स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र और तो और फ्लोराइड मापक केंद्र. इस गांव की शान है. तरकारी साग, भाजी झमाझम धान के उत्पादन, खरोरा के बाजार, चंदखुरी का पुलिस मुख्यालय, नहरों का जाल. माता कौशल्या के धाम इस गांव के एकदम पास है. खेतों के बीचो-बीच पगडंडियों से होते हुए जरहा, जरही नाम के नाग नागिन का मंदिर.

चंदखुरी कौशल्या मंदिर संग जरही जरहा,  
देखे बर आवव संगी हो हमर. गांव "भड़हा".\*\*\*\*\*

## कंप्यूटर दादा

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा, रायपुर छत्तीसगढ़



कंप्यूटर दादा कंप्यूटर दादा,  
रोज निभाते तुम अपना वादा.

पल में दुनिया घुमा लाते हो,  
हर जानकारी हमें दे जाते हो.

माउस तुम्हारा उछलता है खूब,  
की बोर्ड भी लिखता है बखूब.

बोर्ड तुम्हारा जगमग जगमग,  
सारी दुनिया है इसमें गडमड़.

बड़े काम के तुम कंप्यूटर दादा,  
समय बचाते हो लगभग आधा.

\*\*\*\*\*



## नया वर्ष दे

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



नया वर्ष दे सुख की खान  
पूर्ण हो मंगल अभियान

नव उमंग है  
नव तरंग है  
नई राह है  
नई चाह है

नव तकनीक बने वरदान

नया सवेरा  
दूर अँधेरा  
चिड़ियाँ चहकें  
उपवन महकें

मुखड़े पर छाए मुस्कान

ईश प्रार्थना

फले कामना  
मेलजोल हो  
मृदु किलोल हो

चहुँदिश गूँजे विजयी गान  
नया वर्ष दे सुख की खान

\*\*\*\*\*

## तिरंगा सबसे प्यारा

रचनाकार- श्री मती लक्ष्मी तिवारी, कोरबा



जग से न्यारा देश हमारा.  
और तिरंगा सबसे प्यारा.

शहीदों का पहचान तिरंगा.  
देश का अभिमान तिरंगा.

ले तिरंगा सब हाथ मे.  
बोलो जयभारती सब साथ मे.

जिसने लूटाई देश हित जवानी है.  
तिरंगा उन शहीदों की कहानी है.

अब तिरंगा को न झुकने देंगे.  
कभी भारत की लाज न लूटने देंगे.

\*\*\*\*\*



## मेरी मम्मी

रचनाकार- कु.आराध्या कुशवाहा, सूरजपुर



मेरी मम्मी, मेरी मम्मी,  
कितनी प्यारी मेरी मम्मी.  
हमको खाना खिलाती है,  
मुझको संग सुलाती हैं,  
हमको पास बैठ पढ़ती हैं.  
मेरी मम्मी कभी ना मारे,  
हमको मिठाई देती हैं,  
मेरी मम्मी कितनी अच्छी.

\*\*\*\*\*

## रजाई

रचनाकार- प्रीति श्रीवास, मुंगेली



ठंड ने जब हमें ठिठुराई आ गई.  
याद हमें रजाई आ गई  
माँ को हमने आवाज लगाई  
बोले माँ दो हमें रजाई  
दुबक के बैठे राहत आई  
गरमाहट ने ठंड भगाई  
रंग - बिरंगी सब के मन को भाये  
नरम - गरम हम सबकी रजाई.

\*\*\*\*\*



## नानक दुखिया सब संसार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र



भारत अपनी संस्कृति, सभ्यता, आध्यात्मिकता के लिए विश्व में प्रतिष्ठित है. हर भारतीय नागरिक में एक विशेषता है कि वह दुखों का सामना कर उनमें से सफलता का मार्ग निकाल लेता है. इसका उदाहरण हमने भयंकर कोविड-19 महामारी की त्रासदी में प्रत्यक्ष रूप से दिखाया हैं. भारत का वैक्सीनेशन अभियान आज 220 करोड़ के पार हो चुका है. हमारे यहाँ आध्यात्मिक स्तर पर भी लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है कि जीवन के हर बीते हुए दिन का धन्यवाद कीजिए क्योंकि यदि अच्छे दिन हमें खुशी देते हैं तो बुरे दिनों से लड़कर हमें सबक सीखने मिलता है और हम जीत हासिल करते हैं. दुनिया में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे कोई दुःख न हो. हर परिस्थिति में ईश्वर का धन्यवाद करते हुए ज़ज्बा और जुनून कायम रखना जरूरी है.

हम सभी के जीवन मे कभी न कभी ऐसा समय जरूर आता है जब हम दुःख से गुज़र रहे होते हैं. कभी किसी से बिछड़ने का दुःख, कभी कुछ हारने के दुःख, कभी किसी की याद का दुःख, कोई न कोई दुःख हम हमेशा झेल रहे होते हैं. कई बार तो हम परेशान भी हो जाते है और सोच में पड़ जाते हैं की आखिर सारे दुःख हमें ही क्यों मिलते हैं? समय कोई भी बुरा नहीं होता, पर मुश्किल अवश्य होता है. मुश्किल समय



की एक अच्छाई होती है कि वो हमें मजबूत बनाता है, लड़ना सिखाता है और पहले से अधिक साहसी बनाता है, हमें एक नया और चुनौतीपूर्ण उद्देश्य देता है. उद्देश्यहीन जीवन किसी को पसन्द नहीं होता है. मुश्किल समय ही हमें दुनिया में स्थापित करता है.

बुरे वक्त की सबसे बड़ी खासियत यह होती है कि यह अपनों का असली चेहरा स्पष्ट दिखा देता है. इस दौर में अपना बनने का अभिनय करने वाले गायब हो जाते हैं. बुरा वक्त इंसान को बेहतरीन सबक देता है. यह इंसान को अन्य किसी भी चीज की तुलना में अधिक सिखाता है. बुरे वक्त में न टूटने वाला इंसान बाद में बहुत मजबूत होकर उभरता है. वह संतुलित हो जाता है. जीवन की कठिन सच्चाइयाँ उसके व्यक्तित्व को निखार देती है. बुरे वक्त की आँच में तपा हुआ इंसान कभी भी झूठा अहंकार नहीं करता और यथासंभव जरूरतमंदों की मदद करता है.

जीवन की यही हकीकत है, कि जब दुःख और तकलीफें आती है, तब किसी भी इंसान को संभलने का मौका नहीं देती हैं. लेकिन एक बार जब दुःख और तकलीफों का मारा इंसान संभल जाता है. तब उसके सामने जीवन के किसी भी दुःख की कोई औकात ही नहीं रह जाती. जीवन में खुश रहना अथवा दुःखी रहना हमारे ही हाथों में होता है, क्योंकि हम अपने जीवन की जिस परिस्थिति को जैसा मान लेते हैं, वो परिस्थिति हमारे लिए वैसी ही हो जाती है, यदि हम अपने जीवन की किसी दुःख तकलीफ में खुद को अकेला महसूस करते हैं.

हम दुःखों के समय में जांबाज़ी ज़ब्बे और सफलता के जुनून को देखें तो, तब हमें हौसले के साथ उन मुश्किलों से यह कहना चाहिए, तू तो सिर्फ एक समस्या है जो हमारे जीवन में आई है. लेकिन जिसके जीवन में तू आई है, उस पूरे जीवन और पूरी जिंदगी पर केवल हमारा हक है. तुम्हे हमें दुःखी और परेशान करने का कोई हक बिलकुल नहीं है, इसी तरह की स्थिति तब होती है जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जीवन बिता रहे होते हैं और वो अचानक हमें छोड़कर चला जाता है. तब हमारे दुःख

की कोई सीमा नहीं होती है. यह छोटी सी जिंदगी हमें इस दुःख के जरिये बहुत बड़ा सबक सिखाती है.

कहा गया है कि

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः.  
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः.

जो धीर मनुष्य सुख-दुःखमें सम तथा अपने स्वरूप में स्थित रहता है, जो मिट्टी के ढेले, पत्थर और सोने में सम रहता है जो प्रिय-अप्रिय में तथा अपनी निन्दा-स्तुति में सम रहता है; जो मान-अपमान में तथा मित्र-शत्रु के पक्ष में सम रहता है जो सम्पूर्ण कर्मों के आरम्भ का त्यागी है, वह मनुष्य गुणातीत कहा जाता है.

एक पक्षी था जो रेगिस्तान में रहता था. बहुत बीमार , खाने पीने और रहने के लिए कोई आश्रय नहीं था. एक दिन एक कबूतर बीमार पक्षी के पास से गुजरा. तो बीमार पक्षी ने कबूतर से पूछा, तुम कहाँ जा रहे हो ? उसने उत्तर दिया मैं स्वर्ग जा रहा हूँ. ईश्वर की मुझ पर कृपा है. उन्होंने मुझे अपनी मर्जी से यहाँ आने जाने की छूट दे रखी है. तो बीमार पक्षी ने कहा कृपया मेरे लिए पता करें, कब मेरी पीड़ा समाप्त हो जाएगी?" कबूतर ने कहा, निश्चित, मैं करूँगा. कबूतर स्वर्ग पहुँचा और प्रवेश द्वार के प्रभारी से बीमार पक्षी का प्रश्न पूछा. देवदूत ने कहा, पक्षी को जीवन के अगले सात वर्षों तक इसी तरह से ही कष्ट का भुगतना पड़ेगा, तब तक कोई खुशी नहीं. कबूतर ने कहा, जब बीमार पक्षी यह सुनता है तो वह निराश हो जाएगा. क्या आप इसके लिए कोई उपाय बता सकते हैं. देवदूत ने उत्तर दिया, उसे इस वाक्य को हमेशा बोलने के लिए कहो. हे ईश्वर आपने जो कुछ भी दिया उन सबके लिए आपका धन्यवाद. बीमार पक्षी को कबूतर ने देवदूत का संदेश दिया. सात दिनों के बाद कबूतर फिर वहाँ से गुजरा तो उसने देखा कि पक्षी बहुत खुश था, उसके शरीर पर पंख उग आए थे. एक छोटा सा पौधा रेगिस्तानी इलाके में बड़ा हुआ, पानी का एक छोटा तालाब भी था, चिड़िया खुश होकर नाच रही थी. कबूतर चकित था. देवदूत ने कहा था कि अगले सात वर्षों तक पक्षी के लिए कोई खुशी नहीं होगी. इस सवाल को लेकर कबूतर,

देवदूत से मिलने गया और पूछा. देवदूत ने उत्तर दिया, हाँ, यह सच है कि पक्षी के लिए सात साल तक कोई खुशी नहीं थी लेकिन क्योंकि पक्षी हर स्थिति में सब कुछ के लिए भगवान का धन्यवाद कर रहा था, ईश्वर का आभार कर रहा था, इससे उसका जीवन बदल गया. एपीजे अब्दुल कलाम ने भी यह बात कही है कि हमेशा याद रखना बेहतरीन दिनों के लिए बुरे दिनों से लड़ना पड़ता है.

जब विघ्न सामने आते हैं,  
सोते से हमें जगाते हैं,  
मन को मरोड़ते हैं पल-पल,  
तन को झँझोरते हैं पल-पल.  
सत्पथ की ओर लगाकर ही,  
जाते हैं हमें जगाकर ही.

\*\*\*\*\*



## शिक्षक दिवस

रचनाकार- बिसे लाल, कोरिया छत्तीसगढ़



सुबह शाम जिसको गुरु का ध्यान होगा  
बड़ा भाग्यशाली वह इंसान होगा  
मनुष्य जन्म लिया है जग में  
कुछ तो पाने के लिए  
कभी क्यों ना सोचा मन में  
कैसे होगा बेड़ा पार मेरा  
तू तो माटी का लोंदा है  
गुरु के बिना, क्या तेरी औकात यहां  
सुख से जग में जीना चाहता है  
अगर दुखों से पाना है छुटकारा  
तो गुरु के शरण में चला जा प्यारें  
गुरु ही ब्रम्हा विष्णु महेश है  
सुबह शाम जिसको गुरु का ध्यान होगा  
बड़ा भाग्यशाली वह इंसान होगा.

गुरु के द्वार पै बिछी हुई है  
शांति की शय्या  
रंक से राजा बनें  
और ज्ञान रस में सनें  
गुरु के समझाने से ही.  
सीख गुरु की मान लें तू  
निज को आत्मज्ञान से जान ले तू  
गुरु है देव देव और नही कोई दूजा  
अगर कुछ पाना है दुनिया में तो  
गुरु के शरण में आजा प्यारे  
तू तो माटी का लोंदा है  
गुरु के बिना क्या तेरी औकात यहां  
सुबह शाम जिसको गुरु का ध्यान होगा  
बड़ा भाग्यशाली वह इंसान होगा.

\*\*\*\*\*

## राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस ( 2 दिसम्बर )

रचनाकार- प्रीति श्रीवास, मुंगेली



धूल- धुंए ने डाला डेरा,  
दिन मे रात सा घोर अंधेरा.  
घुट रहा दम , हवा मे विष भरा,  
ये कैसी विपदा ने घेरा.  
सूख गया नदी नहर हमारा,  
पानी को तरसे जग सारा.  
तरह-तरह की बीमारियो का छोरा,  
सबके घर लगाता फेरा.  
कोरोना का डर मन मे भरा,  
फिर भी इनसा सम्भल न रहा.  
रो-रो कर धरती ने पुकारा,  
बचाओ मुझे तुम्हारा ही है सहारा.  
इधर-उधर न फेको कचरा,  
साफ रखो दुनिया को सारा.



कटे न पेड़ , बचे जंगल सारा,  
फर्ज है ये, अब तुम्हारा.  
प्रकृति बचाएं , एक यही है सहारा,  
इसे न खोएं, न मिलेगी ये दोबारा.  
संभल जाओ, पर्यावरण को संवारो जरा  
तब होगा प्रदूषण मुक्त, स्वच्छ भारत हमारा.  
" प्रदूषण मिटाओ  
पर्यावरण को बचाओ"

\*\*\*\*\*

## नन्हें-मुन्नों की जिंदगी और हमारा नजरिया (बाल अधिकार)

रचनाकार- गोवर्धन दास बिन्नानी, बीकानेर



शिशु जन्म लेते ही सबका दुलारा बन जाता है. घर का वातावरण ही बदल जाता है. दादा, दादी अर्थात जो भी बड़े बुजुर्ग होते हैं वे बच्चे की जिन्दगी को सँवारने में प्रयासरत हो जाते हैं. परिवार के अनुभवी लोग बच्चे की जिम्मेदारी अपने पर ले लेते हैं.

हम सभी जानते हैं कि बाल्यावस्था में बालक अबोध होता है इसलिये सभी का दायित्व है कि उसका उचित लालन पालन हो, क्योंकि हर बालक को हंसी-खुशी, सुख सुविधाओं के साथ जीने का अधिकार है जिससे शिशु को वंचित नहीं रखा जाना चाहिये. यहाँ उचित लालन पालन का अर्थ है कि शुरू से ही खेल कूद के अलावा संस्कारों में भी उसका रूझान रहे. ऐसी ब्यवस्था अपनाएँ ताकि शुरू से ही वह गलत सही को समझने लगे.

यह भी आपका दायित्व है कि बालक आपसे आपकी पारिवारिक / क्षेत्रीय भाषा में बात करे जिससे परिवार के प्रति लगाव बढ़ता रहे.

उसे अच्छे संस्कार सिखाने वाली पाठशाला में दाखिला दिलायें ताकि अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ चरित्रवान भी बने.

उसकी रूचि जानने की हमेशा कोशिश करते रहें ताकि उसी अनुसार आप उसकी सही व्यवस्था कर पाएँ अर्थात अपनी रूचि उस पर न थोपें, उसकी रूचि के अनुरूप उसे वह सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ ताकि वह सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता रहे.

स्वस्थ रहने के लिये योग के साथ साथ खेल कूद की तरफ रूझान हो जाय - इसकी भी जिम्मेदारी हम ठीक ढँग से शुरू से ही निभा लें तो उचित रहता है.

शुरू से ही ऐसी प्रक्रिया अपनाएँ ताकि ज्यादा से ज्यादा भाषा लिखना, पढ़ना व समझने की ओर वह प्रेरित हो जिससे आगे जाकर वह आत्मविश्वास से अपनी ज़िन्दगी बिता पाये.

हाँ, यह आवश्यक है कि हम हमेशा इस बात का ध्यान रखें ताकि बच्चों को उपलब्ध कराई गयी सुख सुविधाएँ ही उनकी प्रगति और तरक्की के मार्ग में बाधक न बनने लगे.

यह हमारा दायित्व है कि बच्चों को इतना आत्मविश्वासी बना दें ताकि वे पूरे जोश और विश्वास के साथ जीवन की हर चुनौती का डट कर मुकाबला कर पायें.

उपरोक्त वर्णित बातों का सार यही है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा देश का एक जिम्मेदार नागरिक बनें, सुशील, संस्कारी, स्वाभिमानी व सभ्य बने तो सबसे पहले हमें अपना व्यवहार सभ्य एवं संतुलित बनाकर आदर्श प्रस्तुत करना होगा. परोपकार घर से ही शुरू होता है वाली कहावत अनुसार हमें अपना आचरण, व्यवहार प्रदर्शित करना होगा. जिससे बच्चा स्वयं सीखे और उसे यह हमेशा ध्यान रहे कि किसी भी प्रकार का गलत व्यवहार हमारे घरवाले बर्दाश्त नहीं करेंगे तभी वह गलत आचरण, व्यवहार से बचेगा. यदि ऐसा आप कर पाने में सफल हो पाते हैं तो निश्चय मानिये आपका बच्चा न केवल यश कमाएगा बल्कि आर्थिक रूप से भी सम्पन्न होगा. इस तरह की कामयाबी से उसका नाम तो उज्ज्वल होगा ही साथ ही साथ लोग आपके पालन-पोषण की भी तारीफ अवश्य करेंगे और आपको भी इन सबसे संतोष होगा, सुख, शांति, चैन मिलेगा .

\*\*\*\*\*



## बालगीत - जाड़ जनावत हावय दाई

रचनाकार- कन्हैया साहू, भाटापारा



जाड़ जनावत हावय दाई.  
अब निकाल तैं धरे रजाई.

सरर-सरर चलथे पुरवाही,  
लगै गजब सरदी उपराही,  
मातय मत कोनो करलाई.  
अब निकाल तैं धरे रजाई.

सेटर, कनचप्पी अउ कथरी,  
हेर धूँस, कंबल के गँठरी,  
देख दाँत के बड़ कटराई.  
अब निकाल तैं धरे रजाई.

छोट-छोट हम लइका तोरे,

जाड़ हमर तो जाँगर टोरे,  
मुँह ले कुहरा, नाक बहाई.  
अब निकाल तैं धरे रजाई.

जाड़ जनावत हावय दाई.  
अब निकाल तैं धरे रजाई.

\*\*\*\*\*

## रेखागणित की बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



1. बिंदु-बिंदु से बनती हूँ  
सीधे - तिरछा चलती हूँ  
मैं अनंत तक जा सकती  
चलकर कभी नहीं थकती

2. तीन भुजाएँ, कोने तीन  
कौन - सी आकृति, प्रश्न महीन

3. रहो घूमते चारों ओर  
जिसका मिलता ओर न छोर  
आकृति बनती बिल्कुल गोल  
क्या कहते, बच्चो! दो बोल



4. चार भुजाएँ, नाप समान  
नब्बे अंश हर कोण का मान  
घिरी आकृति देती ज्ञान  
नाम बताओ, लो पहचान

5. आमने-सामने भुजा समान  
बना चतुर्भुज, लो पहचान

6. दो रेखाएँ बढ़ती जातीं  
जिनके बीच समान है दूरी  
जैसे होतीं रेल पटरियाँ  
क्या कहलातीं, ध्यान जरूरी

7. आड़ी - तिरछी सी रेखाएँ  
कोई आकृति नहीं बनाएँ  
यों ही जहाँ - तहाँ दो खींच  
नाम बताओ, आँखें मीच

8. ज्यामिति के हैं जनक कहाते  
थे वे यूनानी गणितज्ञ

'एलीमेंट्स' ग्रंथ लिखा था  
नाम बताए, जो हो विज्ञ

उत्तर - 1 रेखा 2 त्रिभुज 3 वृत्त 4 वर्ग 5 आयत 6 समांतर रेखाएँ 7 तिर्यक रेखाएँ 8  
यूक्लिड

\*\*\*\*\*

## "पोषण का पावरहाउस" बाजरा

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



बाजरा का उपयोग छोटे दाने वाले अनाज जैसे कि ज्वार, बाजरा, छोटी बाजरा (कुटकी), फिंगर बाजरा (रागी/मंडुआ), आदि के लिए किया जाता है। बाजरा भारत में खरीफ की मुख्य फसल है। उसका उच्च पोषण मूल्य है। कृषि मंत्रालय ने बाजरा को "पोषक अनाज" घोषित किया है। वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष के रूप में मनाया जाएगा।

पौष्टिक भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। पोषण संबंधी असुरक्षा दुनिया की बड़ी जनसंख्या के लिए एक बड़ा खतरा है, जो अनाज आधारित आहार पर अत्यधिक निर्भर है और उनके आहार में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी है। बाजरा उत्पादन में वृद्धि और उत्पादक क्षेत्रों के निकट संगठित प्रसंस्करण केन्द्रों/हबों के माध्यम से आपूर्ति श्रृंखलाओं की स्थापना नहीं हुई है।

बाजरा गरीबी के खिलाफ लड़ाई की अपार क्षमता रखता है और भोजन, पोषण, चारा और आजीविका सुरक्षा प्रदान करता है। वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों में, बाजरे



की खेती 50% आदिवासी और ग्रामीण आबादी को आजीविका प्रदान करती है। भारत 41% बाजार हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है। यह अनुमान लगाया गया है कि बाजरा का बाजार 2025 तक 9 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक के अपने वर्तमान बाजार मूल्य से बढ़कर 12 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक होने के लिए तैयार है।

पारिस्थितिक तंत्र की बहाली और स्थिरता: भारत में भूमि क्षरण एक बड़ी समस्या रही है। रासायनिक आदानों पर कम निर्भरता वाली सूखा-सहिष्णु फसलें (जैसे बाजरा) पारिस्थितिक तंत्र पर बहुत कम दबाव डालेंगी। जैव ईंधन और जलवायु लचीलापन: बाजरा जैव-इथेनॉल उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में मक्का की तुलना में महत्वपूर्ण लागत लाभ प्रदान करता है। इनमें उच्च प्रकाश संश्लेषक क्षमता होती है। उनकी संभावित उपज उच्च कार्बन डाइऑक्साइड स्तरों से अप्रभावित है।

बाजरे की खेती से महिला सशक्तिकरण हुआ है। ओडिशा मिलेट मिशन ने देखा कि 7.2 मिलियन महिलाएँ 'कृषि-उद्यमी' के रूप में उभरी हैं। बाजरा कैल्शियम, प्रोटीन और आयरन जैसे मैक्रोन्यूट्रिएंट्स और सूक्ष्म पोषक तत्वों का एक समृद्ध स्रोत है। उसका कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स है जो टाइप 2 मधुमेह को रोकता है। यह हृदय रोगों, निम्न रक्तचाप को रोकने में मदद कर सकता है। उसे कम पानी की आवश्यकता होती है। यह आवश्यकता, गेहूँ और गन्ने की लगभग एक तिहाई है।

बाजरा की खेती को बढ़ावा देने से औसत किसान सशक्त होगा और आय बढ़ाने और फसल विविधीकरण में सुधार के उद्देश्यों को प्राप्त करेगा। कृषि व्यवसाय स्टार्टअप इनक्यूबेशन केंद्रों को बढ़ावा देने और उपभोक्ताओं के बीच बाजरा के लाभों के बारे में लोकप्रिय जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें बाजरा की खेती बढ़ानी है। बाजरे की खेती के तहत फसल क्षेत्र को बढ़ाने की जरूरत है। बाजरा पौष्टिक, जलवायु-लचीला, कठोर और शुष्क भूमि फसलें हैं, इसलिए उन्हें पोषक-अनाज के रूप में टैग किया जाता है, जो खाद्य और पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण

योगदान देता है. हाल ही में बाजरा ने अपनी गैर-ग्लूटेन प्रवृत्ति के कारण लोकप्रियता हासिल की है.

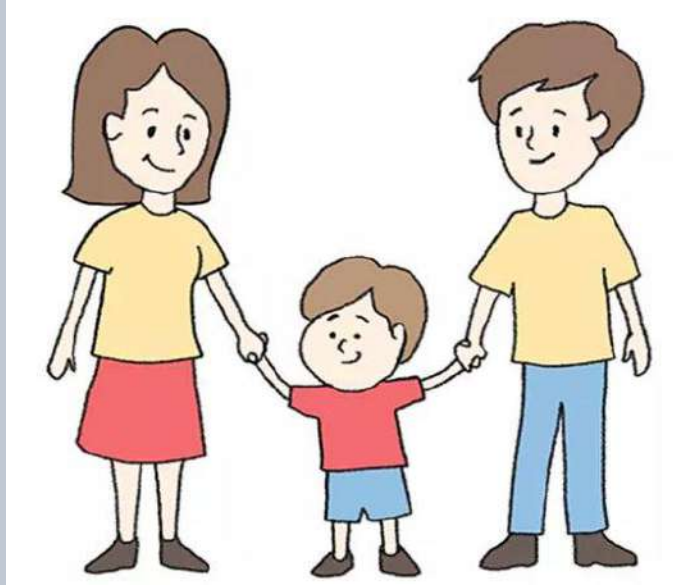
विश्व के कुल उत्पादन में लगभग 40% की हिस्सेदारी के साथ भारत बाजरा के उत्पादन में दुनिया में अग्रणी है. भारत सालाना लगभग 16 मिलियन मीट्रिक टन बाजरा का उत्पादन करता है. भारत बाजरा का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत से बाजरा निर्यात पिछले 3 वर्षों में लगातार 12% CAGR से बढ़ा है. बाजरा का बाजार अपने मौजूदा बाजार मूल्य \$9 बिलियन से बढ़कर 2025 तक \$12 बिलियन से अधिक होने के लिए तैयार है.

यह क्षेत्र उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, विपणन और खपत से संबंधित कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसने दुनिया भर में मुख्य खाद्य पदार्थों के रूप में बाजरा की वकालत करने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न की है. मुख्य धारा में शुष्क भूमि कृषि में बाजरा को पुनर्जीवित करना और खाद्य टोकरी में विविधता लाना भोजन को बनाए रखने, उपभोक्ताओं की पोषण सुरक्षा और ग्रामीण परिवारों की आजीविका सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है. इसे प्राप्त करने के लिए, प्रमुख चुनौतियां बाजरा आधारित प्रौद्योगिकियों को वितरित करना है जो टिकाऊ और बाजार उन्मुख हैं.

\*\*\*\*\*

## माँ बाप के कहना मान लव

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी



मया पीरित बर उमर परे हे  
जिनगी के रद्दा गढ़ेहे के हे  
जिनगी के रद्दा ल जान लव  
बाप के कहना तुम मान लव

पढ़ लिख के तुम सुजान बनव  
नवा बच्छर मे तुम धियान धरव  
पढ़ लिखके मान,सम्मान लव  
बाप के कहना तुम मान लव

ये बेरा ल येती ओती म गवाबो  
बेरा बिते रहि-रहि के पछताबो  
सुम्मत के बात गांठ बांध लव  
बाप के कहना तुम मान लव



जनम देके हमर नाम जगाइस  
दुनिया के हमला दरस कराइस  
माँ बाप के महिमा ल जान लव  
माँ बाप के कहना तुम मान लव

जग के ऊँच-नीच के भेद बताथे  
जग म कइसे जीना हे सीखलाथे  
मया पीरित उकर पहिचान लव  
माँ बाप के कहना तुम मान लव

\*\*\*\*\*

## प्रेम की अलख जगाते हैं

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी



आपस में अब भाईचारा  
दिलों का ना हो बंटवारा  
सब रहे सप्रेम से,  
ऐसी जुगत लगाते हैं  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते हैं

राष्ट्र बने समृद्ध हमारा  
श्रेष्ठ बने गणतंत्र हमारा  
राष्ट्रभक्ति की जन गण,  
में भाव जगाते हैं  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते हैं

एक राष्ट्र एक विचार  
एकता का हो प्रसार  
यह सन्देश जन-जन,  
तक हम पहुंचाते है  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते है

जाति-पाती का भेद ना हो  
आपस मे मतभेद ना हो  
ऊंच-नीच के भेद को,  
हम सब मिटाते है  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते है

मेहनत कस सबल बने  
जीवन सदा सफल बने  
परिश्रम ही है धर्म,  
यह संकल्प दुहराते है  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते है

नेक बनेंगे श्रेष्ठ बनेंगे  
कर्मों से ज्येष्ठ बनेंगे  
कर्म की प्रधानता,  
सबको बताते है  
आओ दिलों में,  
प्रेम की अलख जगाते है

\*\*\*\*\*



## बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी



एक बाग रखवाली में जब माली दो  
एक शिक्षक व दूसरा जब पालक हो  
दोनों ही विद्यालय को सुन्दर बनाये  
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

बच्चों से सुवासित होता है विद्यालय  
शिक्षा साधना का मंदिर है विद्यालय  
इन बच्चों लिए हम भी कुछ कर जाये  
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

साथ चलेंगे निश्चित ही विकास होगा  
हमारा स्कूल भी एक दिन खास होगा  
सब मिलकर स्कूल को खास बनाये  
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

स्कूल तो अपना है इसका श्रृंगार करें  
सहभागिता से ही इसका विस्तार करें  
शिक्षा से ही शिक्षा का अलख जगाये  
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

हर समस्या का जहाँ होता निदान हो  
ज्ञान विज्ञान का भरा जहाँ खदान हो  
समरसता से ही विद्यालय को चलाये  
बच्चों के सपने को नई उड़ान दे जाये

\*\*\*\*\*

## नया सवेरा आने को है

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी



जनम मरण के बीच जो लकीर है  
जीवन तो पूर्व जन्म की ताबीर है  
लो बीत गया एक वर्ष, खट्टी-मीठी यादों संग  
जीवन में बिखरते कुछ यादों और वादों संग

कुछ जीवन से जो रीता है  
कुछ ने सपनों को जीता है  
जीना है हमें अब उन सपनों के संग-संग  
लो बीत गया एक वर्ष, खट्टी मीठी यादों संग

जो बिता उसे भुला भी दो  
गम को सारे भूला भी दो  
वर्तमान को बेहतर कर, भर दो जीवन में रंग  
लो बीत गया एक वर्ष, खट्टी मीठी यादों संग

आना जाना जग में जैसे कोई पहेली हो



जन्म-मरण जैसे एक दूजे की सहेली हो  
मिला है जीवन, भरेंगे उसमे नित नव-नव रंग  
लो बीत गया एक वर्ष, खट्टी मीठी यादो संग

नया सवेरा नया उम्मीद आने को है  
अपने अपनों के साथ निभाने को है  
समय की दरकार है रहना अब अपनों के संग  
लो बीत गया एक वर्ष, खट्टी मीठी यादो संग  
जीवन मे बिखरते कुछ यादो और वादों संग

\*\*\*\*\*

## गुरुदक्षिणा

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



कुमार आलोक की नियुक्ति मुजफ्फरपुर के औराई हाई स्कूल में हुई. वह वहाँ अपना शिक्षण कार्य प्रारंभ किया.

विद्यालय के अक्सर विद्यार्थी गरीब परिवारों से थे। उनमें से कुछ बहुत मेधावी थे. कुमार आलोक के निर्देशन में वैसे मेधावी छात्र विद्यालय में छुट्टी हो जाने के बाद भी रुक जाते थे.

अपने खर्च से वैसे कुछ छात्रों को उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पूरे मन से कराने लगा. परन्तु, ऐसा करते हुए देखकर उनके सहकर्मी शिक्षक उनसे ईर्ष्या करने लगे.

अमित ने कहा था-" लगता है कुमार आलोक हमलोगों का कोचिंग सेंटर भी बंद करा देंगे. जो छुट्टी के बाद भी मुफ्त में बच्चों को पढ़ाते रहते हैं."

दिनेश सर ने उत्तर दिया-" अरे! ऐसा कितने दिनों तक चलेगा. हारकर उन्हें भी उन बच्चों से शुल्क लेना ही पड़ेगा."

कुछ दिनों के बाद भी कुमार आलोक ने उसी मनोयोग से उन बच्चों को पढ़ाया.

वह अपने सहकर्मियों से ऐसे वचनों को सुनकर भी अनसुना कर देता था.

नहीं ऐसा नहीं है भाई! तो क्या कहना चाहते हो- नरेश?

कुमार आलोक हमलोगों को नीचा दिखाने के लिए ऐसा ढोंग करते हैं.

आज के छात्र उन्हें गुरुदक्षिणा में आखिर क्या दे देंगे?

एक साथ विद्यालय के सहकर्मियों ने कहा था.

कुमार आलोक खाली समय में अपने विद्यार्थियों में ही व्यस्त रहने लगे थे.

आखिरकार कुछ छात्रों का चयन प्रतियोगी परीक्षाओं में होने लगा.

चार साल के बाद कुमार आलोक का स्थान्तरण शहर के नजदीकी विद्यालय में हो गया. वहाँ भी उनका वही पढ़ाने का सिलसिला रहा. जिससे वहाँ के छात्र भी कुमार आलोक को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे.

आज कुमार आलोक की सेवानिवृत्ति का दिन था. विदाई समारोह के नाम पर सादा और संक्षिप्त कार्यक्रम निर्धारित किया गया था.

विद्यालय का चपरासी भागते हुए आया और प्रधानाध्यापक से कहा- सर जी! सर जी! जिला पदाधिकारी की गाड़ी अपने विद्यालय में आ रही है.

यह सुनकर प्रधानाध्यापक सहित विद्यालय के सहयोगी शिक्षक घबरा गए. कोई अभी तक नये पदाधिकारी को नहीं देखा नहीं था. केवल सुना था कि नये जिलाधिकारी साहेब बहुत कड़क और तेज तर्रार भी है.

कुछ देर में ही जिलाधिकारी महोदय की गाड़ी विद्यालय में आ गई थी.

कुमार आलोक को देखते ही नये जिलाधिकारी साहेब उनके पैरों में झुक गए.



कुमार आलोक ऐसा देखकर अचंभित हो गया.

अरे सर! आप क्या कर रहे हैं?

जिलाधिकारी ने कहा- सर! आपके लिए जिलाधिकारी नहीं. आपका छात्र प्रकाश हूँ. जिसकी तैयारी के लिए आपने विद्यालय के शिक्षकों से क्या नहीं सुना था. लेकिन आप अपने कार्य में हमेशा तत्पर रहे. उसी का प्रतिफल आपके चरणों में झुका हुआ है.

कुमार आलोक की आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे थे. क्योंकि आज उन्हें अपने द्वारा किया गया निः स्वार्थ शिक्षा दान की " गुरुदक्षिणा " मिल गई थी.

\*\*\*\*\*

## भूख लगे तो

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



भूख लगे तो खाना खाना,  
लगे प्यास तो पानी पीना.

मन करे तो जमकर पढ़ना,  
हंसी लगे तो खुलकर हंसना.

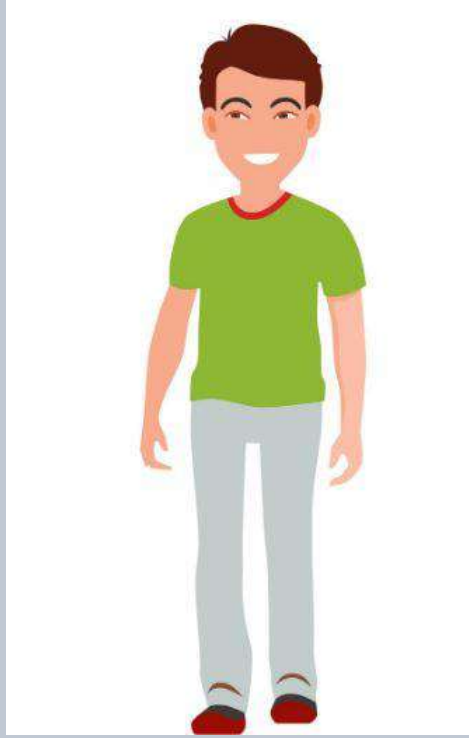
मन करे तो मनभर खेलना,  
सुबह- सुबह लंबी डग भरना.

मधुर गीत- संगीत सुनाना,  
पच जाएगा सारा खाना.

\*\*\*\*\*

## मैं बालक नादान

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद



मैं छोटा बालक नादान,  
ईश! मुझे देना वरदान.

मंदिर जाऊँ सुबहो-शाम,  
निशदिन लूँ मैं तेरा नाम.

रोज सुबह मैं करता योग,  
मुझे देख कर भागे रोग.

उछल-कूद है मेरा काम,  
मुझे कहाँ मिलता आराम.



बैट बॉल अरु गाड़ी रेल,  
छुपम छुपाई खेलूँ खेल.

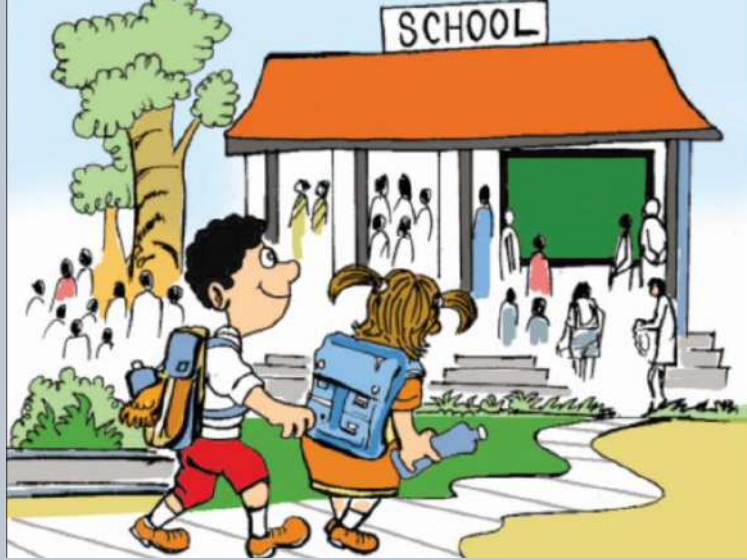
बगिया जाऊँ दादू साथ,  
पकड़े रहते मेरे हाथ.

पढ़-लिख कर मैं पाऊँ ज्ञान,  
मैं छोटा बालक नादान.

\*\*\*\*\*

## स्कूल आ पढ़े बर जिनगी ला गढ़े बर

रचनाकार- गीता खूँटे, सरायपाली



मोर गाँव के निच्चट सुघराई हे  
जिहाँ हरियर-हरियर रुखराई हे.  
जेमा चहके चाँव-चाँव चिराई हे  
जिहाँ चारो डहर चले पुरवाई हे.

रंग-बिरंगी फुल के फुलवारी हे  
तरिया नरवा ढोड़गा कछारी हे.  
साग-भाजी के बखरी -बारी हे  
जिहाँ टेंड़ा ल टेड़य संगवारी हे.

बखरी म, जुड़-जुड़हा झाड़ी हे  
सियनहा बबा करे रखवारी हे.  
मचान ह लागय, सरग-दुवारी हे  
कुंदरा म दिखे संगी-संगवारी हे.  
तिल-राहेर-धान मुंग-उन्हारी हे

झमा-झम दिखय खेत-खारी हे.  
धरसा, सरार-भर्री के पैडगरी हे  
जिहाँ तरिया म पथरा पचरी हे.

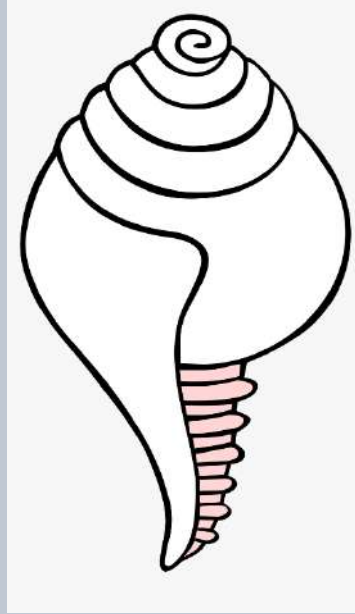
मोर गाँव गोकुल-ब्रज-दुवारी हे  
जिहाँ दया-मया के नर-नारी हे  
लइका मन राम किशन मुरारी हे  
इही म बसे छत्तीसगढ़ महतारी हे

\*\*\*\*\*



## समर शंख फूंक दो

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



जंग जीत के लिए समर शंख फूंक दो,  
महाज्ञान युद्ध के लिए बिगुल बजा दो.

कलम हथियार लेकर उतरो मैदान में,  
सवाल सैनिकों को भेजो शमशान में.

प्रतिभावान अंतिम सांस तक लड़ते रहो,  
आखिर में मेरी ही होगी जय कहते रहो.

प्रतिरूप बनाकर घेर लो सर्व रणक्षेत्र को,  
फैलाओ चहुंओर अपने दिव्य त्रिनेत्र को.

हुंकार रहे हैं दैत्य विशाल काय शरीर वाले,  
चुनौतियां दे रहे हैं बार-बार बली मतवाले.

धारण कर बुद्धि में धारदार अस्त्र-शास्त्र,  
परीक्षा कुरुक्षेत्र में छोड़ दे ज्ञान ब्रह्मास्त्र.

गुरु से जो सीखा तूने किया था अभ्यास,  
कौशलों से परिपूर्ण स्वयं पर रख विश्वास.

एक प्रहर में हो जाए प्रतिद्वंदी का पराजय,  
साम, दाम, दण्ड और भेद से होगी विजय.

अंतिम तेरा लक्ष्य है स्वर्ण मंजिल को पाना,  
सफलता सीढ़ी की अंतिम पायदान सुहाना.

सिर्फ दिखाई देगा तुम्हारे कदमों के निशान,  
चलेंगे तुम्हारे नक्शे कदम पर सारा जहान.

\*\*\*\*\*

## नूतन वर्ष का अभिनंदन

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



इस तरह नव वर्ष मनाएँगे  
रोते बच्चों को हसाएँगे  
पसरा हो जहाँ अँधियारा  
वहाँ प्रकाश फैलाएँगे।

साल नवल पर हम कुछ यूँ करें  
बेसहारों का सहारा बनें  
लहरों से जूझती जाती उन  
किशतियों का हम किनारा बनें.

काम अधूरे पूरे करेंगे  
मुश्किल से कभी न डरेंगे  
प्रण करते हैं मिलकर हम  
बुराइयों से लड़ते रहेंगे.

मस्तक लगाकर केसर चंदन  
नूतन वर्ष का कर अभिनंदन



खुशियाँ मिली जिनकी वजह से  
करें नलिन उन्हें शत-शत वंदन.

\*\*\*\*\*

## हष्ट-पुष्ट बन जाते हम

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



दूध मलाई खाते हम  
हष्ट-पुष्ट बन जाते हम.

खेलों-कूदो बनो नवाब  
वरना सेहत करो खराब.

काजू-बदाम खाते हम  
याद तभी रख पाते हम.

जल्दी उठो स्कूल जाओ  
गुरुजन का मान बढ़ाओ.

हिंदी लगे कितनी मीठी,  
अंग्रेजी की कर दो छुट्टी.

मेला घूमन जाते हम  
चाट पकौड़ी खाते हम.

मुश्किल से लड़ जाते हम  
डर को दूर भगाते हम.

काम लगन से करते हम  
कामयाबियाँ पाते हम.

\*\*\*\*\*



## ये धरा जन्नत बनेगी

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



बिटिया खूब पढ़ेगी,  
और आगे बढ़ेगी,  
आशा के पंख लगा-  
आसमान छूएगी.

शिक्षा के प्रकाश से  
तमस को हर लेगी,  
समय के साथ चलेगी  
विजय मिलती रहेगी.

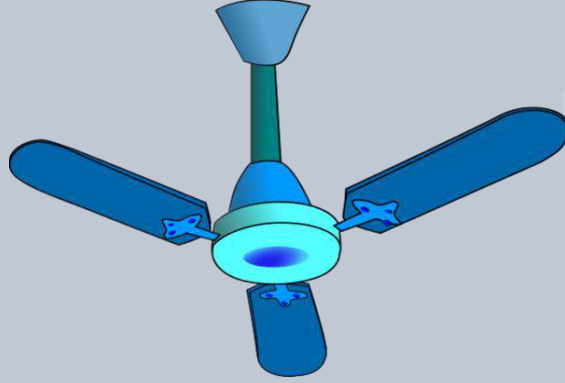
कठिनाइयों से डरकर  
कभी न पीछे हटेगी,  
दुनिया में भारत का,  
नाम रौशन करेगी.

कविता,गीत लिखेगी,  
और गीतांजलि रचेगी,  
इनके ही प्रयास से  
ये धरा जन्नत बनेगी.

\*\*\*\*\*

## पंखा

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



जिंदगी की शान है पंखा  
दिल की धड़कन जान है पंखा  
जब इठलाता यह चलता है  
चेहरे की मुस्कान है पंखा.

जब-जब गर्मी हमें लगे हैं  
पंखा भी क्या खूब जँचे हैं  
गोल-गोल जब घूमे पंखा  
गोल-गोल दुनिया घूमे हैं.

पवन वेग सा लगता पंखा  
भन भन्नाट सा चलता पंखा  
हवाई सफ़र की सैर कराता  
सब के मन को भाता पंखा.

\*\*\*\*\*



## एक शिकारी आता है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी



एक शिकारी आता है,  
अपना जाल फैलाता है,  
चिड़ियों को फंसाता है,  
दाने का लालच दिखाता है,  
चिड़िया रानी भूल न जाना,  
लालच में तुमको नहीं आना,  
जाल-फांस के पास न जाना,  
जान बचाके दूर उड़ जाना.

\*\*\*\*\*

## चिड़िया रानी आओ न

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी



चिड़िया रानी आओ न  
मीठे गीत सुनाओ न.  
जग को तुम जगाओ न  
सुबह हुई उठ जाओ न.  
घोंसले से बहार आओ न  
रवि का वंदन कर जाओ न.  
फुलवारी में तुम आओ न  
फुल-कली को खिलाओ न.  
नव-दिवस को बुलाओ न  
चमन में चेतना जगाओ न.

\*\*\*\*\*

नव-वर्ष देखो आया है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी



नव वर्ष देखो आया है  
नव संदेशा ले लाया है.  
आओ इसका स्वागत करें  
मन को फिर से जाग्रत करें.  
चलो आशाओं का संचार करें  
नव-वर्ष का हम आभार करें.  
भूल-चुक का सुधार करें  
कमी क्या थी विचार करें.  
आओ एक दूसरे से प्यार करें  
ईर्ष्या-द्वेष का बहिष्कार करें.

\*\*\*\*\*



## देखो क्रिसमस आया है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी



क्रिसमस पर्व आया है  
बच्चों के मन भाया है.  
शांता क्लाज आया है  
प्यारा गिफ्ट लाया है.

सभी को गले लगाया है  
प्यार करना सिखाया है.  
बच्चों में आनंद छाया है  
खुशियों का दिन आया है.

\*\*\*\*\*

## नील गगन में चंदा तारें

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, दुर्ग



नील गगन में चंदा तारें.  
बच्चों को लगते हैं प्यारे.  
चाँद में ढूँढते दादी अम्मा.  
मुस्काते हैं चन्दा मामा.  
तारों में ढूँढते चोर सिपाही.  
उनके पीछे चलते हैं राही.  
चाँद अकेले घूमते रहता.  
कभी न रुकता कभी न थकता.  
आसमान में अनगिन तारें.  
बच्चों को लगते हैं प्यारे.  
उनको गिनने की शर्त लगाते.  
गिनते-गिनते वे थक जाते.  
थक हार कर वे सो जाते.  
मीठे सपनों में खो जाते.

नहीं रहते साथ हमारे.  
छुप जाते हैं सारे तारे.  
नील गगन में चंदा तारे.  
बच्चों को लगते हैं प्यारे.

\*\*\*\*\*



## बाल-पहेली

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी



1. गुच्छे-गुच्छे में वह रहता है.  
बेलों में वह खूब फलता है.  
वह बड़ा ही रसदार होता है.  
वह मीठा प्यारा सा होता है.

बच्चों मन मन ललचाता है.  
खाने में बड़ा मजा आता है.  
तीन वर्णों में नाम बनता है.  
बोलो वह क्या कहलाता है.

2. पीले रंग का वह दिखता है.  
चितरी सूरत वो बनाता है.  
पर बच्चों के मन भाता है.

बंदरों को भी ललचता है.  
दर्जन-दर्जन बिक जाता है.  
लम्बा टेढ़ा ही वह होता है.  
छिलकों से खतरा होता है।  
नाम बोलो तो क्या होता है।

3. फुलवारी की सुंदरता है।  
चमन जिससे महकता है।  
जो रंग-रंगीला दमकता है।  
भौंरों के मन को मोहता है।  
देवताओं के सर चढ़ता है।  
कभी हार बन इठलाता है।  
अपने भाग्य को सराहता है।  
बोलो वह क्या कहलाता है।

1) अंगूर 2) केला 3) फूल

\*\*\*\*\*

## छुट्टी

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर



छुट्टी हो गई - छुट्टी हो गई  
पढ़ाई से अपनी कुट्टी हो गई  
खूब खेलेंगे और खायेगें  
मौज करेंगे ,नाचे-गाएँगे  
हाथ नहीं अब आयेगें,  
जम के शोर मचायेगें

छुट्टी हो गई - छुट्टी हो गई  
आज हमारी छुट्टी हो गई  
हंसते-गाते ये दिन बितायेगें  
धूम मचाएँगे मौज मनाएँगे

छुट्टी हो गई छुट्टी हो गई  
पढ़ाई से कुछ दिनों की कुट्टी हो गई.

\*\*\*\*\*



## जनऊला

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़

1. किताब म लिखाय हे, उही म हमर जान.  
देखे नई ओं फेर, नाक म होथे पहिचान.  
जम्मो कोती हावय बिराजमान.  
सरसर सरसर चलय, नाँव ल तैं जान.
2. रुख ह ढेंकी सहि, सूपा सहि पान .  
कच्चा म साग रांध, पाके मीठ जुबान.
3. आठे हाथ म एके गोड़ तगड़ा.  
सुरुज इंदर संग करय झगड़ा.
4. उपर आगी खाल्हे आगी.  
माँझा म बईठे, मार के पागी.
5. एक फर के गादा काँटा.  
पाके खाय म गुर लाटा.

6. पानी माँझा राहय.  
जन्तु ओहर नोहय.  
एक पूँछी पानी म अगरे.  
पान म पानी कभू नई बगरे.

7. नेटवर्क के साड़ी.  
आठ गोड़ सोला माड़ी.  
मछरी नी खाय माछी खाय.  
सुखवा डारा म जाल बिछाय.

1. हवा, 2. केला, 3. छाता, 4. पनपुरवा रोटी, 5. कटहल, 6. कमल, 7. मकड़ी

\*\*\*\*\*

## भारत माँ की पीर

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार



भारत के गणतंत्र की,  
ये कैसी है शान.  
भूखे को रोटी नहीं,  
बेघर को पहचान.

सब धर्मों के मान की,  
बात लगे इतिहास.  
एक-दूजे को काटते,  
ये कैसा परिहास.



प्रजातंत्र का तंत्र अब,  
लिए खून का रंग.  
धरम-जात के नाम पर,  
छिड़ती देखो जंग.

पहले जैसे कहाँ रहे,  
संविधान के मीता।  
न्यारा-न्यारा गा रहा,  
हर कोई अब गीत.

विश्व पटल पे था कभी  
भारत का सम्मान.  
लोभी नेता देश के,  
लूट रहे वो मान.

रग-रग में पानी हुआ,  
सोये सारे वीर.  
कौन हरे अब देश में  
भारत माँ की पीर.

मुरझाये से अब लगे ,  
उत्थानो के फूल.  
बिखरे है हर राह में,  
बस शूल ही शूल॥

आये दिन ही बढ़ रहा,  
देखो भ्रष्टाचार.

वैद्य ही जब लूटते,  
करे कौन उपचार.

कैसे जागे चेतना,  
कैसे हो उद्धोष.  
कर्णधार ही देश के,  
लेटे हो बेहोश.

\*\*\*\*\*

## बिट्टू बंदर ने की मदद

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा, बालोद



कड़ाके की ठंड पड़ रही थी. साँझ होते ही जंगल के सभी जानवर अपने-अपने घरों में दुबक जाते थे. ऐसा लगता जैसे कि जंगल भर बदन कँपकँपाती हवा का पहरा हो. छोटे बच्चों को घर से बाहर निकलने की बिल्कुल इजाजत नहीं थी. अगर कोई गलती से बाहर निकल जाता, तो उसे अपने मम्मी-पापा की झिड़कियाँ सुननी पड़ती थी.

एक पेड़ पर बैठे बिट्टू बंदर ने अपनी पत्नी सुम्मी से कहा- "सबने खाना तो खा लिया न ? चलो अब जल्दी सो जाओ. सुबह जल्दी उठना है. सुम्मी, दोनों बच्चों को गर्म कपड़े पहना दो न. रजाई ओढ़कर ही सोना है सबको."

"हाँ जी. मुझे भी सबका ख्याल है." सुम्मी मुस्कुराती हुई बोली- "आप भी अपना ध्यान रखें. ठंड सबके लिए है जी." सुम्मी की बातें सुन बिट्टू को हँसी आ गयी. सब सो गये.

रात का लगभग बारह बजा था. पेड़ के नीचे किसी के कराहने की आवाज आई. बिट्टू बंदर की नींद खुल गयी. रजाई से सर निकाल कर देखा. नीचे बूढ़ा मनु शेर था. ठंड



के मारे वह काँप रहा था. पहले तो बिट्टू घबरा गया. फिर भी वह घर से बाहर निकला. साहस बटोरते हुए पूछा-"कहो मनु भैया ! क्या बात है ? यहाँ तुम्हारा कैसे आना हुआ ? सब ठीक तो है न ?" ठंड के कारण मनु के दाँत किटकिटाने की आवाज आ रही थी. बड़ी मुश्किल से वह बोला-"बिट्टू भाई. मुझे बहुत ठंड लग रही है. कुछ ओढ़ने-बिछाने के लिए है तो दो न." मनु शेर की हालत देख बिट्टू को दया आ गयी. वह मनु के और पास आया. उसने सर पर मफलर लपेटा था. स्वेटर पहना था. शॉल भी ओढ़ा था. तने के पास आकर बोला- "मनु भैया, तुम चिंता न करो. लो, पहले इसे ओढ़ो." मनु को शॉल दिया; और ओढ़ने-बिछाने के कपड़े लेने ऊपर चढ़ा. तभी सुम्मी व बच्चे भी जाग गये. पेड़ के नीचे शॉल ओढ़े मनु शेर को देख सुम्मी सब समझ गयी. उसके मना करने के बावजूद बिट्टू ने मनु को कथरी-चादर दिया.

सुबह हुई. जंगल के सभी जानवरों को पता चल गया कि मनु शेर को गर्म कपड़े बिट्टू बंदर ने ही दिये हैं. आठ-दस जानवर एकत्र हुए. मनु शेर भी चुपचाप बैठा था. बिट्टू बंदर के द्वारा मनु शेर को की गयी मदद किसी को अच्छी लगी तो किसी को बुरी. फिर सबकी भली-बुरी बातें सुन कर बिट्टू बोला- "देखो मित्रों ! मनु शेर रात को मेरे घर के पास आया. ठंड से ठिठुर रहा था. मुझसे उसकी हालत देखी नहीं गयी. उसने मुझसे गर्म कपड़े मांगे. फिर मैंने उसे शॉल, कथरी व रजाई दी. मैं अपने घर के सामने ठंड से काँपते हुए वृद्ध शेर की मदद कैसे नहीं करता. अगर उसे कुछ हो जाता तो मैं स्वयं को कभी माफ नहीं कर पाता."

कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला. फिर चुप्पी तोड़ते हुए शिखा हिरणी बोली- "बिट्टू ने बिल्कुल सही किया है. भले ही मनु शेर ने हम सब के साथ हमेशा गलत किया है; पर है तो वह हम जानवर बिरादरी का. हम जो भी हैं; और जैसे भी हैं, जंगली जानवर हैं. उसकी सहायता हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा ? कुछ गलत नहीं किया है बिट्टू ने मनु की मदद करके."

सबकी बातें सुन कर प्रियू नीलगाय सबके सामने आयी. बोली- "हम सब जंगल को छोड़ कर कहीं जा भी तो नहीं सकते. यहाँ से निकलना खतरा मोल लेना है. अब

हमारा जंगल दिनोदिन सिमटता जा रहा है. इसलिए हम सब एक-दूसरे की मदद करके अपने जंगल में ही रहें. अपनी रक्षा स्वयं करें."

चुपचाप बैठा मनु शेर सबकी बातें सुन रहा था. बिट्टू बंदर को धन्यवाद देते हुए उसकी आँखें भर आई.

\*\*\*\*\*

## जुगनू

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



गली-गली मा जुगनू कीरा,  
जइसे चमके चम-चम हीरा.  
रतिहा बेरा येहर आथे,  
बिहना संगी कती लुकाथे.

बुग-बुग बरथे सुग्घर पाँखी,  
नान-नान दिखथे दू आँखी.  
करिया भुरवा रंग ह होथे,  
मंझनिया भर जम्मों सोथे.

खेत-खार अउ हरियर बारी,  
धरे टार्च निकले सँगवारी.  
दू पाखी येखर टकराथे,  
लागे जुगनू गाना गाथे.

सुरताथे बन झाड़ झरोखा,  
पेट भरे बर करथे जोखा.



घर-घर मा जुगनू हर आथे,  
लइका लोगन खुश हो जाथे.

येखर रद्दा मनखे जावव,  
सुमता के गोठ गोठियावव.  
सीखव जुगनू ले सँगवारी,  
दूर करौ जम्मों अँधियारी.

\*\*\*\*\*

## हम बच्चे

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली



माना कि हम छोटे हैं,  
पतले गबरु मोटे हैं.  
सीधे सच्चे सादे हैं,  
मगर बुलन्द इरादे हैं.  
एक जिद्द सब पर भारी,  
बातें भी मीठी - खारी.  
सारे हमसे प्यार करें,  
सुबह - शाम मनुहार करें.  
हिचकी ले जब-जब रोते,  
घंटा भर ना चुप होते.  
दादी अम्मा नज़र उतारे,  
मम्मी सहलाये-पुचकारे.  
नानी को याद दिलाते नानी,  
बचपन की दिलचस्प कहानी.

घर में जो भी आता है,  
लपक हमें उठाता है.  
घर - बाहर की शान हैं.  
हम बच्चे बलवान हैं.

\*\*\*\*\*



## चंदा मामा हमें बताओ

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद

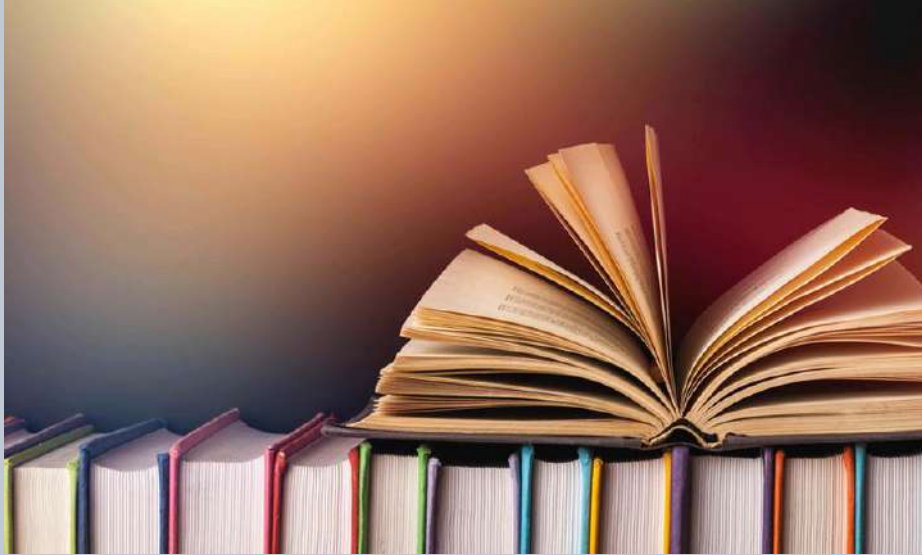


चंदा मामा हमें बताओ,  
कहां से उतरते चढ़ते हो.  
सूरज सदा गोल ही रहता,  
तुम क्यों घटते बढ़ते हो.  
पहले जल्दी छुप जाते हो,  
बाद पूरी रात रहते हो.  
सूरज खूब गर्मी है देता,  
पर तुम शीतल करते हो.  
रात-रात में ही तुम आते हो,  
दिन में तुम क्या करते हो.

\*\*\*\*\*

## मैंने एक पुस्तक लिखी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



मैंने एक पुस्तक लिखी थी,  
जिसमें थी श्रृंगार की बातें.  
दो प्रेमियों की प्रेम कहानी,  
संयोग दिन, विरह की रातें.

राष्ट्रप्रेम की भावना जगाना,  
मातृभूमि के लिए बलिदान.  
खुशहाल और शक्तिशाली,  
हिंदुस्तान, तिरंगे की शान.

कोविद ज्ञानदाता की महिमा,  
अध्येताओं को कराता संज्ञान.  
मंजिल को पाना अंतिम ध्येय,  
नित कर्म में तन्मयता, ध्यान.

सृष्टि की रचना मनोहारी चित्र,  
नील गगन के चांद और तारें.  
जीव-जंतुओं की जीवन शैली,  
हमको आकर्षित कर रहे सारे.

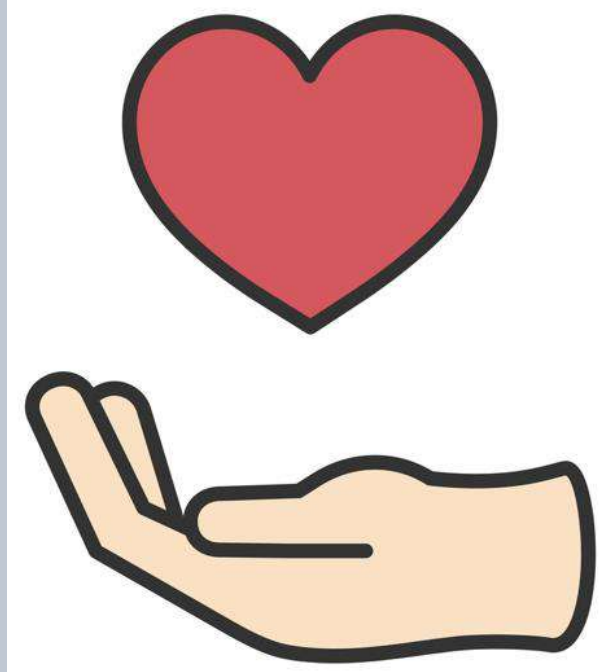
आधुनिक दहेज प्रथा विकराल,  
गौरव नारी आज हो गई लाचार.  
बेगार युवाओं के मन की पीड़ा,  
हावी है राक्षस रूपी भ्रष्टाचार.

\*\*\*\*\*



## सोनू की उदारता

रचनाकार- कु. अंजली साहू, मुंगेली

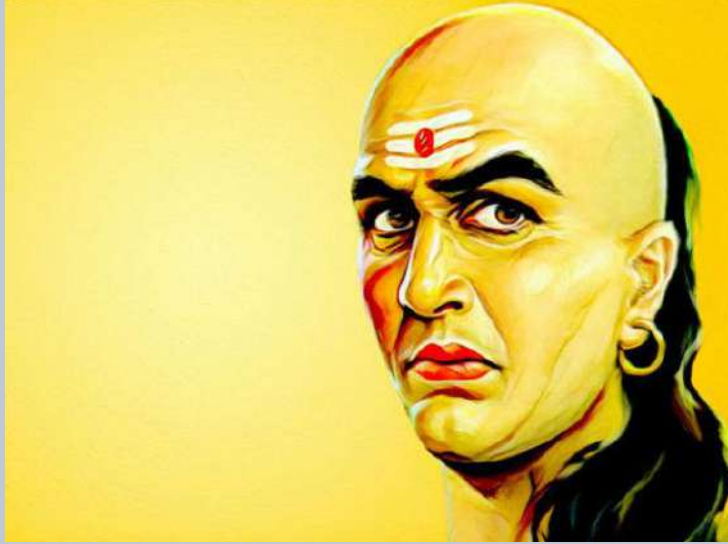


एक सोनू नाम का लड़का था. उसके माता-पिता उससे बिछड़ गए थे. सोनू अकेला रहता था. वह स्कूल जाता और स्कूल से आकर सब्जी बेचता था. एक दिन सोनू अपने साइकिल से स्कूल जा रहा था तभी एक कार वाले ने उसे अपनी कार से धक्का दे दिया. सोनू गिर गया और उसकी सारी किताबें सड़क पर बिखर गईं. कार वाले ने सोनू की गलती न होते हुए भी उसे खरी-खोटी सुनाई पर सोनू भोला था उसने कुछ नहीं कहा और वहां से चला गया. शाम को सोनू स्कूल से आकर सब्जी बेचने गया तो देखा कि सड़क पर एक्सीडेंट हुआ है और भीड़ लगी है. सोनू ने जाकर देखा तो वह पहचान गया कि यह वही कार वाला है जिससे वह सुबह टकराया था. सोनू तुरंत उसे अस्पताल ले गया और उसका उपचार करवाया. कार वाला अपने द्वारा किए गए सोनू के साथ दुर्व्यवहार को याद कर शर्मिंदा हो गया उसने सोनू से क्षमा माँगी. सोनू की उदारता ने उसे उसकी गलती का एहसास करा दिया.

\*\*\*\*\*

## मत करिये उपहास

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार



अपना बोया ही मिले,  
या कांटें या घास.  
बे-मतलब ना बोलिये,  
मत करिये उपहास.

मत करिये उपहास,  
किसी का जान-बूझकर.  
निकले हर इक शब्द,  
अंतर्मन से पूछकर.

सुन 'सौरभ' की बात,  
किसी पर न तंज कसना.  
औरों-सा खुद मान,  
ले हर इक बने अपना.

पाकर तुमको है मिली,  
मुझको खुशी अपार.  
होती है क्या ज़िन्दगी,  
देखा रूप साकार.

देखा रूप साकार,  
देखूँ क्या अब मैं अन्य.  
तेरा सुन्दर रूप, "परी",  
पाकर हुई धन्य.

सुन 'सौरभ' की बात,  
मिले क्या मन्दिर जाकर.  
मुझको तो है सब मिला,  
साथ तुम्हारा पाकर.

\*\*\*\*\*



## यह जीवन

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा



संघर्ष ही जीवन है, चलती का नाम ही जिन्दगी है, जीवन में कुछ भी उतार-चढ़ाव आए हमें चलते जाना है, बिना थके बिना हारे जीवन को हंसकर जीना ही जिंदगी है, जीवन में बाधाएं तो अनंत हैं जो पग-पग पर हमारी राह रोकते दिखाई देती हैं पर हमें इसे बहुत ही शांत और धैर्य के साथ पार कर अपने मंजिल तक पहुंचना है, जो यहां पर आकर बाधाएं देखकर रुक गया समझो वह हार गया, जिंदगी का परम सत्य यही है कि हर मोड़ आसान नहीं होता, कुछ विचार आपको उत्साहित करेंगे, कुछ आपको मजबूर करेंगे, कुछ विचार सीख देंगे लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर विचार एक सुंदर सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरित करेगा, अपने सपनों का जीवन जिए, सदैव सार्थक सकारात्मक सोचे, जिंदगी बहुत सुंदर और आसान हो जाएगी.

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.

\*\*\*\*\*

## तोता

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र



तोता हूँ, मैं तोता हूँ.  
बुरा हाल है, रोता हूँ.

बाग - बगीचे उजड़ गए  
साथी कितने बिछड़ गए  
लटक रहे नकली फल हैं  
उसी में चोंच चुभोता हूँ.

'टें टें टें टें' करता हूँ  
मार प्रकृति की सहता हूँ  
बंद कर लिया पिंजड़े में  
आजादी को खोता हूँ.

तस्कर मुझे पकड़ लेते  
जानें कहाँ भेज देते  
पूछूँ क्या अपराध किया  
विवश बहुत पर होता हूँ.

सुन संगीत नाचता हूँ  
'सीताराम ' बाँचता हूँ  
दादी जी दुलराती हैं  
जैसे उनका पोता हूँ.

\*\*\*\*\*



## ठंड

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय



सर सर सर चलती हवा, लगे जोर की ठंड.  
मौसम राजा ने दिया, जैसे कोई दंड.

ठंड कड़ाके की पड़े, हो सभी परेशान.  
आग जलाकर तापते, बचती सबकी जान.

प्राणों से प्यारी लगे, चाय सभी को मान.  
मन को देती चैन है, सबको यह है भान.

जलता जहां अलाव है, बैठे सारे लोग.  
सर्दी से राहत मिले, करें सभी उपयोग.

काम धाम सब ठप पड़ा, हुए सभी लाचार.  
बैठे मानुष है सभी, पड़ी ठंड की मार.

\*\*\*\*\*

# शिक्षा की जोत

रचनाकार- भूपसिंह 'भारती', हरियाणा



जन-जन तक शिक्षा को लाई.  
प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई.

कीचड़ से सारा गात सना,  
था पग-पग पर आघात घना,  
चला भाड़ फोड़ने एक चना,  
वो अनहोनी से ना घबराई.

ये रीति-रिवाज क्रूर रही,  
पर फुले ना मजबूर रही,  
वो पाखण्डों से दूर रही,  
फिर विद्रोह ने ली अंगड़ाई.



बहुजन फिरता मारा-मारा था,  
शिक्षा बिन बैठा ढारा था,  
फुले ने सही विचारा था,  
अब तो शिक्षा ही करे भलाई.

नारी पर उपकार किया,  
शिक्षा का प्रचार किया,  
फिर सपने को साकार किया,  
फुले शिक्षा की जोत जलाई.

\*\*\*\*\*

## नववर्ष का स्वागत

रचनाकार- भूपसिंह 'भारती', हरियाणा



आँगन हमारे, पधारे हो तुम.  
नववर्ष का स्वागत, करते हैं हम.

आये हमारे, आँगन में खुशियाँ,  
आरजू यही रहे, दिलों के दरमियाँ,  
इनायत खुदा की, रहे हरदम.  
नववर्ष का स्वागत, करते हैं हम.

बेटी बचावां, बेटी पढ़ावां,  
मौका समान देकर, आगे बढ़ावां,  
नववर्ष में हो, सर्वमंगलम.  
नववर्ष का स्वागत, करते हैं हम.

नववर्ष में, स्वच्छता अपनावा,  
कोरोना को, दूर भगावा,  
नववर्ष में ना हो, दुखी ये जनम.  
नववर्ष का स्वागत, करते हैं हम.

सबको अपने गले लगावा,

जाति धर्म का भेद मिटावा,  
सपनों सा सुंदर, नववर्ष हो सनम.  
नववर्ष का स्वागत, करते है हम.

देश में शिक्षा, दीप जलावा,  
अज्ञानता का, अंधकार मिटावा,  
भारती भविष्य को, उज्ज्वल करे हम.  
नववर्ष का स्वागत, करते है हम.

\*\*\*\*\*



## स्नेहा की जीत

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



बर्तन माँजती हुई स्नेहा को जब पता चला कि उसकी सास उसे न केवल घूर रही है, बल्कि तंज कसते कुछ सख्त शब्द छोड़ रही है; स्नेहा से नहीं रहा गया. हाथ धोकर तुरंत उठी. बोली- "माँ जी आपको हमेशा मेरी ही गलती नजर आती है क्या ? जब देखो गैरों की तरह हर बात पर मुझे ताने मारती रहती हो." स्नेहा आग बबूला हो गयी. कह ही रही थी-

वैसे भी आपके बेटे का व्यवहार मेरे प्रति ठीक नहीं है; "अब आप भी" कहते हुए स्नेहा अपने कमरे में चली गयी.

स्नेहा अपनी किस्मत को कोसने लगी. उसकी सिर्फ इतनी ही गलती थी कि वो एक गरीब घर की बेटी थी, जो हमेशा सच्चाई का साथ देती थी. जब उसे कुछ गलत लगता तो बोल देती थी.

कुछ देर बाद सुमित घर आया. तभी स्नेहा की सास श्यामा सुमित के सामने मगरमच्छ के आँसू बहाने लगी. सुमित से रहा नहीं गया. पूछा- "माँ आप रो क्यों रही हैं. क्या हुआ माँ, बताइये तो ?" श्यामा ने अपनी गलती पर पर्दा डालते हुए स्नेहा को ही दोषी

ठहराया. सुमित की त्यौरी चढ़ गयी. बोला- "स्नेहा, तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुमने मेरी माँ को रूला दिया." जोर-जोर से आवाज लगाई- "स्नेहा... स्नेहा... तू कहाँ मर गयी. बाहर निकल. जरा इधर तो आ."

स्नेहा दौड़ते हुए कमरे से बाहर आयी. सुमित ने आव देखा न ताव. उसने स्नेहा के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया. स्नेहा की आँखों के सामने अँधेरा छा गया. इधर श्यामा पीछे से मुस्कुरा रही थी. उसके कलेजे को थोड़ी ठंडक मिली. उसे लगा कि स्नेहा एक अबला नारी की तरह है; कुछ नहीं कर पायेगी. सब बर्दाश्त कर लेगी. लेकिन अब बहुत हो चुका था. स्नेहा भी हार मानने वालों में से नहीं थी. उसने अपने आसपास के लोगों को बुलाया. सबके सामने चीख-चीख कर बोली- "क्या यही है एक नारी का असली जीवन. क्या पुरुषों के शोषण में कमी आ गयी कि अब नारी ही नारी का शोषण कर रही है. कभी दहेज के लिए तो, कभी माँ-बाप पर ऊँगली उठाकर. अरे आज एक नारी दूसरी नारी का दर्द नहीं समझ पा रही है, ऐसे नारी जीवन को धिक्कार है. बहू और बेटी में भेद करते हैं. नौकरानी की तरह रखते हैं. क्या वह कभी किसी की बहू नहीं थी ? क्या उनकी अपनी बेटी नहीं होती ? आज मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है; जिसे देख कर कल कोई और किसी के साथ करेंगे."

सब के सामने स्नेहा अपनी सास से पूछने लगी- "माँ जी, क्या सच्चाई का साथ देना गलत बात है ? मेरे माँ-बाप को कोसने से क्या मिलता है आपको ? अगर कोई आपकी बेटी के साथ ऐसा करेंगे तो आपको अच्छा लगेगा ? आपके हाँ में हाँ बोलू तभी मैं अच्छी बहू बनूँगी ?

इकट्ठे हुए लोग भी स्नेहा का साथ देने लगे. वे सुमित और श्यामा को समझाने लगे. उन्हें अपनी गलती का एहसास होने लगा. दोनों ने बैठक में एकत्रित लोगों के समक्ष स्नेहा से माफी माँगे. स्नेहा की आत्मा को ठेस तो पहुँची थी; फिर भी उसने दोनों माँ-बेटे को माफ कर दिया.

\*\*\*\*\*

## गणित की बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार, उत्तर प्रदेश



1. तीन अक्षर से बनने वाली,  
गणित की आकृति मुझको मानो.  
अंत नहीं है मेरा कोई,  
जल्दी से मुझको पहचानों.

2. जिसको कोई माप न पाए,  
दोनों ओर बढ़ती जाये.  
बच्चों मेरा नाम बताओ,  
झटपट बच्चों टॉफी पाओ.

3. नहीं किरण हूँ, न ही रेखा,  
और न समझो मुझको गोल.  
रेखा का मैं एक भाग हूँ,  
गेंद तुम्हारी गोल मटोल.



4. तीन अक्षर का विषय निराला,  
नाम बताओ उसका लाला  
सुनकर बच्चे चकराते  
लेकिन रोचकता भी पाते।

उत्तर-1. किरण, 2. रेखा, 3. रेखाखण्ड, 4. गणित

\*\*\*\*\*

## कदमों के निशान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



यह कौन है कुशाग्रबुद्धि महापुरुष?  
केवल दिखाई दे रहे कदमों के निशान.  
अतीत में इतिहास रचकर चले गए हैं,  
भविष्य के लिए छोड़ अपनी पहचान.

वादियों में गूँज रही ज्ञान-विज्ञान ध्वनि,  
मस्तिष्क में खेल गया गणित का खेल.  
अनुसंधान कर रहे मानव वैज्ञानिक बन,  
प्राचीन महाज्ञान का है आधुनिक मेल.

पंच-तत्वों को वश में करके बैठा तपस्वी,  
सृष्टि में जन्म और मरण के चक्रों से परे.  
निर्जन स्थान में खड़ा कह गया ज्ञान-ग्रंथ,  
संशय में घिरा पार्थ निष्काम कर्म को करे.

विश्व-गुरु द्वारकाधीश का भारत में है राज,

सिखाया कर्मों का सन्यास और आचरण.  
जय माधव, जय यादव जयकारा जगत में,  
परमपिता परमेश्वर के ज्ञान को करो धारण.

\*\*\*\*\*



मां

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय



माँ तो बड़ी प्यारी होती,  
जग से है न्यारी होती.  
दूजा कोई और नहीं,  
महिमा निराली है.

ममता से होती भरी  
बातें करें खरी-खरी.  
सत्य राह दिखा कर,  
जीवन संवारी है.

करे बच्चों की है फिक्र,  
रहे होठों पर जिक्र.

रखकर ध्यान वह,  
बच्चों को तो पाली है.

बच्चे राह भटके तो,  
माँ को बड़ा खटके वो.  
आँचल के छाँव तले,  
बच्चों को संभाली है.

\*\*\*\*\*

## ठंड कड़ाके की अब आई

रचनाकार- कुसुम अग्रवाल, राजसमंद



ठंड कड़ाके की अब आई,  
आओ बैठें ओढ़ रजाई.  
उसमें छिपकर ही कर लेंगे,  
हम तुम दोनों आज पढ़ाई.

पहले कुर्सी पर बैठे थे,  
हाथ-पाँव सब ही ऐंठे थे.  
तब मम्मी बोली समझा कर,  
इन्हें चाहिए कुछ गरमाई.

याद करेंगे उत्तर सारे,  
और साथ में चार पहाड़े.  
कविता बोलें, कथा सुनाएँ,  
ऐसे होगी नहीं लिखाई.



दुबके ऐसे, झपकी आई,  
पुस्तक हाथों छूटी भाई.  
सोना मत तब मम्मी बोली  
गरम पकौड़ी लेकर आई.

\*\*\*\*\*

## बाल-पहेली

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



1. तीन रंग का प्यारा प्रतीक है.  
आसमान में जो फहराता है.  
हरा, शान्ति त्याग झलकाता.  
बच्चो! वह क्या कहलाता है?
2. ज्ञान जहाँ पर बच्चे पाते हैं.  
जहाँ शिक्षकगण पढ़ाते है.  
घंटी अलारम राग सुनाते हैं.  
वे स्थल क्या कहलाते हैं?

3. फूलों जैसे वे प्यारे होते हैं.  
माता के जो दुलारे होते हैं.  
माली जिनके पिता होते हैं.  
बोलो तो वे कौन होते हैं?

4. ज्ञान-विज्ञान हमें जो सिखाते हैं.  
भविष्य हमारा जो गढ़ जाते हैं.  
हमें संस्कार का पाठ पढ़ाते हैं.  
ये मार्गदर्शक कौन कहलाते हैं?

उत्तर- 1. तिरंगा झंडा, 2. शाला, 3. बच्चे, 4. शिक्षक

\*\*\*\*\*



## नया साल आया

रचनाकार- महेन्द्र कुमार वर्मा, भोपाल



नया साल आया,  
मन को वह भाया.

दुखड़े बिसरा के,  
मस्त मुस्कराया.

गूँज उठे गाने,  
नाच उठी काया.

बाग की महक ने  
सबको बहकाया.

खुशी लिए सारी.  
नया साल आया.

\*\*\*\*\*

## नभ के तारे

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



नभ के राजदुलारे तारे,  
जगमग करते प्यारे तारे.

दिन आते ही गायब होते,  
रातों के उजियारे तारे.

चंदा से करते हैं बातें,  
रात-रात भर सारे तारे.

देर रात जब आतीं परियाँ,  
खुश हो उन्हें निहारें तारे.

झील रात दर्पण बन जाती,  
देखें अपनी छटा सितारे.

बादल जब छा जाते नभ पर,  
नजर नहीं आते तब तारे.

देर रात जब नींद न आती,  
बच्चे गिनते नभ के तारे.

\*\*\*\*\*



## मेरा छाता

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



बरखा में गाता इठलाता,  
रंग बिरंगा मेरा छाता.

बरखा जी जब रिमझिम गातीं,  
शोर मचाता मेरा छाता.

आवारा कुत्तों से अक्सर,  
रक्षा करता मेरा छाता.

तेज धूप से मुझे बचाता,  
गर्मी में यह मेरा छाता.

जब आती हैं तेज हवाएँ,  
उड़-उड़ जाता मेरा छाता.

मेरा उससे गहरा नाता,  
मीत सखा है मेरा छाता.

\*\*\*\*\*

## बन्दर मामा चले फिल्म में

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



बन्दर मामा  
राह में मिला  
एक पाजामा.

रंग बिरंगे  
जेबों वाला  
था पाजामा.

फिर वो भागे  
टोपी मिल गई  
उनको आगे.

सौ रुपये में  
शर्ट खरीदी  
सात रंग की.

करने हंगामा  
चले फिल्म में  
बन्दर मामा.

\*\*\*\*\*



## सूरज दादा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



सूरज दादा, सूरज दादा,  
ओढ़ लिए हो आज लबादा.

बहुत देर तक क्यों सोते हो,  
घर जाने क्यों आतुर होते हो.

क्यों जाते किनारे-किनारे,  
हम काँप जाते ठंड के मारे.

ठंड से बचने का है इरादा.  
सूरज दादा-सूरज दादा.

\*\*\*\*\*

## अंतर्मन को संवारते जा

रचनाकार-डॉ. माधवी बोरसे



जाने वाले को बार-बार रोका नहीं करते,  
अकेले जीने से डरा नहीं करते,  
टूट गया जो बर्तन टूटना था,  
टूटे हुए बर्तन को भरा नहीं करते.

जाने दो जो आपका है नहीं,  
वक्त पर मिलेगा जो आपके लिए है सही,  
माना बहुत वक्त निकल चुका है,  
पर विश्वास बाकी अभी है कहीं.

क्यों किसी की राह को रोके हम,  
क्यों समझे खुद को कम,  
हर चीज बस में होती नहीं,  
क्यों रखना किसी बात का वहम.

खुद को समझने में वक्त तो लगता है,  
अपनों से जुदा होने का दर्द  
कोई अपना समझता है,  
धैर्य के साथ स्वयं का धीरज बांधों  
किसी भी दर्द को जाने में  
थोड़ा वक्त तो लगता है.

तू निडर बन, तू लहर बन,  
आगे बढ़ और गदर बन,  
अपनी लड़ाई कभी-कभी होती है खुद से,  
अपनी कमजोरियों को हटाकर  
एक नया सफर बन.

जीवन में आना जाना लगा रहता है,  
हर वक्त तुमसे बस यही कहता है,  
आगे बढ़ तू चलता जा,  
अपनी कमजोरियों को हटाकर सवरता जा,  
अपनी कमजोरियों को हटाकर सवरता जा.

\*\*\*\*\*



## मेरा सबसे प्यारा स्कूल

रचनाकार- गरिमा बरेठ, सातवीं, SAGES तारबहार बिलासपुर



यह मेरा प्यारा स्कूल,  
नहीं सकती मैं इसको भूल.  
कितना सुंदर है मेरा स्कूल,  
इसमें रंग-बिरंगे फूल.  
फूल सुहाने सबको भाते,  
उन्हें देखकर सब ललचाते.  
मां ने मुझ को जन्म दिया,  
और दिया ढेर सारा प्यार.  
स्कूल में मेरा ज्ञान बढ़ाकर,  
मेरा जीवन दिया संवार.  
खूब खेलो और पढ़ो तुम,  
कहती यह हमारी टीचर.  
मैडम हमको पाठ पढ़ाती  
नई-नई बातें सिखाती,

बड़े होकर प्रण तुम करना  
देश की सेवा करेंगे मिलकर  
कोई वकील कोई देश का नेता,  
कोई डॉक्टर- इंजीनियर होगा.  
भारत विश्व में बनेगा अक्वल,  
हर कोई अब शिक्षित होगा.  
यह मेरा प्यारा स्कूल,  
नहीं सकती मैं इसको भूल.

\*\*\*\*\*

## दुनिया की रीत

रचनाकार- सागर कुशवाहा, कक्षा -7 वी



पायल हजारों रुपए में आती है पर पैरों में पहने जाती है मगर बिंदी एक रुपए में आती है मगर माथे में सजाई जाती है इसलिए कीमत मायने नहीं रखती उसका कृत्य मायने रखता है एक किताब घर में पड़ी गीता और कुरान कभी आपस में नहीं लड़ते और जो उनके लिए लड़ते हैं वह कभी नहीं पड़ते नमक की तरह ज्ञान देने वाला ही सच्चा मित्र होता है मीठी बात करने वाले तो चापलूसी होते हैं इतिहास गवाह है कि आज तक कभी नमक में कीड़े नहीं पड़े और मिठाई में तो अक्सर कीड़े पड़ जाया करते हैं अच्छे मार्ग पर कोई कोई व्यक्ति ही जा पाता है मगर बुरे मार्ग पर सभी जाते हैं इसलिए दारू बेचने वाला कभी गली गली घर घर नहीं जाता मगर दूध बेचने वाले को घर-घर गली-गली में जाना पड़ता है और दूध बेचने वाले से बार-बार पूछा जाता है कि पानी तो नहीं डाला मगर दारू मैं खुद पानी मिला मिलाकर पीते हैं वाहरे दुनिया और दुनिया की रीत जो भाग्य में रहता है वह आपके पास भाग भाग कर आता है और जो नहीं रहता वह आकर भी चला जाता है.

\*\*\*\*\*



## अधूरी इच्छा

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



नवरंग पुर गांव में सेठ अमृतलाल रहते थे.सेठ जी का बहुत बड़ा कारोबार फैला हुआ था.वे उस इलाके के सबसे बड़े धनाढ्य व्यक्ति थे. उनके यहां मुंशी श्याम लाल काम करते थे.उनकी ईमानदारी से सेठ अमृत लाल बेहद प्रभावित रहते थे. एक दिन असमय ही हार्ट अटैक आने से उनका देहांत हो गया.उनकी धर्मपत्नी पर मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा.

एक दिन वह श्याम लाल को बुला कर बोली-"श्यामलाल जी !अब पूरे कारोबार को आपको ही संभालना है.ये मुख्तियार नामा के पेपर्स मैंने वकील से तैयार करवा दिये हैं.मेरी इच्छा है कि सेठजी की स्मृति में एक स्कूल का निर्माण किया जाये.शाला निर्माण की संपूर्ण जिम्मेदारी आपकी ही रहेगी. स्कूल के नाम पर मैंने 20 एकड़ जमीन दान में दे दी है. पूरे निर्माण की जिम्मेदारी अब आपकी ही रहेगी.सेठ जी के चले जाने के बाद मुझे सारा संसार निरर्थक प्रतीत हो रहा है.तीर्थ यात्रियों का एक जत्था चारों धाम की यात्रा में जा रहा है.कल मैं भी उनके साथ तीर्थ यात्रा पर जा रही हूँ. मुझे आपके ऊपर पूरा भरोसा है. आप मेरी इस इच्छा को शीघ्र ही पूर्ण करेंगे."

यह बात कहते हुये उसकी आँखों में आँसू आ गये.

अवसाद में डूबी हुई लीला देवी उन तीर्थ यात्रियों के साथ में चारोंधाम की यात्रा पर निकल गई.1 महीने के पश्चात तीर्थ यात्रा से लौटे हुए तीर्थयात्रियों ने बताया कि लीलादेवी की अचानक तबीयत खराब होने से केदारनाथ में ही उनकी मृत्यु हो गई.उनका अंतिम संस्कार हमने वहीं कर दिया है.

लीला देवी के निधन से श्यामलाल बहुत दुखी हुए और उसके पश्चात वे मन लगा कर कारोबार को संभालने लगे.समय पंख लगाकर उड़ता रहा और श्याम लाल लीलादेवी को दिए हुए वचन को भूल गए.

उन्होंने इस कारोबार को बहुत बढ़ा लिया था.कुछ दिनों के बाद उनकी एक पुत्री हुई और पुत्री धीरे-धीरे बड़ी होने लगी उसका नाम उन्होंने शांता रखा था.वह बहुत सुंदर और चंचल बालिका थी.

शांता करीब 8 वर्ष की हो चुकी थी वह पढ़ने में विलक्षण बालिका थी. एक दिन वह अपने पिता से पूछने लगी.

शांता "पिता जी! यहाँ तो बड़ी- बड़ी दो फोटो लगी थीं.वे कहाँ चली गयीं?"

श्यामलाल सोच में पड़ गये.उन्होंने स्टोर रूम से सेठ अमृत लाल और लीला देवी के तैल चित्र को फिर से हाल में लगवा दिया.शांता बहुत खुश हो गयी.सहेलियों के साथ खेलने चली गयी.

एक दिन शांता एक चित्र बना रही थी.उसने एक स्कूल का बहुत ही सुंदर चित्र बनाया.

शांता "-देखिये पिताजी!ये चित्र कैसा लग रहा है?"

श्यामलाल ने जैसे इस चित्र को देखा तो वे दौड़ कर भीतर गए.पुराना बक्सा खोले.उसमें से एक पेपर निकाले.उसका मिलान करने लगे.लीला देवी ने स्कूल का एक नक्शा उन्हें बनवा कर दिया था.उनके तो होश उड़ गए यह चित्र भी हूबहू बिटिया शांता के चित्र से मिलता जुलता था.



श्याम लाल-"शांता बिटिया ये पाठशाला तुमने कैसे बनायी?क्या ये चित्र तुमने कहीं देखा था!"

शांता-"नहीं पिताजी!ये चित्र मैं अपने मन से बनायी हूँ.हमारे गांव में ऐसा स्कूल बन जायेगा तो हमारे गांव के बच्चे उसमें पढ़ेंगे.वे बाहर नहीं जायेंगे.मुझे तो आप बड़े स्कूल में पढ़ा रहे हो. मैं बस से स्कूल जाती हूं पर गांव के बच्चे स्कूल दूर होने के कारण पढ़ाई छोड़ देते हैं."

श्यामलाल को ऐसा लग रहा था जैसे मानो लीलादेवी ही उसकी बच्ची के रूप में जन्म ली है.रात्रि में उसने अपनी पत्नी गीता से इस बात की चर्चा की. स्कूल के उस नक्शे को भी उन्होंने पत्नी को दिखाया.

गीता-"देखिये जी, लीला देवी ने आपके ऊपर गहरा विश्वास किया था इसलिये उसने अपनी पूरी जायजाद भी सौंप दी थी लेकिन आपने उनकी अंतिम इच्छा आज तक पूरी नहीं की है.ऐसा लग रहा है कि अपनी अधूरी इच्छा के कारण ही उनका हमारे यहाँ पुत्री के रूप में पुनर्जन्म हुआ है."

श्याम लाल-"तुम ठीक कहती हो यह मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है.मैं कल से ही स्कूल का निर्माण प्रारंभ करवा दूंगा."

श्यामलाल ने स्कूल भवन का निर्माण का कार्य जोर शोर से प्रारंभ करवा दिया. एक दिन स्कूल भवन के लोकार्पण का सुअवसर भी आ गया.गांव के गणमान्य बुलाया गया था.कलेक्टर महोदय इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे.

कलेक्टर महोदय-"भाइयों और बहनों !आप सभी के लिये हर्ष की बात यह है कि आपके गांव के सेठ श्याम लाल जी के द्वारा स्कूल आज लोकार्पण किया जा रहा रहा है. इसमें निशुल्क शिक्षा व्यवस्था रहेगी.अब आप सभी के बच्चों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा श्री अमृत लाल ज्ञान मंदिर से प्राप्त हो सकेगी.अब किसी भी बच्चे को अध्ययन के लिये इस गाँव से दूर नहीं जाना पड़ेगा. "



तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा शाला परिसर गूँँज उठा.तभी बालिका शांता अपनी जगह से उठी और आगे बढ़कर कलेक्टर महोदय के गले में फूलों की माला पहना दी. वह आज बहुत खुश हो रही थी मानो उसकी सारी इच्छायें पूरी हो गयी थीं.कलेक्टर महोदय भी गद गद होकर उसके हाथों में चाकलेट और फूलों का गुलदस्ता थमा दिये.

श्यामलाल भी आज बहुत प्रसन्न हो रहा थे.जैसे कोई बहुत बड़ा यज्ञअनुष्ठान आज पूरा हो गया हो.अपने बच्चों के सुरक्षित भविष्य कल्पना करते हुये पूरे ग्राम वासी भी फूले नहीं समा रहे थे.

\*\*\*\*\*

## अम्मा की पेटी

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



सुनते हो जी अम्मा की खाँसी बढ़ रही है.तुम वरुण को फोन करो वो आकर अम्मा को ले जायें.हम बच्चों को सँभालें कि अम्मा को.--बड़ी बहू ने कहा.

अरुण भैया का फोन मिलते ही वरुण माँ की सेवा में हाजिर हो गया.

दूसरे दिन अम्मा का चेक अप हुआ. डा. सोनी ने दवाइयाँ लिख दीं और सेवा सुश्रुषा मिलते ही अम्मा अच्छी हो गयी.

तीन भाइयों में से केवल वरुण को छोड़कर कोई भी माँ की सेवा करने को तैयार नहीं होते हैं.

पिताजी के मरने के बाद खेती बाड़ी का भी बँटवारा हुआ.बड़े भैया ने पुश्तैनी दुकान पर अपना अधिकार जमा लिया.

खेती का बँटवारा हुआ.माँ को भी चार -चार महीने अपने पास रखने की बात हो गयी.चार महीने पूरे होते ही बहू बवाल मचाने लगतीं.यदि बीमार पड़तीं तो खर्च से भी दोनों भाई बचने की कोशिश करते.

बीमारी की घड़ी में वह वरुण को ज्यादा याद करतीं क्योंकि वह माँ की सेवा सुश्रुषा में कोई कमी नहीं रखता था.

एक दिन अम्मा बहू से बोली-"क्या करूँ बहू अब तो मेरा रहना भी बोझ हो गया है ?एक माँ तीन बेटों को पाल सकती है पर तीन बेटे मिलकर एक माँ की सेवा नहीं कर सकते."

छोटी बहू -"आप ऐसा क्यों कहती हैं?"

अम्मा -"बहू बँटवारे के बाद ऐसा लगता है कि मान सम्मान ही कम हो गया है."

बहू घर के भीतर गयी.एक सिक्के से भरी गुल्लक ले आयी.

अम्मा -"ये गुल्लक क्यों लायी हो बहू?"

बहू- "अम्मा, आप रात में सोने से पहले इसे लोटे में डालना और गिनते समय आवाज करना.आप दरवाजा बंद ही रखना.गिनकर इसे पेटी डाल देना.चाबी अपने गले में लटका लेना फिर देखना अम्मा क्या होता है?"

अम्मा ने हामी भरी.जब वे बड़े बेटे के यहाँ गयीं तो ऐसा ही करने लगी.बहू नीता दरवाजे पर कान देकर सुनने लगी.

दूसरे दिन उसने अम्मा से पूछा -"अम्मा रात में कुछ सिक्कों के गिनने की आवाज आ रही थी."

अम्मा -"हाँ बहू मेरी सास ने सोने के सिक्के मुँह दिखायी में दिये थे.मैं रोज मोह के कारण उनको गिन कर फिर संदूक में रख देती हूँ."



बहू ने ये बात पति को बताई.अब तो अम्मा का मानसम्मान बढ़ गया.

उसके बाद अम्मा मँझले बेटे के यहाँ गयी.वहाँ भी सिक्कों के बारे में बहू को बतायीं.अम्मा का स्वागत सत्कार वहाँ भी बढ़ गया.दोनों बहुयें सोने के सिक्कों को पाने का सपना देखने लगीं.

वरुण एक दिन आकर अम्मा को अपने घर ले गया.

बहू ने अम्मा से पूछा "-अम्मा अब बताओ आपकी आव भगत कैसी हो रही है."

अम्मा -"अब तो बहू वे लोग मुझ पर जान छिड़कते हैं. दोनों समय स्वादिष्ट गरमा गरम भोजन बनाकर बहू ले आती हैं.

ये सब तुम्हारी बुद्धि का कमाल है लेकिन बहू जिस दिन ये झूठ खुलेगा क्या होगा बहू?"

बहू"-अम्मा इस बात की चिंता ना करो.आपकी सेवा करना तो सभी का कर्तव्य है.  
"

एक दिन अम्मा बहुत बीमार पड़ी और स्वर्ग सिधार गयीं.बेटों ने उनकी पेटी खोल कर तलाशी ली तो एक गुल्लक गिलट के सिक्कों से भरी मिली और एक फूल काँस का लोटा.कुछ पुरानी मल मल की साड़ियाँ.

बहुओं के हाथों से मानो तोते उड़ गये थे.दोनों बहुयें कुछ ना मिलने पर मन मसोस कर रह गयीं.

छोटी बहू उनकी यह दशा देखकर मंद मंद मुस्कुरा रही थी.

\*\*\*\*\*

## मां की ममता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



मां की ममता मिलती हैं सभको  
कोई अच्छूता नहीं  
कद्र करने की बात है  
कोई करता कोई नहीं

मां वात्सल्य प्रेमामई ममता  
मिलती हैं सभको कोई अच्छूता नहीं  
कद्र करने की बात है,  
कोई करता कोई नहीं

मां का आंचल अपने सपूतों के लिए  
हरदम खुला बंद नहीं

अपनी तकलीफों दुखों से घिरी  
पर ममता की छांव हटाई नहीं

चार बातें कड़वी भी सुनीं तुम्हारी  
पर ममता की छांव हटाई नहीं  
तुमने कद्र भले की हो या नहीं  
पर मां ने ममता घटाई नहीं

हैं ऐसे भी कुछ लोग मां की ममता का  
आंकलन करते नहीं  
बस दिखावे में जीतें हैं मां की ममता  
का सम्मान करते नहीं

समझ लो ऐसे लोगों, मां की ममता  
नसीब करेगा भगवान भी नहीं  
बस मां की ममता आंचल में समाए रहो  
फिर पूजा पाठ की जरूरत नहीं

मां का वात्सल्य प्रेमा मई ममता  
मिलती हैं सभको कोई अच्छूता नहीं  
कद्र करने की बात है  
कोई करता कोई नहीं

\*\*\*\*\*



## नव वर्ष

रचनाकार- भगवत पटेल, लखनऊ



पतझड़ जब आता है तो,  
बसंत का होता आना.  
बसंत अपना नया साल है  
पतझड़ साल पुराना.

आशा के दीप जलाकर खुशी मनाया करते हैं.  
आओ हम सब नव वर्ष का स्वागत करते हैं.

शांति रहे चहुंओर प्रभु जी,  
सुन लो अर्ज हमारी.  
खुशहाली हरदम बनी रहे,  
नहीं रहे लाचारी.

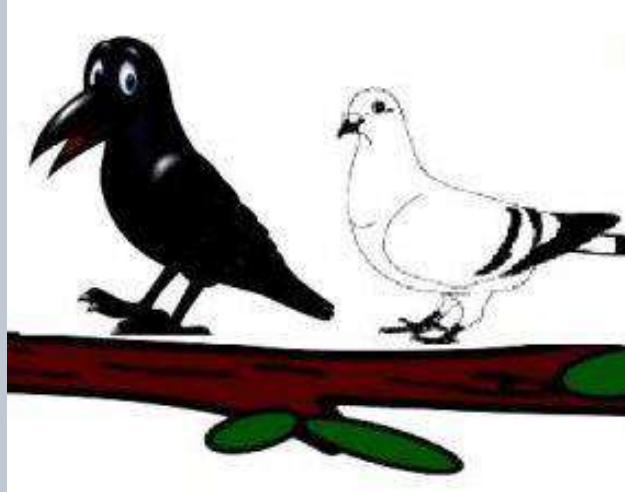
जीत जायेंगे हर मुश्किल से फिर क्यों डरते हैं.  
आओ हम सब नव वर्ष का स्वागत करते हैं.

आये न अब कोई मुश्किल,  
राह बने आसान.  
कांटे हरदम फूल बने,  
ऐसा दो वरदान.  
दिन, हफ्ते और साल महीने सब आते रहते हैं,  
आओ हम सब नव वर्ष का स्वागत करते हैं.

\*\*\*\*\*

## नीलू परी और कबूतर

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला



नीलू परी अपनी खूबसूरत सफ़ेद और नीली फ्रॉक पहने उड़ी जा रही थी.

तभी उसे सामने से एक कला कबूतर आता दिखा.

नीलू रुक गई और कबूतर के पास आने पर बोली-"मैंने पहली बार काला कबूतर देखा है."

कबूतर नीलू को देखकर खुश होता हुआ बोला-"अरे वाह, तुम तो परी हो ना...तुम जरा इस बादल से कह दो कि ये बरस जाए."

नीलू हँसते हुए बोली-"इतनी ठंड में तुम भीगना चाहते हो."

हाँ, तभी तो तुम जान पाओगी कि मैं काला कबूतर हूँ भी या नहीं!

नीलू को कबूतर की बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ.

वह बुदबुदाई-"प्यारे बादल, थोड़ा सा इस कबूतर के ऊपर बरस जाओ."

क्यों नहीं कहते हुए बादल ने कबूतर के ऊपर ठंडी ठंडी वर्षा की बूँदें बरसा दी.



देखते ही देखते कबूतर के ऊपर से काला रंग बहने लगा और कबूतर रुई की तरह सफ़ेद हो गया.

ये तुम्हें क्या हो गया था? नीलू ने आश्चर्य से पूछा

कबूतर बोला-"मेरे साथ आओ."

नीलू उसके पीछे-पीछे उड़ चली.

थोड़ी ही दूर जाने पर नीलू की आँखें जलने लगी और उसे साँस लेने में तकलीफ़ होने लगी.

उसने देखा कि चिमनियों से निकलते काले धुँए से आसमान काला हो रहा था.

कुछ ही देर में उसकी फ्रॉक भी पूरी काली हो गई.

उसने बादल को ढूँढा पर वह उसे कहीं नहीं दिखाई दिया.

बादल कहाँ चला गया? परी ने परेशान होते हुए कबूतर से पूछा

वह इतनी तेज गर्मी से घबराकर चला गया. कबूतर ने अपने काले पंखों को देखते हुए कहा

यहाँ एक भी पेड़ नहीं है. सब जंगल काटकर घर और फैक्ट्री बना दी गई है. बादल बरसना चाहे तो भी नहीं बरस सकता है. कबूतर दुखी होते हुए बोला

नीलू ने कुछ सोचते हुए कहा-"पर हम सबको ही तो इस पृथ्वी को बचाना है. हम लोगो को बताएँगे कि बिना पेड़ों के हम नहीं बचेंगे."

हाँ, शुद्ध हवा और साफ़ पानी के बिना सब खत्म हो जाएगा. कबूतर बोला और नीलू के साथ उड़ चला

तुम्हारी कहानी बहुत अच्छी है पियूष के सर ने कहा

पियूष ने अपनी नोटबुक बंद कर दी और मुस्कुरा दिया.

पूरी क्लास तालियों से गूँज उठी.

सर ने कहा-"सभी बच्चों को तुम्हारी तरह पर्यावरण के बारे में सोचना चाहिए और ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाने चाहिए."

हाँ, हम सब पेड़ लगाएँगे." सभी बच्चों ने एक साथ कहा

और पियूष सोच रहा था कि कितना अच्छा होगा अगर सब खूब सारे पेड़ लगाएँगे तो वह हरे भरे जंगल, आसमान में उड़ते हुए बादल और उनमें से झाँकते सतरंगी इंद्रधनुष पर कहानियाँ लिख सकेगा.

\*\*\*\*\*

## नन्हें बच्चे

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा



आज के नन्हे बच्चे  
नागरिक है कल के  
आज के नन्हे बच्चे  
आओ कदम चल के  
हम इन्हें बनाए सच्चे  
आज के नन्हे बच्चे  
नागरिक है कल के  
आज के नन्हे बच्चे  
उदाहरण बने बल के  
और इरादो के पक्के  
बिना चिंता किए कल के  
इन्हें जड़े मिट्टी है ये कच्चे  
आज के नन्हे बच्चे  
नागरिक है कल के  
आज के नन्हे बच्चे  
देश विकास हेतु चलके



यही मारेंगे चौके छक्के  
आज के नन्हे बच्चे  
नागरिक है कल के  
आज के नन्हे बच्चे  
सत्य मार्ग पर चलना सिखाओ  
बहुत चलना है इन्हें आगे  
झूठ छल कपट त्यागें  
देश के लिए बढ़ चलना है आगे  
आज के नन्हे बच्चे  
नागरिक है कल के  
आज के नन्हे बच्चे

\*\*\*\*\*

## सरसो के पियर फूल

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू, सूरजपुर



फूल सरसों के  
पियर पियर फूल  
मन को मोहित कर लेते  
ये सरसो के  
पियर पियर फूल  
जहा तक जाती नजर,  
ठहर ठहर जाती नजर.  
धरती की हरियाली  
में खिली महकती,  
चहकती, गुनगुंगनाती,  
ये सरसो के  
पियर पियर फूल.

\*\*\*\*\*

## मेरी शाला

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार



मेरी शाला मेरी शान,  
मेरी शाला मेरी पहचान.

मेरी शाला है बहुत ही सुंदर,  
सब सुविधाएं इसके अंदर.

शाला में है बड़ा सा मैदान,  
नये -नये खेलों से जो रहता गुलजार.

मेरे स्कूल के बच्चे ऐसे,  
शिनचेन, नोबिता, सुनियो जैसे.

दिन भर उनके साथ में रहना,  
बच्चे हरदम माने मेरा कहना.



दिन भर मैडम- मैडम चिल्लाए,  
कुछ भी हो तो मुझे बताएं.

लिखना -पढ़ना उन्हें सिखाती,  
रोज कहानी उन्हें सुनाती.

अपनी बातें मुझे बताते,  
बच्चे दिन भर मुझे सताते.

दिनभर लड़ते और झगड़ते,  
बात- बात पर शिकायत करते.

रोज सुबह 10:00 से 4:00,  
मुझको रहना उन सबके साथ.

मेरे जीवन का अहम हिस्सा,  
उनको दूँ में अच्छी शिक्षा.

अपनी बातें मुझे बताते,  
बच्चे दिन भर मुझे सताते.

दिनभर लड़ते और झगड़ते,  
बात- बात पर शिकायत करते.

रोज सड़क तक छोड़ने आते,  
बॉय-बॉय मैडम जोर से चिल्लाते.

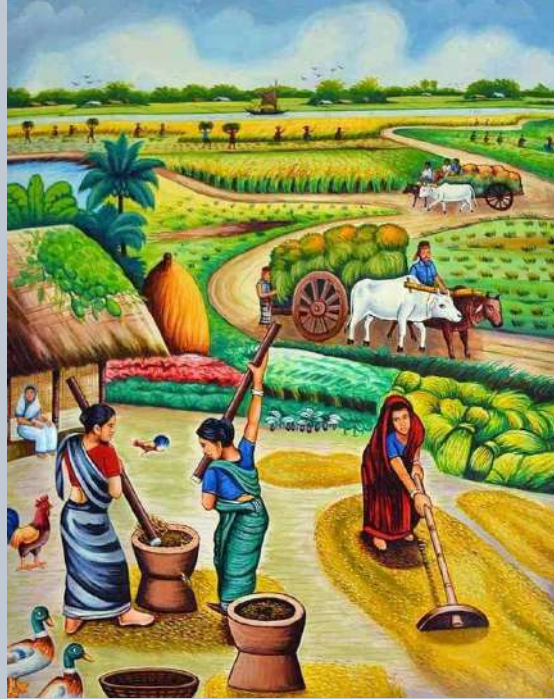
मेरे बच्चों का क्या कहना,  
उनके बिना मुझे ना रहना.

मेरी शाला के तुम आधार,  
तुमसे शाला है गुलजार.

\*\*\*\*\*

## मोर गाँव के निच्चट सुघराई हे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



मोर गाँव के निच्चट सुघराई हे  
जिहाँ हरियर-हरियर रुखराई हे.  
जेमा चहके चाँव-चाँव चिराई हे  
जिहाँ चारो डहर चले पुरवाई हे.

रंग-बिरंगी फुल के फुलवारी हे  
तरिया नरवा ढोड़गा कछारी हे.  
साग-भाजी के बखरी -बारी हे  
जिहाँ टेंड़ा ल टेड़य संगवारी हे.

बखरी म, जुड़-जुड़हा झाड़ी हे  
सियनहा बबा करे रखवारी हे.  
मचान ह लागय, सरग-दुवारी हे



कुंदरा म दिखे संगी-संगवारी हे.  
तिल-राहेर-धान मुंग-उन्हारी हे  
झमा-झम दिखय खेत-खारी हे.  
धरसा, सरार-भरी के पैडगरी हे  
जिहाँ तरिया म पथरा पचरी हे.

मोर गाँव गोकुल-ब्रज-दुवारी हे  
जिहाँ दया-मया के नर-नारी हे  
लइका मन राम किशन मुरारी हे  
इही म बसे छत्तीसगढ़ महतारी हे

\*\*\*\*\*

## बढ़ती ठंड

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



कैसा ये मौसम है आया, कभी धूप संग होती छाँव.  
बैठे बिस्तर में है सारे, नहीं धरा पर रखते पाँव.

ठिठुर रहे हैं लोग यहाँ पर, किटकिट करते सब के दाँत.  
इक दूजे को करे इशारे, नहीं निकलती मुँह से बात.

तेज सूर्य की किरणें आतीं, मिलती है ऊर्जा भरपूर.  
चौराहे पर बैठे बैठे, ठंडी को करते हैं दूर.

स्वेटर मफलर तन को भाये, स्पर्श नहीं करते हैं नीर.  
छोटे बच्चे रोते रहते, क्या ठंडी में होती पीर.

बादल में छुप जाता सूरज, और पवन की बहती धार.  
दुबके मानव घर के अंदर, काम काज से माने हार.

बहुत बढ़ी है ठंड धरा पर, थोड़ा कम कर दो भगवान.  
देह बर्फ सी जमती जाती, कहीं निकल ना जाये प्राण.

\*\*\*\*\*



## धरती की पुकार

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



धरती माता का आँचल पहले कितना सुरभित था,  
जब वह आँचल हवा में लहराती थी  
तो चमकते जुगनू उड़ने लगते थे.  
रात रानी की खुशबू तैरने लगती थी.

नन्हा कदम तुमने धरा पर आगे बढ़ाया था  
पहले तुम खेलते हुये गिर जाते थे,  
तब धरती माता विकल होकर  
तुम्हें गिरने से पहले थाम लेती थी.

नीम की छाया तले तुम बाल मंडली के संग  
छुपन छुपई और फुटबाल खेलते थे.  
कितने बार गिरते थे और सँभल जाते थे.  
हँसते हुये दर्द भूल जाते थे.

धरती तुम्हारी प्रतिक्षण रक्षा करके निहाल होती थी.  
तुम बड़े हुये तो धरती माता के ऋण को क्यों भूल गये.

धरती हरी भरी रहेगी तो बादल आकर्षित होते रहेंगे.  
बादल बरसेंगे तो हरियाली छा जायेगी.  
हर बरस तुम एक पेड़ लगाकर देखो,  
धरती फिर से हरी भरी हो जायेगी.

\*\*\*\*\*



## आओ मिलकर उन्हें करें नमन

रचनाकार- प्रीतम साहू, धमतरी



आओ मिलकर उन्हें करें नमन  
जिनके लिए सब कुछ है वतन.  
देश की रक्षा के लिए जिन्होंने  
निछावर कर दी तन और मन.

घर से दूर वतन के लिए लड़ते  
मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ते.  
देकर दुश्मनों को जंग में मात  
भारत माँ की हिफाजत करते.

सरहद में दुश्मन से टक्कर लेते  
तिरंगे को कभी झुकने न देते.  
ठंडी, गर्मी और बरसात को सहते  
ईट का जवाब, पत्थर से देते.



दुश्मनों की गोली सीने में खाकर  
अपने वतन को महफूज रखते है.  
आओ मिलकर उन्हें करें नमन  
जो देश के लिए कुछ करते है.

\*\*\*\*\*

## गाँधी जी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



सत्य अहिंसा के पुजारी  
हिंसा के वो खिलाफ़ थे.  
अपनी बात मनवाने के  
उनके अलग अंदाज़ थे.

वक़ालत की नौकरी छोड़  
विदेश से वतन को आए.  
गुलामी की जंजीर तोड़ने  
संघर्ष का मार्ग अपनाए.

तन-मन-धन समर्पण कर,  
जीवन अपना अर्पण कर,  
नमक कानून तोड़ दिए,  
गांधी जी नमक बनाकर.

विदेशी वस्त्र को जलाकर,  
खादी वस्त्र को अपनाकर.  
अंग्रेजों को हिला दिया,  
आमरण अनशन चलाकर.

\*\*\*\*\*



## गीताली और गिल्लू

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



मास्टर जी की लाडली बिटिया गीताली सुंदर सुशील अपनी मम्मी के जैसे ही थी. गीताली सुबह जल्दी उठकर अपने पापा के साथ टहलने जाती मैदान का एक चक्कर लगाकर वापस आती और अपना होम वर्क करती. गीताली के तैयार होने तक मम्मी उसके लिए रोटी बनाती. गीताली रोज चार रोटी लेकर स्कूल जाती और खाना छुट्टी में अपने दोस्त परी के साथ स्कूल के गार्डन में अशोक पेड़ के नीचे टीपिन करती. एक दिन गीताली की नजर अशोक पेड़ के नीचे उछल-कूद करती हुई गिलहरी पर पड़ती है. गीताली को गिलहरी बहुत अच्छी लगती है और उसे पकड़ने की कोशिश करती है पर गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ जाती है.

स्कूल की छुट्टी होने पर गीताली घर आती है और अपने ड्राइंग बुक में गिलहरी की सुंदर स ड्राइंग बनाती है और उसका नाम “गिल्लू” रखती है.

अब गीताली रोज स्कूल जाती और खाना छुट्टी में एक रोटी गिल्लू को भी दे देती. एक दिन गीताली गिल्लू को रोटी देना भूल जाती है तब गिल्लू उछल कूद करते हुए गीताली के पास आती है. गीताली गिल्लू को रोटी देती है और उसे पकड़कर घर ले आती है. अब गीताली गिल्लू के साथ खेलती और उसे खाना दाना देती.

पर मम्मी को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था. एक दिन गीताली की मम्मी गीताली को बिना बताये अपने मायका चली जाती है. गीताली जब स्कूल से घर आती है तब वह घर में मम्मी को नहीं देख रोने लगती है और उन्हें मम्मी की बहुत याद आने लगती है.

दो दिन बाद मम्मी मायका से घर आती है. मम्मी को घर में देख गीताली बहुत खुश हो जाती है. गीताली मम्मी से कहती है मम्मी आप मुझे बिना बताये और अकेली क्यों चली गई थी. आपके बिना मुझे अच्छी नहीं लग रही थी मुझे रोना आ रहा था.

तब मम्मी कहती है तुमने जो गिल्लू गिलहरी को उनके मम्मी पापा से दूर अकेले ले आई हो क्या उन्हें अच्छा लग रहा होगा! उन्हें भी अपने मम्मी-पापा की याद आती होगी ना ! गीताली को मम्मी की बातें समझ में आने लगी और गिल्लू गिलहरी को अपने घर ले आने की जो भूल की थी. उनका एहसास उन्हें होने लगा था.

अगले ही दिन गीताली गिल्लू गिलहरी को उनके घर अशोक पेड़ के पास जैसे ही छोड़ती है गिल्लू गिलहरी फिर से उछल-कूद करने लगती है. और पेड़ पर चढ़ जाती है. यह दृश्य देख गीताली बहुत खुश हो जाती है.

\*\*\*\*\*



## चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी—



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

### कु. अंजली साहू, पांचवी, शा. प्रा.शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

एक सोनू नाम का लड़का था. उसके माता-पिता उससे बिछड़ गए थे. सोनू अकेला रहता था. वह स्कूल जाता और स्कूल से आकर सब्जी बेचता था. एक दिन सोनू अपने साइकिल से स्कूल जा रहा था, तभी एक कार वाले ने उसे अपनी कार से धक्का दे दिया, सोनू गिर गया और उसकी सारी किताबें सड़क पर बिखर गईं. कार वाले ने सोनू की गलती न होते हुए भी उसे खरी-खोटी सुनाई, पर सोनू भोला था, उसने कुछ नहीं कहा और वहां से चला गया. शाम को सोनू स्कूल से आकर सब्जी बेचने गया, तो देखा कि सड़क पर एक्सीडेंट हुआ है और भीड़ लगी है. सोनू ने जाकर देखा तो वह पहचान गया कि यह वही कार वाला है, जिससे मैं सुबह टकराया था. सोनू



तुरंत उसे अस्पताल ले गया और उसका मलहम पट्टी कराया. कार वाला सोनू की उदारता देख बहुत खुश हुआ और उसे अपनी गलती का एहसास हुआ.

**कु. पूनम यादव, पांचवी, शा. प्रा.शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी**

साहिल नाम का एक लड़का था. उसके माता-पिता नहीं थे, इसलिए वह एक मिठाई की दुकान में काम करता और पढ़ाई भी करता था. एक दिन साहिल अपनी साइकिल से स्कूल जा रहा था, तभी एक कार से वह टकरा गया और सड़क पर गिर गया. उसकी सारी किताबें सड़क पर बिखर गईं. कार वाला आदमी घबरा गया और कार से बाहर निकल कर देखा तो साहिल को गिरा देख बहुत दुखी हुआ. उसने साहिल को और उसकी किताबों को उठाया और साहिल को अस्पताल ले जा मलहम पट्टी कराया. कार वाले आदमी ने साहिल से पूछा- तुम्हारा घर कहा है मैं तुम्हारे माता-पिता को बुला लाता हूं. तब साहिल ने बताया कि मेरे कोई नहीं है, मैं अकेला रहता हूं और मिठाई की दुकान में काम कर पढ़ाई करता हूँ. तब उस कार वाले आदमी ने साहिल से कहा तुम अब अकेले नहीं हो. अब से तुम मेरे साथ मेरे घर पर रहना. यह सुनकर साहिल खुश हो गया और उस आदमी के साथ उसके घर चला गया और खुशी-खुशी जिन्दगी जीने लगा.

**संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी**

**दुर्घटना से बचाव**

बच्चों आज हम सड़क दुर्घटना से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं.सड़क दुर्घटनाएं-आजकल बहुत आम है,खासकर बड़े शहरों में कई बार यह हादसे जानलेवा भी साबित होते हैं.लगभग हर दिन हम कोई ना कोई सड़क दुर्घटना देखने, सुनने या अखबार आदि के माध्यम से पढ़ने को मिल जाती है.यह घटना चालक की लापरवाही, जल्दबाजी, ओवर स्पीडिंग (तेज रफ्तार), ध्यान से गाड़ी न चलाना,यातायात नियमों का उल्लंघन या उसकी ठीक से जानकारी ना होना, चालक

द्वारा नशा करना, गलत साइड पर गाड़ी चलाना ऐसे ही कुछ प्रमुख कारण है.जिनके वजह से दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि हुई है.उक्त बातों पर ध्यान देकर दुर्घटना को रोका जा सकता है.

दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को इंसानियत के नाते हमारा फर्ज है कि हम उसे जल्द से जल्द इलाज हेतु अस्पताल पहुँचाने की व्यवस्था कराएं.हम इस कहानी के माध्यम से इसे और अच्छे से समझते हैं.

मैंने कुछ दिन पहले अपने परिवार के साथ मोटर साइकिल से बाजार जा रहा था.जब हम लोग मेन रोड पर पहुँचे तो देखा कि एक कार तेज गति से जा रहा था.उसने साइकिल पर सवार एक बालक को टक्कर मार दिया.वह सड़क पर लोट रहा था.हम सब मौके पर वहाँ पहुँचे.लड़का गंभीर रूप से घायल हो गया,उसके चेहरे से खून बह रहा था,उसका एक पैर और एक हाथ बुरी तरह जखमी हो गया था.वह हिल भी नहीं रहा था. कुछ ही मिनटों में वहाँ भीड़ लग गई. सभी ने अपने-अपने मोबाइल से उसका फोटो ले रहे थे. लेकिन अस्पताल ले जाने का नाम नहीं ले रहे थे और ना ही कोई इमरजेंसी वाहन के लिए फोन कर रहे थे.हमने तुरंत 108 नंबर पर फोन डायल किया. इमरजेंसी वाहन,फोन करते ही कुछ क्षण पश्चात पहुँच गया और उसे अस्पताल ले गए.

कुछ लोगों ने कार चालक को पीटना शुरू कर दिया.बाद में पता चला कि चालक नशे में था.थोड़ी देर बाद दुर्घटना स्थल पर पुलिसकर्मी भी पहुँच गया. कार चालक को थाने ले गया.पुलिस ने एफ.आई.आर.दर्ज कर चालक को पुलिस लॉकअप में रखा गया. दुर्घटनाग्रस्त बालक की पालकों को सूचना दिया गया. गनीमत रही कि बालक खतरे से बाहर बताया गया.अस्पताल में चिकित्सक ने उसके चोट पर मरहम पट्टी की गई और कहा कि पैर और हाथ में मामूली चोट आया है. बच्चे को सप्ताह भर आराम करने की सलाह दिया गया.

हम लोगों ने युवक की जान बचाने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा किया.उसके पालक ने हमें धन्यवाद देते हुए बच्चे को अपने घर ले गए.

बच्चों हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मानव जीवन चाहे हमारा हो या दूसरों का अनमोल है.इसलिए हमें वाहन चलाते समय अत्यधिक सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहिए.सड़क दुर्घटना से बचने का सबसे अच्छा तरीका यह सुनिश्चित करना है कि आप खुद को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक सभी नियमों का पालन करें.दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाने की व्यवस्था करें.आखिरकार हमारे पास केवल एक ही जीवन है जिसे सुरक्षित रखना बेहतर है.



## अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

## भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 अ		2	3		4 ख			5	
		6 गा							
				7			8 रे		9
10 द		11 द				12			
					13 द				
14 ह									15 झा
		16		17 त		18			
19 दि								20 मु	
			21 ज						
22 ही					23 ता				

## बाएँ से दाएँ

- मुझाया 4. खुरदुरा
- बैल, भैंसा गाड़ी
- बेवजह 8. चलना, चलने का ढंग 10. भुक्खड़
- जलाना 13. अधपका
- पारंपरिक लोकनृत्य
- दिन मे या एक रोग
- सर, सिर 21. जड़
- हितैसी 23. एक नाट्य कला, लोकनृत्य

## पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 डों	ग	र	2 ग	इ			3 हु	इ	4 कु
इ			व		5 धां	6 चा			ध
7 का	8 ल		ही			9 र	ख	वा	र
	बा		10 न	11 व	री	या			सि
12 टु	री			ई		13 री	स	14 ई	या
रा		15 ह	रा	स				डभा	
	16 म			17 ने	व	रा	18 त		19 म
20 अ	ई	21 स	ने	हे			22 र	खि	या
ल्ल		र			23 भु	ल	का		दा
र		24 ई	इ	र		25 ता	री	ना	री

## ऊपर से नीचे

- स्नान, नहा 2. उधार
- हड्डी 4. अस्वच्छ व्यक्ति
- आसमान, स्वर्ग
- ग्रामीण झूला 9. नृत्य
- खुरदुरा आटा इत्यादि पदार्थ 12. दाल 13. बिछौना
- हल्दी का रस्म
- थप्पड़ 17. तराजू
- सामूहिक 20. दातौन